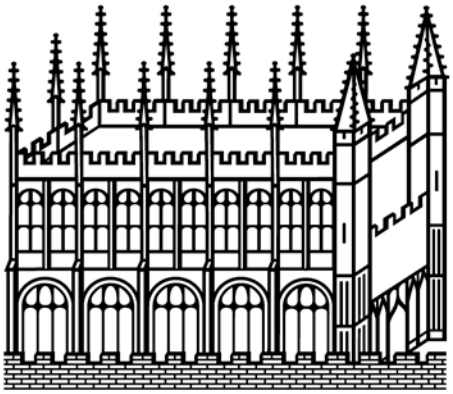


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



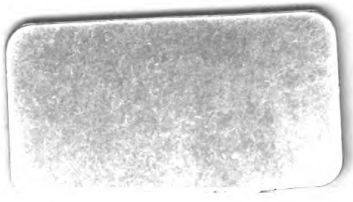
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.



Hindi Bisv 1

13.D.26

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.



Harihara saguṇa nirguṇa padāvali.



हरिहरसगुणनिर्गुणपदावली

ہرہرسگن نرگن پدادلی

जिसमें

सगुण निर्गुण दोनों प्रकार के उपासकों की भक्ति प्रेम के दृढ़ाने के अर्थ श्रीसच्चिदानन्द परब्रह्म परमेश्वर ज्योतिस्वरूप विश्वम्भर ईश्वर श्रीनारायण, और चक्रपाणि त्रिशूलधर परमकारणदेव देवेश श्रीमहादेव जी महाराज के उत्तमोत्तम पद

वर्णित हैं

श्रीविद्वच्छिरोमणि विश्वरूप स्वामि की बनाई हुई

पहली बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापे खाने में छपी

जनवरी सन १८८२ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् जनवरी सन १९८१ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फेहरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्योपार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर कीमत का निर्णय करलेंवे

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	३ वन पर्व्व	सचेतसवीर	काव्य
महा भारत	४ विराट पर्व्व	तथा सचेप्रक	सूरसागर
१ हिस्सा में आदिपर्व्व,	५ उद्योग पर्व्व	रामायण तुलसी कृत	कथासागर
सभा पर्व्व, वन पर्व्व,	६ भीष्म पर्व्व	के सातों काण्ड	विश्रामसागर
२ हिस्सा में विराट पर्व्व,	७ द्रोण पर्व्व	१ बाल काण्ड	प्रेमसागर
उद्योग पर्व्व, भीष्मपर्व्व,	८ कर्ण पर्व्व	२ अयोध्या काण्ड	कृष्णक्रिया
द्रोण पर्व्व,	९ शल्य पर्व्व-गदा व	३ आरण्य काण्ड	विजयमुक्तावली
३ हिस्सा में कर्ण पर्व्व,	सौप्तिक पर्व्व सय वो-	४ किष्किन्धा काण्ड	स्त्रीनकार्थ
शल्य पर्व्व, गदा पर्व्व,	शिक व विशोक पर्व्वी	५ सुन्दर काण्ड	छन्दोर्णव पिंगल
सौप्तिक पर्व्व, स्त्रीशिक प-	पर्व्व	६ लंका काण्ड	कविकुल कल्पतरु
र्व्व, विशोक पर्व्व, स्त्रीप-	१० शांति पर्व्व-राज	७ उत्तर काण्ड	रसराज
र्व्व, शांति पर्व्व में, राज	धर्म्म व आपद धर्म्म व	रामायण शब्दार्थकोष	सत्सई सटीक
धर्म्म, आपद धर्म्म, मोक्ष	मोक्ष धर्म्म व दान धर्म्म	रामायण का इतिहास	सत्सई
धर्म्म,	११ अश्वमेध आश्रम	रामायण मानस दीपिका	सभा विलास
४ हिस्सा में, शांति पर्व्व,	वासक मुशल पर्व्व	रामायण कवितावली	तुलसी शब्दार्थ
दान धर्म्म. अश्वमेध,	महा प्रस्थान स्वर्गारोहन	रामायण गीतावली	भजनावली
आश्रम वासक पर्व्व व	१२ हरिवंश पर्व्व	रामायण गीतावली स-	प्रेमरत्न
मौसल पर्व्व व महा प्र-	रामायण राम विलास	विनय पत्रिका बा-मो	युगुलविलास
स्थान स्वर्गारोहन पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	विनय पत्रिका बा-शि	चित्र-चन्द्रिका
व हरिवंश पर्व्व,	रामायण सटीक सय मा-	पुराण	बारहमासा बल्लभ प्र-
महा भारत पर्व्व पर्व्व	नस दीपिका कोश आदि	देवी भागवत	मनोहर लहरी
अलेहदा भी हैं	तथा सचेतसवीर सटीक	वेदान्त	गंगा लहरी
१ आदि पर्व्व	तथा जिल्द बंधी	योग वाशिष्ठ	यमुना लहरी
२ सभा पर्व्व	तथा मोट अक्षरों की-	प्रबोध चंद्रोदय नाटक	जगद् विनोद

श्रीगणेशायनमः

॥ हरिहरसगुणनिर्गुणपदावली ॥

———oo———

श्रीसच्चिदानन्द स्वरूप विश्वरूप स्वामी कृत पदावली लिख्यते ॥

कवित्त ॥ सिंदुर सुभाल सोहै बालचन्द लोक मोहै कोहै जग जासु नाम बिना यश पायो है । सोहै बेदगाथ हाथ मोदक परशुबर अभैसु येाति अंगअंग महं छायो है । येाग यज्ञ जप तप यतन अनेक करै प्रथम गणेश पूजि अछै फलपायो है । बिस्वरूप बिश्वके अधार करतार एक उमा के उदार बार चित्तमें सोहायो है ॥ १ ॥ सोहत अखण्ड चंड कोटिन्ह दिनेश अंग बिघन प्रचंड खंडखंड करि डारो है । शंभुके सुवन गज बदन भुवन माह बिदित अनादि गति मतिको अधारो है । कबिबर शुद्धि बुद्धि कुमुद सुचंद येाति होत है झलक बेद मत जतसारो है ॥ बिश्व रूप झाकी सेां झलक हिय मांझ होत येाति घन सुंड फेरि शेाच घन टारो है ॥ २ ॥ राग भैरो ॥ एक दन्त गज बदन दयानिधि सिद्धि सदन जन सुखकारी ॥ शेाक निकंदन शंकर नन्दन भुज बिशाल सोहत चारी ॥ कंज मंजु पुस्तक बर सुंदर अभय दानि मोदक धारी ॥ १ ॥ सिद्धि बुद्धि छबि खानि सोहावनि सेाहति संग परम प्यारी ॥ विश्व रूप गुण सिंधु दया निधि बाहन मूषक भयहारी ॥ २ ॥ राग भैरो ॥ ज्ञान सिंधु गज बदन मदन मद मर्दन सुत जन हितकारी ॥ बिघन हरण जन शरण दानि प्रभु कृपा सिंधु भव भय हारी ॥ गौरी सुवन भुवन यश तेरो बिदित बेद गावत चारी ॥ १ ॥ बिद्या बुद्धि दानि सुख सागर कोटि दिनेश येाति धारी ॥ बिश्वरूप प्रभु शरण परो है हरहु कुमति ममता भारी ॥ २ ॥ राग भैरो ॥ गणपति शंभु सुवन छबि न्यारे जो छबि बरनि न सकत सहस फणि सारद नारदमुनि जन हारे ॥ चन्द्रभाल छबि द्युति बिशाल अति सूर्प कर्ण गजबदन उदारे ॥ २ ॥ कोटिन्ह भानु येाति छबि सोहै मुकुट किरीट येाति छजि यारे ॥ बिश्व रूप जेहि हेरत दृगते छूटत बेगि बिघन दुखभारे ॥ ३ ॥ राग भैरो

॥ गणपति बदन हरण दुख भारो शोक सिंधु गण कुंभज केवल बिघन हरण प्रण नाथ तुम्हारो ॥ १ ॥ प्रथम पुज्य श्रुति लोक बिदित चहुं तेज पुंजगुण ज्ञान अगारो ॥ जासु नाम जपि सकल सुरासुर होत कठिन संकठ ते पारो ॥ २ ॥ बिश्व रूप प्रभु करुणा सागर शंकर सुवन जगत हित कारो ॥ ३ ॥ रागभैरो ॥ गणनायक ज्ञान अगारो ॥ करिवर बदन मदनरिपु बालक हारक मोह बिकारो ॥ १ ॥ गिरिजा प्रीति कुमुद रुचि कर अति भालचन्द उजियारो ॥ हसत लसत दुति रदन सोहावन बसन मनोहर धारो ॥ २ ॥ बिद्यानिधि गुणनिधि सुखनिधि प्रभु सिद्धी नाथ उदारो ॥ नयन कोर जेहिओर निहारत सो न लहत दुख भारो ॥ ३ ॥ कुहूनिशा जड़ता अति मतिको बिघ्न प्रचंड पहारो ॥ कोटि दिवाकर बज्र अमित सम पवन गवन करि टारो ॥ ४ ॥ मंगल मूल अमंगल हारक दायक बुद्धि बिचारो ॥ बिश्वरूप जग जाल कालते लखि निज शरण उबारो ॥ ५ ॥ रागभैरो ॥ गुरु मोहि राम रूप मन भावे ॥ सबके तारन कारन सबके ज्ञान सरूप सोहावे ॥ १ ॥ समरथ शील दयागुण सागर भानु अमित दुति छावे ॥ सब तीरथ मय चरण कमल जल पीवत मोह नसावे ॥ २ ॥ जाके पद पंकज की महिमा सुरनर मुनि यश गावे ॥ जाको पार वेद नहि पावत लघुमति कबि किमि पावे ॥ ३ ॥ नहिदाता चाता कोउ गुरु सम अस निश्चै उरआवे ॥ बिश्व रूप प्रभुकृपा करत जेहि पलमे अलख लखावे ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ अचल शरण गुरु की हम पायो ॥ छूटे ताप बिबिध अति दारुण प्रेम प्रीति उरछायो ॥ १ ॥ सुतबित बनिता अहिमण नाशकगारुड मंत्र लखायो ॥ छायो सहज परम सुख केवल सकल सोच बिनसायो ॥ २ ॥ छूटो द्वैत जगत भ्रम नाना सहज स्वरूप सोहायो ॥ बिश्वरूप जल थल चहुं पूरण ब्रह्म रूप दरशायो ॥ ३ ॥ भजन भैरो ॥ वन्दौ श्रीगुरु देवचरण कों ॥ भव दुख उदधि पार नहि सूझत पायो सहजे तरणि तरणकों ॥ १ ॥ जेहि पदकंज बसत सुर सरिता चारि पदारथ दानि शरणकों ॥ करुणा सिंधु बुद्धि गुण दायक कठिन दुसह भय जनम मरणकों ॥ २ ॥ श्री गुरु तारक ब्रह्ममहा प्रभु बिश्व रूप गुरु भजु चरणन कों ॥ ३ ॥ सोरठ ॥ देखो घन झरत आनन्द ज्ञान ॥ गुरु चरण रज ऋतु सोहावन घटा समता ध्यान ॥ गुरु स्वरूप अनूप सुन्दर मेघ सजल सुजान ॥ १ ॥ आठ याम अखंड बरषे पूरि द्वैतन भान ॥ बिश्वरूप प्रताप गुरुको अचल अमल ठेकान ॥ २ ॥ भजनठुमरी ॥ मन कब राम नाम रट लेहो ॥ छन छन छीनहोतइन्द्रीगण

कब हरिके गुणगैहो ॥ १ ॥ नीच कर्म तरुलाइ लोभ जलसींचि अमिय फल कैसेपैहो ॥ पर अपकार पहार शीसधरि भव जल केहि बिधि पारसिधइहो ॥ २ ॥ जगत गहन बन दावचहूं दिशि कहु केहि मगुते बाहरजइहो ॥ बिश्वरूप अवसरके चूके सिरधुनि धुनि पुनि पुनि पछितइहो ॥ २ ॥ बिहाग भजन ॥ मनरे भूले बिराने देश ॥ इत अपनो हित दीशतनाहीं जेहि बससहत कलेश ॥ १ ॥ जेहितन कहं पालत निशि वासर करि बहु पाप हमेस ॥ सोतन गीध श्वान मुख जइहै करिहै कि अनल प्रवेस ॥ २ ॥ नयन अंधभये श्रवन सुनत नहि पग न चलत बहु तेस ॥ जर्जर भये दशन सब टूटे सेत भये सबकेस ॥ ३ ॥ अलप धनिककी कौनचलावे जइहे अवशि धनेश ॥ काल गालतें नहि कोउ बांचत सुर नर असुर सुरेश ॥ ४ ॥ जेहि पद सेइ अचल पद पायेना-रदादि मुनिशेस ॥ बिश्व रूप दृढ़ अवशि गहो सोइ अवर सकल चल भेस ॥ ५ ॥ भजन ॥ मनरे हरि बिनु सकल बिराने ॥ अहित होत सब समय पाय के जाकहं हित करि जाने ॥ १ ॥ यदपि दिवाकर रुचि करकर लहि कमल तुरित बिग साने ॥ सोइ रबि कर गन पाइ बारि बिनु वारिज तुरित सुखाने ॥ २ ॥ सकल शस्य पालक वारिद है पालत सबहि समाने ॥ बर्षत बिपुल उपल कबहूंके बिनमत ओहि विताने ॥ ३ ॥ वनिता भोग राज सुख चाहत मूढ़ बिना पहिचाने ॥ इतदुख मूल नरक दायक उत करि तेहि प्रीति भुलाने ॥ ४ ॥ जेहि डरते यम राज डरत नित निशिदिन काल सकाने ॥ बिश्वरूप सिय नाथ भजे जो सो जन परम सयाने ॥ ५ ॥ भजन ॥ मनरे समुझि बूझि अब देखो ॥ तेरो तन तेरे संग ना जइहे अवर करों कालेखो ॥ १ ॥ कूच नगारा बाजि गयोहै ठौरेउ यम गन मेखो ॥ काल कर्म को धार बड़ोहै सो नहि मूढ़ निरेखो ॥ २ ॥ ध्यावो मन करुणा निधि रघुवर जलधर बर रुचिवेखो ॥ बिश्व रूप जग सुख सपनेके अबजिन नैनन्ह पेखो ॥ ३ ॥ भजन ॥ रेमन तू न भयो अपना ॥ कोटि सिखावों नेकु न मानत देत दुसह तपना ॥ १ ॥ तोरे बस परि सहेउं बहुत दुख चौरासी भ्रमना ॥ ऊंच नीच घरबास घनेरो मातु गरभ दहना ॥ २ जानि दिवाकर कर शीतल जल साहस करत घना ॥ निकटहि आतम रसहित कारक पियत न एक छना ॥ ३ ॥ केतिक युग बीते भरमत तोहि निज हित समुझतना ॥ बिश्व रूप निज बोध हेतु करि जानु जगत सपना ॥ ४ ॥ भजन ॥ समुझि न परत अलख गति तेरो ॥ सब जग कारन आपु अकारण निर्गुण सगुण घनेरो ॥ १ ॥ मायातें बहु खेल कियोहै रचेउ भुवन चहुं फेरो ॥ बिबिधि सुभाव भेदतें जहं तहं बहु बिधि

जीव बसेरो ॥ २ ॥ चहु दिशि बिषय दियो फैलाई जीव कहत तेहि मेरो ॥ काम क्रोध की ओट परोहै सुधि नहि कर्त्ता केरो ॥ ३ ॥ जब यह जाल दया करि खैंचहु नयन कोर हरि हेरो ॥ बिश्व रूप जग झूंठ सांच मति सहजहि होत निवेरो ॥ ४ ॥ बिहाग भजन ॥ भजोरे मन सब गुण निधि भगवन्त ॥ दीनबंधु करुणा के सागर अकल अनीह अनन्त ॥ जीव चराचर रमेउ दयानिधि केवल कमला कन्त ॥ १ ॥ निज समान अपनो है साहेब कोउ पटतर नलहंत ॥ अति अगाध महिमा है जाकोकहि हारे श्रुति संत ॥ २ ॥ सब विभूति प्रभु को जग छायो तेज वंत गुण वंत ॥ विश्व रूप जेसो प्रभु हेरो क्या हेरसि धनवंत ॥ ३ ॥ भजन ॥ मनरे भटकत हरि बिनु जाने ॥ धर्माधर्म विचार करत नहि लोभचीक दृगताने ॥ १ ॥ अवरन कह समुझावत बहु बिधि अपनी राह हेराने ॥ जगत सघन बनभूलि गयो है नहिकरतब पहिचाने ॥ २ ॥ बड़ो गुनी सब महं कह वावत हम उत्तम उरआने ॥ खानपान तन पालन रतनित पर धन हरण सयाने ॥ ३ ॥ करत कुकर्म दिवस सबबीते अजहुंन मूढ़ अघाने ॥ बिश्वरूप अब चेत सबेरे झूठे जनम नसाने ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ मनरे बिषय कारण बहु नाचो ॥ जो जग दीश ताहि बिसरायो घर घर निसि दिन यांचो ॥ १ ॥ गुरु उपदेश नही ठहरत उर जेसे जल घट कांचो ॥ बिषय बयन सुनि तुरित ढरत शठ जिमि पावक घृत आंचो ॥ २ ॥ अंध भये मणि नाम न देखत बरबस कांचुहि रांचो ॥ बर बस चलत कुमारग निशिदिन बेद पुराणहि बांचो ॥ ३ ॥ झूंठ पसार सार करि मानत गहत न हरि पद सांचो ॥ विश्व रूप अवसर के चूके यम गण देत तमाचो ॥ ४ ॥ भैरो में भजन ॥ भजुमन शंभु शरण सुखदाई ॥ जासु शरणतें लहे परम पद बहुरि न भव जल आई ॥ १ ॥ जेहि यांचे ते होत अयांचक दारिद सकल नसाई ॥ सकल भूति कर तूति सोहावन निशिदिन करतल छाई ॥ २ ॥ अति दयाल समरथ सुख दायक मूढ़ ताहि बिसराई ॥ कामी कुटिल बिषय रस बस नित गहत न जेहि शरणाई ॥ ३ ॥ तजि चिंता मणि सब सुख दायक गहत काचु हठि धाई ॥ सुर तरु सकल मनोरथ दायक परि हरि आक लगाई ॥ ४ ॥ बिधु शेखर हर चरण प्रीति करु जो चाहसि कुशलाई ॥ विश्व रूप भव अगम तरण कहं दूसर नाहि उपाई ॥ ५ ॥ धनाश्री ॥ अजहुं समुझ मन होत अवेरो ॥ नाहकहीं सब दिवस बितायो कबहुं न हरि पद हेरो ॥ १ ॥ बालक पन बीते अजान महं असन शयन रुचि ढेरो ॥ करत चपलता इत उत धावत नहि सुधि साधन केरो ॥ २ ॥ तरुण भये

सुधि सकल भुलाने तरुण ति मर मद घेरो ॥ मत्तमहिष वृष राज सरिस सठ भये कामिनि कर चेरो ॥ ३ ॥ कृषी बणिज व्यवहार करत बहु धन महं प्रीति घनेरो ॥ नीति अनीति बिचार करत नहि संगति कुपथिन केरो ॥ ४ कंपत गात बात नहि पूछत जेह पर ममता तेरो ॥ विश्व रूप भजु जनक सुता बर काल किये सिर डेरो ॥ ५ ॥ भजन ॥ मन बसहु सरोवर जाई ॥ घाट बिचार सुचारु शमादिक छबि सो पानसोहाई ॥ १ ॥ निर्मल ज्ञान बारि परि पूरण सुखद मनोहर ताई ॥ निज स्वरूप सुख रूप सुमोती चुंगत प्रीति बढ़ाई ॥ २ ॥ नहिंतहं करदम भेदजनित दुख अमित बासना काई ॥ शोक गृष्म ऋतु ताप न लागत शीतलता अति छाई ॥ ३ ॥ कामी कुटिल नीच अभिमानी काक गीध बिपुलाई ॥ पर अपकार बिषयरस निशि दिन तेहिथल बासन पाई ॥ ४ ॥ मुनि जन धीर मराल मगन होय करत निवास सदाई ॥ बिश्वरूप घर अचल करोतहं आवा गवन नसाई ॥ ५ ॥ भजन ॥ ज्ञान कृपान गहो मन मेरो ॥ अति हुसियार रहो निशिबासर रिपु घेरेउ बहुंफेरो ॥ १ ॥ मोह मान मदमार प्रवल रिपु इन्ह संग फउज घनेरो ॥ करत उजारि भवन सबहीके भरन परो इन केरो ॥ २ ॥ शम दम योग बिराग यतन बहु पहिरो कवच अछेरो ॥ होइ अभय मारो रिपु दल को दयबहु दुसह दरेरो ॥ ३ ॥ आतम रूपराज अविचल पद बैठो सब तजि घेरो ॥ बिश्वरूप सुख सिंधु मगन रहु दशहु दिशा जय तेरो ॥ ४ ॥ भजन ॥ यह तनके ममता दुखदाई ॥ कहुं पूजेते गगन करतुहै कहुं परिभवते देख बढ़ाई ॥ जबतक हृदय ग्रंथि नहि छूटै तब तक मिटत न मनमलिनाई ॥ १ ॥ भ्रम वस कर्म करत बहु भातिन जन्मत मरत बहुत दुख पाई ॥ यह भव उदधि अपार धार है हठकरि परेउ बीचतेहि जाई ॥ २ ॥ काम क्रोध जहं जंतु घनेरे ग्रास करत सब कहं बरिआई ॥ बिश्वरूप गहु राम नाम दृढ़ सकल चाहत मनकी बिसराई ॥ ३ ॥ खेमटा॥ झूठे जगत भुलानो मैं कैसे सुख पावों ॥ ऐकौ छन हरि भजन करत नहि राजस गति चित लावों ॥ काम क्रोध जल झरत रैनदिन अजहुं भवननहिं छावों ॥ १ ॥ हरि जनहरि सों प्रीति बिसारेउ सुत बनिता गुण गावों ॥ निकटहि व्यापक प्रभु सुख सागर देश बिदेशहि धावों ॥ २ ॥ करि पखंड प्रभुता चित चाहों श्रुति मारग बिसरावों ॥ बिश्वरूप अस दिन कब ह्वैहैं राम शरण महं आवों ॥ ३ ॥ खेमटा ॥ संवलिया लाल मैं तोहि जानी ॥ बिनति करों जनि लाव नजरिया छटासे मोरे नैना लोभानी ॥ १ ॥ बिश्व-

रूप चित चोर कन्हैया तुमरे हाथमेंनाहि बिकानी ॥ २ ॥ खेमटा॥ मुरलिया लालदे मोहि आनि ॥ चांद सुरजकेरि योति मुरलिया बजाई हरै जियरा बिरानि ॥ १ ॥ बिश्वरूप हंसि हेरि नजरिया लगादे प्यारे नैना निसानि ॥ २ ॥ खेमटा ॥ धनुहियां हाथ सों लेइतानि ॥ कर गहि बाण सुजान संवलिया चलाइ कीन्हो दशमुख हानि ॥ १ ॥ बिश्वरूप करिअभय धरनियां छुड़ाइ दीन्हो जगकी गलानि ॥ २ ॥ खेमटा ॥ नजरिया हेरिदे मोहिदानि ॥ कमल कोष छबि हरनि नजरिया छुड़ादे मेरो ममता गलानि ॥ १ ॥ बिश्व-रूप रघुबर वरदानिया कहां लों तेरी महिमा बखानि ॥ २ ॥ खेमटा ॥ राघो तेरो छबि यां नजरी मह लेवों हो ॥ सरयु सोहावनि बिहरण नीको छन छन नेहिया बढ़ावत रहियो हो ॥ १ ॥ बचन माधुरि मनहि बसे हो सुख घन रसिया कबो ना बिसरैयो हो ॥ बिश्व रूप लालन दश-रथके पदरज मतिया लगावत तरियोहो ॥ २ ॥ खेमटा ॥ राघो तेरो सुधिया कवन बिधि पैयोंहो ॥ रोदन करति परत धरणी महं कहत कोशिल्या प्रा-णही देयोंहो ॥ जनक दुलारी प्यारी प्राणहूं ते मेरी कवन यतन तेरि सिया सुधि ले योंहो ॥ २ ॥ छिन छिन कोटिन युगतें कठिन भयो केहिबिधि रतियां अगम बितै योहो ॥ बिश्व रूप बिधि बिपति भवन दियो दुखकी समैया अब कासों सुनैयोहो॥ ३ ॥ खेमटा ॥ कोने मद भूलिबिगारे सब कमवां ॥ जगकर सपना भोग लखतना जोरत रहत लाख को जमवां ॥ १ ॥ जरत गरभको सोच करत ना कियोरे कउल जपिहों हरि नमवां ॥ २ ॥ पुरजन वनिता संग रहत ना जीबन चपल लखो हरदमवां ॥ ३ ॥ बिश्व रूप गुरु चरण गहतना करतब नीच चहत सुख धमवां ॥ ४ ॥ खेमटा ॥ लागे दिन रैन हमारे मन रमवां ॥ कुटिल करम को आश करबना चरण कमल जपि-हो सुख धमवां ॥ १ ॥ कठिन जगत को बंधन सहिहों बहुरि नपैहों गरभ जनमवां ॥ २ ॥ भरम भवन में बास न लहिहों तजिहों कुटिल कुमति मद कमवां ॥ ३ ॥ विश्व रूप मोहि अवरन भावे हारिल की लकड़ी घन समवां ॥ ४ ॥ ध्रुवपद ॥ सखि राजको समाज साज सोहत रघुनाथ जीको कांति सदन मदन कोटिपटतर नहि पावैरी ॥ १ ॥ भूपन की पांति पांति सुरपति सु मुनि सोहाति गान करति देव बधू भुवन को रिझावैरी ॥ २ ॥ ज्वलित वरण तरणि योति भूषण पट योति होति शीस मुकुट मणि गण छबि दृ-गन कों चुरावैरी ॥ ३ ॥ महाराज भूप न को भूप बिश्व रूप राम ऐसो प्रभु छोंड़ि आस दीनसो लगावैरी ॥ ४ ॥ ध्रुव पदबिलावल ॥ मोहन कुंचन

ब्रज जन प्यारे ॥ कूंज बिहरन चित हरन श्याम श्याम राम संग सिधारे ॥ १ ॥ कुंजन प्रति कुंज कुंज गुंजत चहुं भृंगधीर कुसुमित तरु ललित मोर सोर सों पुकारे ॥ २ ॥ लीन्हे संग ग्वालबाल खेलत ब्रज लाल खेल निरखत चित भरत मोद कुसुम हरषि डारे ॥ ३ ॥ बिश्व रूप ब्यापक जेहि नेति नेति गावे श्रुति भाग्य पुंज पुंजन संग बिहरत निसवारे ॥ ४ ॥ ध्रुवपद ॥ आलीरी सावन आयो घनमन भावन झनन घनन अंजोर चपल दो दृग झंपन ॥ १ ॥ बनवारी बल राम सुनाम गये बन सोचति मोहत बिश्व रूप सखिरी उर छायो मोहि कंपन ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ भ्रमबंश तें भव जालमें भटकी ॥ यतन करत सुखहेतु अनेकन कामिनि कोष बिषय चित अटकी ॥ १ ॥ आश पिशाच बिबश भयो निश दिन बाहर धावत सुधि न निकट की ॥ २ ॥ बिश्व रूप रघुबीर शरण गहु हरण द्वंद जग फन्द बिकटकी ॥ ३ ॥ ध्रुवपद सामकल्यान ॥ येआजु पावन कीन्हो सुख घन छबि निधि भवन भुवन संभोग रण योग जन पावन ॥ १ ॥ बहु रंगी पट रंग सुरंग सुभूषण सोहत मोहत बिश्व रूप सखीरी श्याम सोहावन ॥ २ ॥ ध्रुवपद सामकल्यान ॥ बिरहत मोहन ग्वाला गोपी साथ लेई ॥ सघन बाटिका कुसुमु घनेरो नाना गन्ध फूले हैं चंबेली मुख धृत बंशी शोहन ॥ १ ॥ मंजरी माल मणि माल झीनो सजे हैं अंबर छबि न्यारे ॥ विश्व रूप बंशी धुनि सुनि सुरनि किलकि हा हा देई देई ये लागत सुर मुनि जोहन ॥ २ ॥ ध्रुपद ॥ निर्त्तत मोहन श्यामा बंशी हाथ गहें ॥ चपल सोहावनि बैन सोहाई झुकिझुकि आवत दूर पराई सुखघन बिहरे मोहन ॥ १ ॥ मधुबन बिहरत श्याम कन्हाई बालन्हकेसंग केलि मचाई ॥ विश्व रूप निर्त्तत यदुनन्दन थेई थेई तता थेइ तंतं गगन मुरली बाजत सोहन ॥ २ ॥ ध्रुवपद ॥ आयो घन घोर मोर नाचत चहुं ओरहेरि कीन्हों प्रिय सोर भोर भई दशा तन की ॥ ऐसें ब्रज ग्वाल बाल हेरें नन्दलाल ओर फेरे नहि नेकु नैन चित्रलिखे मनकी १ ॥ भूषण सुअंग अंग मोरत अनंग कोटि रंग रंग पीत द्योति चपला ज्यों घन की ॥ ऐसेमोहन अनूपहेरे दृग विश्वरूप नैन बैन भेद किये खोटो बिधि जनकी ॥ २ ॥ ध्रुपद ॥ जीतेरी जबही ऐसो कामकामिनी को माया जाल पै हो तबही तूं श्यामा प्यारे ब्रज चन्द जी ॥ जीवन अलख जानें पथिकसो संग मानो चपला मोंचित लायो भूलेमति मंद जी ॥ १ ॥ सपना को राज पायो उरमें आनंद छायो जागे पछ तायो ऐसो जानों जग फन्द जी ॥ विश्वरूप भजो नाम जीवन सुखद श्याम मोहन मुकुंद माधो प्यारे सुख कन्दजी ॥ २ ॥ राग ठुमरी ॥ मन मेरो

रघुबीर सों अटकी ॥ सुर नर नाग अवध सुख चाहत सो तजि भवन छांह तरु बट की ॥ १ ॥ नृप किरीट पद परत जाहिके तापस बेषसों बन बन भटकी ॥ २ ॥ बिश्वरूप कहै भरतसों पुर जन बिधि रहे मुकुट जटा सिर लटकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ खगपति अहि जिमि कंसकों झटकी ॥ गहि कर केश नरेश बीच में श्याम घुमाय भूमितल पटकी ॥ १ ॥ धायो रि कंस सहोदर रिपुगण छिन में हतेउ खेलि कियोनटकी ॥ २ ॥ बिश्वरूप जासों काल डरतु है गिनती कवन असुरदल भटकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ मन जिनके धन गेहसों अटकी ॥ छांडेरिसुपथ बृथा भयो जीवनरबिकर बारि तृषा कहुं हटकी ॥ १ ॥ होत बिफल जप योग कांच जेसे बहत सकल जल रहत न घटकी ॥ २ ॥ बिश्वरूप गुरु चरण सरोरुह बेगिगहो तजि चीक कपटकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ सखि सबके चित श्याम सों अटकी ॥ ढरत नयन जल नीद न आवत कोटि न युगशत होत पलककी ॥ १ ॥ बिसरत नहि सखि मोहन कीछवि यमुना नीर रुचिर छबि तटकी ॥ २ ॥ बिश्वरूप मधुपुर गये मोहन मोहि सुधि रहत न भूषन पटकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ मन जबते हरि ओर से हटकी ॥ तब तेरे भव जल पावत दुख घन आवत जात अमित युग भटकी ॥ १ ॥ बिश्वरूप श्रुति मगनहि हेरत सुत बित नेह गेह सुख अटकी ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ भूषन जों घनन योति सों झलकी ॥ उर बनमाल भाल सोहै चन्दन भृकुटी ललित हास मन ललकी ॥ १ ॥ सब गुणअयन बैन मन मोहन लटक जलज मुखछबि अलि दलकी ॥ २ ॥ बिश्वरूप मन मोहन कीनी बिसरत नहि छबि नयन चपलकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ बिन समुझेहिये सोच सों भटकी ॥ राज बिभव सुख बंधु सहोदर ओस छनिक तृणजल जिमि लटकी ॥ १ ॥ रैनि सपन सुख गगन कुसुम सम मानस चित्त चपल चित अटकी ॥ २ ॥ बिश्वरूप गुरु पद रज अंजन गंजन दृग दुख दोष कपटकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ मन जिनको निज बोधसों अटकी ॥ बिहरत अभय सबहि मह पूरण भय न होत उर रिपुगण खटकी ॥ १ ॥ बाहर नामरूप दृग गोचर पुतरी ललित रचित जिमि पटकी ॥ २ ॥ बिश्वरूप मुख अमल सोहावन योति झलक जिमि रविगन ठटकी ॥ ३ ॥ रागभैरवी ॥ बतावो मोहि श्याम गये केहि ओर ॥ श्याम श्याम रटि थकित भई अति नहि मिले नन्द किशोर ॥ १ ॥ कचतें कुसुम झरत चहुंदिशतें टूटी गलतर जोर ॥ बिकल भई सुधि सकल भुलानी मन अटको चित चोर ॥ २ ॥ मुरलीटेर करत मुरली धर आइ गये तेहि ओर ॥ बिश्वरूप सखि निरखि मगन भई जैसे चन्द चकोर ॥ ३ ॥

रागभैरवी ॥ माधव माया सबहि नचावै ॥ योगी जंगम नृप संन्यासी पार कोउ नहिं पावै ॥ १ ॥ जाकी चास बास मुनि जन सब बनमें जाय लगावै॥ मानस बेग प्रबल नानासर हठि तहं तुरित पठावै ॥ २ ॥ कहुं तिय सुत धन रूप भईहे नाना भेषदेखावै ॥ कहुं परिवार बंधुहित अपनो बहुबिधि जाल बढ़ावै ॥ ३ ॥ हों पंडित ज्ञानी सर्वोत्तम अहमिति उर अधिकावै ॥ सो नहिं समुझत मूढ़ मोह बस हठि निज शीस कटावै ॥ ४ ॥ काहकहों करुणा के सागर कछु उपाइ नहिं आवै ॥ विश्वरूप रघुनाथ शरणतव दृढ़ भरोस मन भावै ॥ ५ ॥ रागभैरवी ॥ माधव मन जीतब कठिनाई ॥ मुनि जन यतन करत बहुहारे नेकु थाह नहिं पाई ॥ १ ॥ मूल सहित गिरिवर उखारि बरु करतेलेइ उठाई॥ सब सागर एक बार सिमिटिवरु मंजुलि मांह समाई ॥ २ ॥ पावक प्रबल प्रचंड असन करै बरु शीतलता छाई ॥ नभकह सिमिटि धरनि मह मेले वरु बिष दुसह पचाई ॥ ३ ॥ स्वर्ग नरक दुख सुख बहु भांति-न यह मन कृत समुदाई ॥ चौरासी मह भ्रमत दिवस निशि नहिं पावत थिर ताई ॥ ४ ॥ जापर दया करहु करुणा निधि माया पति रघुराई ॥ बिश्व रूप बसि होत ताहि मन बिनु प्रयास सुख पाई॥ ५ ॥ राग भैरवी ॥ मेरो मन हरत कपाली बन मालिया ॥ मुख मुरली डमरू, छबि सोहे कर धनु बान त्रिशूल छटालिया ॥ १ ॥ शीस मुकुट मणि जटित सोहावन शंकर केसरि सोहत जटालिया ॥ २ ॥ बिश्वरूप करपूर गौर हरश्याम वरन मन मोहत घटालियां ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ काहे रघुवर कूप झकावत हो ॥ श्रुति मत बिदित सकल अंतर गति जाननि हार लखावति हो ॥ १ ॥ बिश्वरूप जगदीश दीन प्रभु नाम की लाजन आवत हो ॥ २ ॥ भैरवी॥ सखि मोहन मोकंह भावतरी ॥ श्याम अलक मुख झलक सूर सों कोटि मदन छबि छा-वतरी ॥ १ ॥ बिश्व रूप दृग कमल चपल सों श्याम सनेह लगावतरी ॥ २ ॥ भैरवी ॥ तोरि राम धनुष जगत यश छायो है ॥ छबि रुचि कारि सोहे देखि त्रिभुवन मोहे एकटक नर नारि पलकन लायो है ॥ १ ॥ रबि द्युति उजियारी जगमग ज्योति सारी भूप जान खान देखिउर सकुचायो है ॥ २ ॥ जनक को पन पाले खल नृप मद घाले साधु नृप उर माह अति सुखमायो है ॥ ३ ॥ भृगुपति मद तोरे मुनि जन करजोरे जानि प्रभु शीस नवाई बनको सिधायोहे ॥ ४ ॥ रुचिर समाज सोहे गिरा बिधि शेष जोहे उपमा न पायो ताते अनुपम गायोहे ॥ ५ ॥ विश्व रूप प्रभु राम जनहित सुखधाम जानकी समेत रथ चढ़ि गृह आयो है॥ ६ ॥ भैरवी जोरें कर भरत

जी अरज सुनायेहै॥ चलहु भवन नाथ अवध करो समाथ करुणा निधाम तुमें लेन कह आयो है॥ १॥ सुनिके विनय बाणी रघुबंश सुखदानि समुझि पिताको पन उर सकुचायेहै॥ २॥ भरतसनेह भारी सकत न रामटारी प्रेम के बिबश भये दृग जल छायेहै॥ ३॥ बिश्व रूप रघुराज समुझायो सुर काज चिचकूट तें भरत कह पलटायेहै॥ ४॥ भैरवी॥ श्यामा मोरे चित कों चुराय लई भवन भोग लेई काकरिहों मैंतो॥ सुन्दर गति छबि ललित मोहन की ब्रज पुरजन कों लुभाय लई॥ १॥ बिश्व रूप मुरली मोहनकी सुर नर नाग मोहाय लई॥ २॥ भैरवी सैयां तोरे संगमें छपाय रही ज्ञान नैन सो हियां लखिहों प्यारे॥ अंतर रंग रहत मेहदी की घृत जैसे छीर में छायरही॥१॥ बिश्व रूप एक गुरूको भरोसो मिलनेकि और उपाय नहीं॥ २॥ राग भैरवी॥ माया मोरे रंगको नसाय दई रामसों नेह हिया धरिहों अब॥ घेर करति चहुं विषय जालकरि सतपथसों बिचलाय दई॥ बिश्वरूप निजबोध ब्रह्म सुख बरबस तें बिसराय दई॥ २॥ भैरवी॥ काया तोरे संगमें न जाय कही कौन हेतु बसतू परिहों प्यारे॥ सुख घन ब्रह्म सरूप झलक चहुं केवल मनको रमाय रही॥ बिश्वरूप अवसर दिन दशकी अबतोहि काल फसाय चही॥ १॥ भैरवी॥ रघुबर जबतक प्रीति न तोसे॥ काह भये बनजंतु बटोरे खान पान बहु पोसे॥ काह भये मृग छाल बिछाये समुझत ना गुण दोसे॥ काह भयेसिर जटा बढ़ाये मनलागो धनकोसे॥ १॥ ऊखर बीज सरिस करतब सब जिमि अनीश कृत जोसे॥ बिश्वरूप जगदीश नाथपद जो पद रति नहिं मोसे॥ २॥ होरीकीताल॥ मैंतो मन मोहन को रटती रही। ज्योति दृगन सों घटती रही॥ कुबरी संग प्रीति हरि कीन्हों कवन कलासों जटती रही॥ इत आवन नहिदेति श्याम को विरह बिथासों लटती रही॥ २॥ मधु पुर नवल सनेह श्याम सों सखि कुबजा सो पटती रही॥ बिश्वरूप ब्रज हरि नहिं अहै प्रीति इहां सों हटती रही॥ ३॥ तालहोरी॥ मैंतो दुख सागर सों तरती नहीं चरण शरण जों धरती नहीं॥ १॥ गुरु पदनाव अचल वृत चौकी धीर पवन सों डरती नहीं॥ भइहों अशंक पार भव जलतें योग यतन कोंकरती नहीं॥ २॥ अचल अमल सुख घन हिय छायो द्वैत फन्दसो मरती नहीं॥ बिश्वरूप शशिसूर उदय भयो ज्योतिपलकसो टरती नहीं॥३॥ होरीकीताल॥ ऐसे रघुनन्दन सों कहती रही चरण युगल कों चहती रही॥ चन्द्र चूड़ रिपु अहि चहुं छायो शोच अनल सों दहती रही॥ रैनि दिवस दृग नींद

न आवे दुसह दपट को सहती रही ॥ १ ॥ करुणा सिंधु मुछबि खगपति सों नेह अचल कों गहती रही ॥ बिश्वरूप श्रुति गम्य शरणमों मैंतो छन छन रहती रही ॥ २ ॥ होरी की जत ॥ प्यारी नट नागर सों करती नही ॥ कमल नयन सों डरती नही ॥ श्याम निलज संग सुख कहुं कैसे चितहन सों री भरती नही ॥ लाइ सनेह कपट कियो मोहन सखि कुबजा सों बनती रही ॥ १ ॥ जनतिउं सांच सनेह मोहन की मैंतो इनसों जरती नही ॥ बिश्वरूप बस हरि ब्रज जनकी मैंतो पायन परती नही ॥ २ ॥ ताल होरी की ॥ मैंतो अब आवन सों डरती नही ॥ निज सुख घन सो टरती नही ॥ भये न होनिहार नहिं होइहै सीप रजत कोंररती नहीं ॥ कोजग जागको करनिहार कों सयन नृपति सोंभरती नहा ॥ २ ॥साधे मौन रूप निज पायो दूजो चितसों धरती नहीं ॥ बिश्वरूप गुरुअलख लखायो चपल चरख सों ढरती नही ॥ ३ ॥ तालहोरी ॥ मैंतो सुनि शोचनिसों मरतीरही ॥ अजब भवन मों परती रही ॥ मरत द्विरेफ फूल रस चाखे समुझि हृदय सों मरती रही ॥ बारि अगम बन लहत कठिन दुख केहरि गजसों डरती रही ॥ १ ॥ सींचे तरु फल फूलन लागे बिन सींचे पर फरती रही ॥ बिश्व रूप पावक बिनु रबि शशि दिन राति जोति बरती रही ॥ २ ॥ रेखता ॥ गहो अब रामकों प्यारे धनुष लै काल बैठारे ॥ यतन करि बहुततें हारे कछू नहिं हाथ आयारे ॥ भयो गाफिल तूनिशि बारे कपट को फन्द गल डारे लखो जग झूठ मतबारे भजो मन विश्व कर्तारे ॥ १ ॥ रेखता ॥ बिनय महाबीर जी मेरो दयाकरि दृगन सों हेरो ॥ झलक रबि कोटि तन सोहै निरखि शिर छत्र मनमोहै ॥ सदा मैं चरण कों चेरो भरोसा एकहै तेरो ॥ १ ॥ सोहै भूषण सुअंगनमें बसनरंगे सुरंगनमें ॥ सिमिटि रबि चन्दबहुतेरो सोहै माला मणिन केरो ॥ २ ॥ अतुल बल और जगकोहै दनुज बन दहन छबि सोहै ॥ अभै समता सुमति केरो तुही दानी चहूं फेरो ॥ ३ ॥ जलधि गोपद सो कीन्हो संदेशो राम को दीन्हो ॥ करों प्रभु नाम को टेरो शरन है विश्व को तेरो ॥ ४ ॥ राग बसन्त ॥ खेलत बसंत रघुकुल दिनेश देखत समाज सकुचे सुरेश ॥ नित नूतन घर घर महं उछाह काहूके उर नहिं बिबिध दाह ॥ जहां कमलो किये भवन जाय तेहि पुरछबिको सकतगाय ॥ १ ॥ देवनि करनिज तिय समेत गावत स्वररुचि ताल देत ॥ गह गह धुनि चहुंबिश्व रूप होत मगन जैसे रंकभूप ॥ २ ॥ राम रागबसंत ॥ खेलत बसंत श्री महाबीर बलसागर रबि सम तेजधीर ॥ श्री अगाध मारुत

कुमार गजराज पायके हरि उदार ॥ प्रभुबिश्वरूप रघुबर अधार बरदान देहु करुणा अगार ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ श्याम रूप जबसों दृगहेरे ॥ बिकल होत मनकल न परेरे ॥ कहे जोबैन मधुर रुचि कर अति मुरली टेर फेर चितदेरे ॥ हंसनि चातुरी चकृत चपलता नहिं पटतर हेरेउं बहुतेरे ॥ १ ॥ गोवन के संगबालन लीन्हो कर कर जोरि डगर चहुंघेरे ॥ बिश्वरूप लीलाधर मोहन रैनि दिवस सखि चितमो बसेरे ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ भल तेरो श्याम जवानी निरखत नैन अघानी ॥ रचि रचि बिरवा पान सवांरे दशन अधर छबि खानी ॥ तिरछे नैन हरत हरिजीको लखत ललित मुसुकानी ॥ १ ॥ पीत बसन छबि चितको हरत है भूषण भूति निशानी ॥ बिश्वरूप मोहनछ छबि तेरो लखि अनंग सकुचानी ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ देखो देखो रे श्याम की रुचिराई ॥ कुंडल चपल करण महराजे मुखमुरली छबिछाई ॥१॥ पीत बसनदुति अधिक बिराजे लखि दामिनि सकुचाई ॥ २ ॥ मणिगण हार मुछबि उर शोभित मानहुं सिमिटि सूरशशि आई ॥ ३ ॥ बिश्वरूप मनमोहन मोहन हरत फन्द दृगकी चपलाई ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ राधिका संग श्याम सिधारे ॥ हम सबते कछु बात कहत नही कपट करत मुरलीधर प्यारे ॥ १ ॥ कहां गये मन मोहत मोहन अलिहम खोजति कुंजलतारे ॥ चंचल प्रीति करत हरि हमसन कहा कहों सखि मोहन कारे ॥ २ ॥ बिश्वरूप हरि बिरह बिकल भई जोहत सब सखि यमुना किनारे ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ भला नारे मोहन प्यारे सांवलिया नन्दलालारे ॥ नयन लगीचितको ठगी लागी काम कमान ॥ बनबन सुधि कहुना मिली गये कहांरी कान ॥ १ ॥ सुघर छैलसंग राधिका करती बहुत गुमान ॥ बिश्वरूप धुनि बांसुरी लगो बिरह कोबान ॥ ॥ २ ॥ भैरवी ॥ मिलनारे मुरलिया वाले सांवलिया मोहि प्यारे ॥ पीत बसन काछे भली बन माला छबिखान । चितवनि दृगमो रसभरी निरखत हरिले प्रन ॥ १ ॥ तिलक भाल शोभा भली झलक कोटि सत भान। बिश्वरूप मनमो बसीकिये सरसजों गान ॥ २ ॥ खेमटा ॥ बितत सबदिनवां नाहकरे ॥ नहिंहरि भजन शरण नहिंगुरुकें होइहे यमगण गांहकरे ॥ १ ॥ कुमति कुसंग सनेह बढ़ाये मोहभार सिरबांह करे ॥ बिश्वरूप पुनिपुनि पछितेहो पैहो दुख उर दाहकरे ॥ २ ॥ खेमटा ॥ सूरतिया पनि हारिनि भईमोर ॥ बिनाकूप बिन डोर भरत जल पिवत मगन नितरहे चहुओर ॥ १ ॥ चिकुटि भवनवां रहति मौनवां कौनहु समय न लावति भोर ॥ २ ॥ बिनु दीपक घृत बाति अनल बिनु ज्योति बरत नित रहत अंजोर ॥ ३ ॥ काम क्रोध जहं

सलस नहींहै बिषय बायु नहिं करत झकोर ॥ ४ ॥ नूर जहूरझरतहै झला झल नहि तहं आसचास जगघोर ॥ विश्वरूप गुरु गम्य अगमहै लखे मिटै मायाकृत घोर ॥ ५ ॥ खेमटा ॥ सुरतिया लागि रही हरि ओर ॥ बिषयबि-बस जनिलावो भोर ॥ १ ॥ सुरति निरत जोपान करतुहै टूटिजात मनकर सब जोर ॥ २ ॥ ज्ञानध्यान यह महा रतनहै ताहि हरत नहिं कबहूंचोर ॥ बिश्वरूप हिय मगन भयोहै मेटि गयउ सब जगकी खोर ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ बेद बेदाराम चन्द्रहरे प्रभो गहो मन ॥ माधो केशो बंशीधर हरि गोसुर नन्दन पीतांबरधर ॥ चापपाणि भव मोचन सियबर ॥ १ ॥ सिद्ध महीधर केसि निसूदन गोप बाल सर्बेश्वर श्रीपति शोक निकन्दन जग जीवन कर ॥ २ ॥ श्रीश गदाधर जग बंदन प्रभु पारब्रह्म अखिलेश्वर निधिपति फन्दनि कन्दन मुकुंद मुरदर ॥ ३ ॥ भवभय भंजन तेज राशि बर अबिनाशी अज परशुराम मधु सूदन जनमन मोहन भय हर ॥ ४ ॥ बुद्धि सुखा कर परम पुरातन लोक नाथ बिश्वेश्वर बसु पति काली मर्दन नारायण नर ॥ ५ ॥ सत्य दया निधि अकल समीरण हंस बंशईनेश्वर पत पत्तिकर्दम नन्दन बिश्व रूप पर ॥ ६ ॥ भैरवी ॥ नन्द सुवन भुवन विदित शोक को हरैया ॥ चलत चाल अति रसाल राजित छबि दृग बिशाल बाल केलि करत हरत जन मन सुखइ देया ॥ १ ॥ सजल अमल कमल चारु सरिस बदन छबि अपार राजित रद शीभा पर अधर अरुन छैया ॥ २ ॥ शरद चन्द मन्द हास फन्द उदधि घटज राशि बोलत बर बैन ऐन साधु उर बसैया ॥ ३ ॥ माता सुधि बिसरि गई निरखत दृग नाहि टरी सुख अगार अटके मन चित्त सम रहैया ॥ ४ ॥ करत केलि प्रभु अपार मुनि जन मन बन बिहार धरणि भार हरण शरण दीन दुख हरैया ॥ ५ ॥ शंकर अज देव नाथ आवत नित अमर साथ गावत प्रभु गाथ हाथ जोर पैर पैया ॥ ६ ॥ ब्रज जन भये अति अशोक जैसे रवि निरखि कोक कमठ अंड सरिस नन्द लाल उर सुहैया ॥ ७ ॥ विश्व रूप मन सुचारु राजित ब्रज बर बि-हार बिहरो निशि बार काम कन्स को नसैया ॥ ८ ॥ राग परज ॥ मन रे अब निज रूप निहारो ॥ जेहि देखे जग होत सपन सम भानु निकर उ-जियारो ॥ १ ॥ अगम अबिद्या रजनि नसानी ज्ञान बिचार अपारो ॥ बिग-से सरोज भये मुकुलित अति मुकुद दुसह दुख भारो ॥ २ ॥ चकई बुद्धि मिलत प्रिय पिय सों छुटो है बियोग बिकारो ॥ बिश्व रूप पूरण जग माहीं चार खानि बिस्तारन हारो ॥ ३ ॥ राग परज ॥ गहु मन अजहुं शरण रघु-

बरकी ॥ दीन बंधु प्रभु जगहित कारक जीवन धन अति निशि दिन हरकी ॥ १ ॥ ढार पाई जिमि नीर ढरतु है तैसे अंतहु धन जन ढरकी ॥ यह तन की कछु अवधि न दीखत नदी कूल जिमि गति तरुवर की ॥ २ ॥ दामिनि दमक चमक जिमि थिर नहिं अयसो धरणी भोग अमर की ॥ तामहं हेतु करत निशि बासर सुधि नहिं काल कराल कुसरकी ॥ ३ ॥ साधन को अवसर भल पायो दुर्लभ साज लहेउ नर तनकी ॥ बिश्वरूप जगदीश हेतु करु छोड़ु तुरित मन आस अपरकी ॥ ४ ॥ राम परज ॥ कर हत पथिक रघुबरहि निहारी ॥ श्याम बरण छबि अति अतुलाई बिधि निज करतें सवांरी ॥ १ ॥ अति सुकुमारी संग बर नारी शोभा अति रुचिकारी ॥ शरद चन्द्रिका रुचिर चन्द्रके सरिस बदन उजियारी ॥ २ ॥ गोर बरण मन हरण निरखि छबि नैन पलक दियो टारी ॥ सुनि अद्भुत छबि देखन आये ग्राम नगर नर नारी ॥ ३ ॥ कंटक कुसवन धरणि विकट अति कैसे के चरण मृदु धारी ॥ बिश्व रूप सब कहत परसपर धन्य जनक अरु धनि महतारी ॥ ४ ॥ परज ॥ अबलों भुलानों अबना भुलैहों ॥ गुरु प्रसाद तें निशि दिन अनुछन हरि महं प्रीति लगैहों ॥ १ ॥ चाह दाह उर मांह घनेरो बारि बिचार बुतैहों ॥ मोह जाल परिवार अनेकन्ह करि प्रभु सुरति नसैहों ॥ २ ॥ बन बन दाव अनल चहुं दिशि अति तामह पग नहि दैहों ॥ मोर तोर दुख सागर परि हरि चिकुटी भवन बनैहों ॥ ३ ॥ पाप पुन्य करिके हरि गण दोउ ताके बीच न जैहों ॥ अमृत रस करि पान निरंतर लहि सुख मोद बढ़ैहों ॥ ४ ॥ मन अति चपल फिरत जहं तहं नित ताको बेग घटैहों ॥ बिश्व रूप निज रूप अजायब सुरण एक समैहों ॥ ५ ॥ परज ॥ बिनु रघुबीर न जरनि नसाई ॥ यह जग जाल कराल दुखद अति छूट न अवर उपाई ॥ १ ॥ धुव प्रहलाद अंबरीष नारद सनकादिक समुदाई ॥ राम नाम रस अमिय पान करि विहरत शोक बिहाई ॥ २ ॥ बाल्मीक घट संभव मुनिबर जपेउ नाम मन लाई ॥ ज्ञान भवन सुख रूप भयो है चहुं दिशि कीरति छाई ॥ ३ ॥ अजहूं मानु जानु हित अपनो छोंड़ो आस पराई ॥ बिश्वरूप सुख सिंधु दानि हरि केवल महु पुरनाई ॥ ४ ॥ राम खेमटा ॥ रघुबर केहि अपराध बिसारे ॥ जो प्रभु धर्म शील कहं तारत ऐसी बानि तुमारे ॥ तो कत वेद पतित पावन प्रभु ऐसो बिरद उचारे ॥ १ ॥ गीध कवन सम दम ब्रत कीन्हो मनिका का तपधारे ॥ अजामील द्विज बंधु कुमति रत ऐसो अधमन्ह तारे ॥ २ ॥ निर्बल केवल

आपु दयानिधि निरधन धन हित कारे ॥ आरत सहि न सकत जन की प्रभु हर गिरि तें अति भारे ॥ ३ ॥ केवल नाथ भरोस तुमारो तजि जग द्वन्द अगारे ॥ बिश्व रूप प्रभु वेगि दया करि हरो मोह मद मारे ॥ ४ ॥ खेमटा ॥ करम गति कहि नहिं जाई ॥ करम डोरि बंधन अनादि के फंसेउ भुवन समुदाई ॥ १ ॥ तिज पुंज गुण खानि दिवाकर शशि छबि खानि सोहाई ॥ अमित कल्प बीते भरमत नभ अजहुं न नेकु थिराई ॥ २ ॥ यद्यपि शेष सर्बेश सनातन महिमा बल बिपुलाई ॥ धरणी भार धरत शिर पर नित सकत न फन्द छोड़ाई ॥ ३ ॥ नयन कोर जो जग लय कर हर विदित अमित प्रभुताई ॥ भिक्षाटन कपाल कर डोलत भवन मसान बनाई ॥ ४ ॥ जो ब्रह्मन जगदीश तीनि पद कीन्हे भुवन निकाई ॥ बिश्व रूप बलि द्वारे ठाढ़े गहन करम तें बंधाई ॥ ५ ॥ परज ॥ पढ़ि वेद किताबन हारे ॥ बांची बेद मही नहिं सांची चलत कुमगु निशिबारे ॥ १ ॥ फूलेहे फूल फल लागत नाहीं समुझि होत दुख भारे ॥ मन पतंग बसि काम पवन के धावत विषय बिकारे ॥ २ ॥ निरखत भोग जगत के मृग जल चल जल बाढ़ि करारे ॥ बिश्व रूप तेहि नेह लगायो तजि हरि नाम पियारे ॥ ३ ॥ परज ॥ अब की बार कहीं हित हेरी ॥ सुत बित गेह सनेह सजन की जिमि जल गति पुरइनि केरी ॥ १ ॥ करम गहन बन घेर दहन कि पैहो दुसह दारुण दुख फेरी ॥ बिश्व रूप गहु गुरु पद सुख निधि बचिहोन आन उपाय घनेरी ॥ २ ॥ परज ॥ जय जय दीन बंधु रघुराई ॥ ब्रह्मादिक सुरगण मुनि जेते अस्तुति करत पार नहिं पाई ॥ १ ॥ धन जन रूपतें नाहिं मिलत हरि एक भक्ति तें होत सहाई ॥ २ ॥ गज को बिभव कछू नहिं आहि आरत जानि कर प्राण बचाई ॥ ३ ॥ सब गुण युत द्विज भक्ति बिमुख होयतेहि तजि भक्त स्वपचते मिताई ॥ ४ ॥ हे व्यापक अज निर्विकार हरि निज जन हेतु रूप प्रगटाई ॥ बिश्व रूप रघुबर कृपाल प्रभु बेगि हरो मन की कुटिलाई ॥ ५ ॥ राग परज ॥ देखो रे हरि बिनु जीव दुखारे ॥ ॥ परे आट मति खेट भुलाने नाना भेद बिकारे ॥ निज स्वरूप सुखरूप सनातन सत् चित् वेद पुकारे ॥ ताहि न गहत बहत माया बस कामी काम कुधारे ॥ १ ॥ यह तन क्षणिक नित्य करि मानत अहमिति रथ पगु ठारे ॥ नेकु थिरात न भ्रमत दिवस निशि झूठे बिषय पसारे ॥ २ ॥ सुत प्रिय बचन सुनत हरषे उर तिय सो प्रीति अपारे ॥ धन संचत बहु भांति यतन करि अंत होत सब न्यारे ॥ ३ ॥ करुणासिंधु बसत घट भी-

तर अजहूं चेत गवांरे ॥ विश्वरूप अंतहु पछतैहो जब जैहो यम द्वारे ॥ ४ ॥ भैरो ॥ चलत अंगनवां रघुबर घाल ॥ दधि ओदन मुख मेल पठाये चितवत तिरीछे नैन बिशाल ॥ १ ॥ बोलत श्याम मनोहर बानी सुनत सभै जन होत निहाल ॥ २ ॥ लषन भरत संग सोहत शत्रुहन पैजनियां पगु देत हैं ताल ॥ बिश्व रूप पितु मातु मगन भये लूटत रंक धनद जिमि माल ॥ ४ ॥ राग भैरो ॥ पूरि कमाई जग में तासु ॥ श्रवण कथा रस पान करत नित जीह निरंतर नाम प्रगासु ॥ १ ॥ नैननतें हरि रूप निहारे शीस नवावे हृदय हुलासु ॥ करजोरे नित बंदन करई प्रेम प्रीति कबहूं न अघासु ॥ बिश्वरूप सतगुरु बलिहारी राम चरण महं जेहि नित बास ॥ २ भैरो ॥ नाथ अजहु मोहि करहु उबार॥ नाथ मान करु नाथदया करो नाथत हो प्रभु अरन तुम्हार ॥ १ ॥ बनज नयन होवनज हित राजित बदन बनज रिपुसत रुचिकार ॥ २ ॥ लच्मी पति लच्मी सागर प्रभु सब लच्छण गुण केर अगार ॥ ३ ॥ बिश्वरूप प्रभु देखु दया करि केहि अपराध न सुनत पुकार ॥ ४ भैरो ॥ हरि इच्छा को मेटनिहार साहेब एक अहे करतार ॥ १ ॥ जो इच्छा सों करत दयानिधि दीनबंधु प्रभु परम उदार ॥ २ ॥ जो सिरजत पालत सबही को हरत सभै प्रभु कृपा अगार ॥ ३ ॥जिनके जस मति देत कृपानिधि तिनके उर तस बसत बिचार ॥ ४ ॥ सकल कर्म फल दाता रघुबर हय निर्लेप जगत आधार ॥ ५ ॥ भक्त हेतु प्रभु बपुधरि प्रगटत लीला करत सकल सुखसार ॥ ६ ॥ प्रणत पाल प्रणतारतमोचन गावत वेद लहत नहिं पार ॥ बिश्वरूप शरणागत आये पाहि पुकारत तुमरे द्वार ॥ ८ ॥ राग परज ॥ आनन्द रस पियो मनुवां हमारे येहिमें मगन रहो निशिवारे ॥ १ ॥ जो रसपान किये सनकादिक मेटेउ सकल जगत के भारे ॥ बिचरत सदा सकल लोकन में नहिं कछु गहत हैं हर्ष बिकारे ॥ २ ॥ पिय शुकदेव लहेउ सुख सागर मेटेउ हानि लाभ टकसारे ॥ यह रस को महिमा जानतु है शंकर शिवा पिये यकतारे ॥ ३ ॥ काग राज पीयउ मन लाई जीतेउ माया काल कुधारे ॥ जो पीवे सो युग युग जीवे निज मुखतें गावत श्रुति चारे ॥ विश्वरूप यह रस हिय आवे जब रघुबर पद करै अगारे ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ नहिं बनयोग अहे रघुबीर सुनत मवन बन सभै अधीर । १॥ भयेउ अवधपुर महं पछितावा लागेउ कठिन हृदय तिमितीर। नर अरु नारि सकल पुरबासी भूख नींद नहिं कछुक शरीर ॥ २ ॥ बिना खबरि सब जहां तहां डोलत जैसे चलदल पच समीर ॥ हा विधि तोकहं

अस न चाहिये राम बियोग देत दुख पीर ॥ ३ ॥ बिश्वरूप प्रभु बिना बिकल भये यथा फणिक मणि बिनु नहिंथीर ॥ ४ ॥ भैरो ॥ त्रिकुटि भवन वांपियाबसे मेर ॥ बिना सूर शशि अनल अंजोर ॥ १ ॥ नहिं उपजे नहिं बिनसे कबहूं आवत जात न कबनिहु ओर ॥ रात दिवस तहं होत कबहुं नहिं संध्या नहीं होतहै भोर ॥ २ ॥ आनन्द झरत एकरस निशि दिन सुरति करै जिमि चन्द चकोर ॥ निरखि स्वरूप मगनभये मनमहं सहजे मिटै सकल भ्रमघोर ॥ ३ ॥ विश्वरूप धनि सोई सोहागिनि त्यागि सकल पिय चरण निहोर ॥ ४ ॥ भैरो ॥ ज्ञान खड्ग लेइ निशिदिन जागो बीर भावरस मनुआं पागो ॥ १ ॥ समदम फौज करो तैयारी धीर धरो रनते नहिंभागो ॥ काम क्रोध दोउ रिपुकों मारो करिले राज सकल भय त्यागो ॥ २ ॥ सुभग विचार प्रजाके बसावो छोडु सकल चित कलिमल दागो ॥ रामको नाम सुधारस पीयो तेरो बेगि जगत को धागो ॥ ३ ॥ बिश्वरूप जनि गाफिल परिये रामचरण करो दृढ़ अनुरागो ॥ ४ ॥ राग भैरवी ॥ कन्हैया मे से होत न राजीरे ॥ चहुं दिशि ढूंढ़त नहि कहुं पायो मधुबन भाजीरे ॥ १ ॥ चलहु मनावन सखि सब हरिको भूषण साजीरे ॥ विश्वरूप मुरली मोहन की सखि कहुं बाजीरे ॥ २ ॥ रागभैरवी ॥ भोरहिं श्याम न आवतरे ॥ श्याम मिलन कों चितमें चहतिहों इत सखि मोहिन भावतरे ॥ २ ॥ अबतो प्रीति कियो राधे सो कुंजन केलि रचावत रे ॥ बिश्वरूप यशुमति लालन को चितवनि चितहि चुरावतरे ॥ २ ॥ भैरवी ॥ मधुबन श्याम बुलावत रे ॥ लाल अधर मोहन के चहतिहों कित मगु कोंन बतावतरे ॥ १ ॥ बंसीराग रुचिर मोहनको वरवस मनहि नचावतरे ॥ बिश्वरूप बहु यतन करतिहों धीरज नेकु न आवतरे ॥ २ ॥ भैरवी ॥ कन्हैया तेरो छबि दृग लागीरे ॥ कुसुम कमान बान तें वेधे बिरहते पागीरे ॥ १ ॥ जलज नयन छबि अयन हरत मन सब निशि जागीरे ॥ विश्वरूप हरि कुंजन बिहरो यह बर मांगी रे ॥ २ ॥ भैरवी ॥ कन्हैया मोहि दीन्ह बिसारीरे ॥ गये परगेह सनेह बढ़ायो सुधि न हमारीरे ॥ १ ॥ जेहगिरि वन महं केलि कियो है श्रीबनवारी रे ॥ बिश्वरूप सो थल निरखे तें दुख उरभारीरे ॥ २ ॥ भैरवी ॥ भोगहि योग न भावतरे ॥ गंग यमुनको धार दुरायो जलकन ओसपरावतरे ॥ १ ॥ नित नइ नेह करत कुबरी सों रचि रचि योग पठावतरे ॥ बिश्वरूप असमति मोहन को सखि अब कौन छड़ावतरे ॥२॥ भैरवी ॥ सो कहि योग दुरावत रे ॥ इंगल पिंगल सुख मन घर सों छन छन बोध जगावत रे ॥ १ ॥ जड़

गगन विच भवन बनावो जेहि थल काल न आवतरे ॥ बिश्व रूप धुनि होत गगन मों निशि दिन मनहि बसावतरे ॥ २ ॥ भैरवी ॥ जोकहिं श्याम निहारतरे ॥ श्याम हरत मन तुरित ताहि को बरबस जादुहि डारतरे ॥ १ ॥ काह कहौंसखि छबि आनन को बिधि उर शोच पसारतरे ॥ बिश्वरूप भूषण मोहन कों छबि रबि कोटिन्ह धारत रे ॥ ३ ॥ राग भैरवी ॥ गति यांलखि नहिंजाई तेरो हे श्यामा दृग चपलाइ रहत मन आइ मेरी ॥ सजल पयोद सरिस तन राजे अंग अंग कमनीय कांति मनोहर निरखि मनो भव सकुचि सकुचि रहे हीय उपमा में किन कों गाइ ॥ १ ॥ गौ चरावन जात वृन्दाबन ग्वाल बाल संग लीय जैसें मीन बिना जल प्यासे तलफि तलफि तजेजीय तुमने मोहि जादु लाइ ॥ २ ॥ बिश्वरूप मोहन बनमाली जीवन धन ब्रज तीय ॥ बदन कंज मकरंद मधुप मन हरषि हरषि सोइ पीय ॥ अवरना मोहि सोहाइ ॥ ३ ॥ राग भैरवी ॥ उपमा कहि नहि जाइ तेरी हे रामा छबि रुचिराइ सुखद चित छाइ तेरो ॥ लखन सहित बिहरत करुणा निधि नट बर साज करीय ॥ चितवनि मन भावनि अति सोहे पुलकि पुलकि उठेहीय ॥ सरसिज नयन सोहाइ ॥ १ ॥ सघन सोहावन बन बिहरत हरि करशर धनुष धरीय ॥ बनचर जाति निरखि छबि हरिके झुकि झुकि चरण परीय ॥ दृगन तें पलक दुराइ ॥ २ ॥ बिश्वरूप सुखरूप सनातन जनम न कंज अलीय ॥ करि हरि कृपा दरश मोहि दीजे कलि दुख दोष दलीय ॥ अबिचलि तेरो प्रभुताई ॥ ३ ॥ राग भैरवी ॥ सुखमा अति अतुलाइ तेरो हे शंभो ॥ छबि ललचाइ रहत मन जाई तेरो ॥ कुंद कपूर सरिस तन राजे गल माला अहिकीय ॥ कर डमरू धुनि रुचि कर सोहे सुनत सुनत सुख होय ॥ दुख दर्शन तें नसाइ ॥ १ ॥ बाम अंग गिरजा अर्द्धंगी शोभा अति रमणीय ॥ शीसगंग रुचि चन्द मनोहर भालपट ल छबिदीय ॥ भसम सुअंग सोहाइ ॥ २ ॥ बिश्वरूप जगदीश निरंजन जनहित रूप धरीय ॥ बेगि दूबो करुणा गुणसिंधो तारेउ विपुल अघीय ॥ मेरी सुधि क्यों बिसराइ ॥ ३ ॥ राग भैरवी ॥ कन्हैया संगयारी नालै होरी ॥ याबंशी मेरो सरबस खोयो जादू कियो गिरधारी ॥ १ ॥ तबसों सुधिबुधि सब हरि लीन्हों नहि सोहात घर बारी ॥ २ ॥ बिश्व रूप ब्रज लाल सांवरो हंसि हरि मोहि निहारी ॥ ३ ॥ राग भैरवी ॥ कउल दियो टारी नाये हेरे ॥ अंत समैया हरि बिछुरायो पाछिल नेह बिसारी ॥ १ ॥ अब तो कन्हैया सुखसों सोयो राज काज भयो भारी ॥ २ ॥ बिश्व रूप बिधि सब सुख खोयो पर बस

भयो बनवारी ॥ ३ ॥ राग ठुमरी ॥ हमारे मन साथे लई चितवनि ऐसी छबियां ॥ अमल अभंग बाल रबिकेछबि कुंडल झलक नई ॥ बोल अमोल कलोल केलिवर मनसिज कोटिजई॥ १ ॥ अचल प्रताप राज सब दिशिभये कीरति तेज मई ॥ दशरथ लाल कृपाल नृपति भये सब दुख दूरिगई ॥२॥ कहत निहारि निहारि नारि सब विधि सुख अवधि दई ॥ बिश्वरूप सुख धाम मिलो हरि जीवन सुफल भई ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ हमारे ब्रज बाते नई सुनि आईं सब सखियां ॥ नवल किशोर श्याम छबि छायो पटरत बिधि न दई ॥ कमल कुरंग मनोज लजित भये कोउ सनमुख न भई ॥ १ ॥ रैनि ब्याज रबिजाय छपित भये शशि तन छीनभई ॥ बाल तमाल सघन बनमह गये तजि घन सघन रई ॥ २॥ कलमद त्यागि मौन भये कोकिल चल निधि खार मई ॥ बिश्वरूप यदुलालन के सम कविगण बचनगई ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ निहारो मन आपमई छांड़ि कपट मतियां ॥ अपने आपु आपुमह मिलि गये पूरण रूप भई ॥ सब जल सिंधु सिंधु सब जल भये निज पर भेद मई ॥ १ ॥ जग मग ज्योति अगम उर छायो छन छन पुलक नई ॥ बिश्वरूप पूरण सुखपायो गुरु पद अलख दई ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ बिचारे बिनु सांचेभई देखो खोलि अब अंखियां ॥ बांक किशोर चापशर करलिये विहरन बिपिन गई ॥ करि मृगया मन मोद बढ़ायो गर्भ न जन्म लई ॥ १ ॥ धाइ बचन बाल सुनि विहरे मन अनुगम दई ॥ बिश्वरूप जग अंध बंध बस मनकियो विषय मई ॥ २ ॥ ४ ॥ ठुमरी ॥ का करव सांवर बहुसंगिया ॥ ना सुने कहल हमारि सखि रे ॥ मंद हसनि मन रोच नीरे शोभा अति रुचिकारि ॥ कर मुरली मुखमें दियेरे अपना बसकरिडारि ॥ १ ॥ चन्दकिरनि मन मोहनीरे सोहे उर उजियारि ॥ बिश्वरूप जलना भरव हो यमुना हरि रखवारि ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ ना सूझत रघुवर बिनु अंखियां ॥ को सहे बिरह कटारि सखि रे ॥ श्याम बरण मन मोहनी रे जैसे घन युतवारि ॥ मुख की शोभा को कहै रे मदनामित छबिधारि ॥ १ ॥ ब्याज बिपिन सुख मोचनी रे कीन्हो बिधि बन चारि ॥ बिश्वरूप अब ना जियब हो बिछुरे प्राण हमारि ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ ना डरत छन छन मन रंगिया ॥ का कहो बहुत पुकारि हरिहो ॥ काम कपट पटमोहनीरे ओढ़े रंग सवारि ॥ विषय भवन बसि बीहरे हो सखियां संग सुधारि ॥ १ ॥ प्रीति चरण भयमोचनी हो दीजे उर रखवारि ॥ बिश्वरूप प्रभु ना बचब हो शरण भरोस बिसारि ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ लखत रहहिं मुख कर छबि अंखियां ॥ नाटरे सुरति हमारी हर

हो ॥ चन्द्र गरल शुभ सोहनी रे गंग जटा दुखहारि ॥ अहि भूषण डमरू लियो हे गिरिजा वाम पियारि ॥ १ ॥ कुन्द बरण मन मोहनी रे कोटिन रबि उजियारि ॥ बिश्वरूप उरमे बसो अवशोक हरण चिपुरारि ॥ २ ॥ ४ ॥ ठुमरी ॥ भजो हरिहो काम कोटारी ॥ हृदय नयन उघारि देखो जगत दुख कारी ॥ ताहि मांह सनेह लायो विषय रुचि भारी ॥ १ ॥ शुभ अशुभ जंजीर तोरो बैठु घरहारी ॥ अलखरूप अनूप निरखो मोहमदजारी ॥ २ ॥ बिश्वरूप बिचार देखो बिदित दशचारी । बिना राम दिनेश तेरो उर न उजियारी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ लखो छबि हो रामको न्यारी । दृग बिशाल कृपाल प्रभु के कंज रुचि धारी ॥ १ ॥ श्रवण कुंडल चपल राजे कुटिल कच कारी । तिलक भाल भूपाल मणि के भानु उजियारी ॥ २ ॥ रुचिर बसन अमोल सोहे वाम सियप्यारी ॥ बिश्वरूप सरूप हरिको ध्यान भयहारी ॥ ३॥ ठुमरी ॥ चलो सखिहो श्यामके वारी ॥ शीत मन्द सुगन्ध सोहे छायोपवन गति न्यारो ॥ कुंज कुंज अनूप सोहे कुसुम रुचि कारी ॥ १ ॥ देखि छबि सुर राज मोहे चकित चितभारी ॥ करत केलि मनोज मदके मथन बनवारी ॥ २ ॥ रुचिर बोल अमोल सखिरे बिबस करिडारी ॥ बिश्वरूप हमेस मनको हरत गिरधारी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ लखो गतिहो ज्ञानको न्यारो । सुरति देत बिसारि तनके दशा मतवारी ॥ निज सरूप असंग बिहरे जलज जिमि बारी ॥ १ ॥ ज्ञानके हरि झपटि छन में लपटि नख डारी ॥ लोभ मोह मनोजगज को अमित दल डारी ॥ २ ॥ बिषम भेद कुभाव जगको कुमति मति टारी ॥ बिश्वरूप अंदेश छूटो अभय बनचारी ॥ ४ ॥ ठुमरी ॥ यशोमति वारो देखो रावरो कन्हैया मटुकि पटकि पट छीन लियो हे ॥ दैतहे मारी कहा माने न हमारी कछु बरजेवनेको परत हो पैयां ॥ १ ॥ आलिके बचन सुनि यशोमति मन गुनि बिहंसि मवने कछु उतर न दैया ॥ २ ॥ बिश्वरूप लखि भइहे मगन सखि ॥ भरोहे पुलक जल नयनन छैया ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ हरो मन मेरो प्यारो सांवरो कन्हैया लटकि भवर मुख कंज दियोहे ॥ दृगसो निहारि हंसिमोहि बनवारी सखि ॥ तबसों ठगोरीघर न सोहैया ॥ १ ॥ शशिको निहारी जैसे तरु को पुलक भारी रविसों जलज पुलकावलि छैया ॥ २ ॥ बिश्व रूप ऐसो छबि पट तर कैसो ॥ बिधि मति छीन लियो ब्रज के बसैया ॥ ३ ॥ २ ॥ राग टोड़ी ॥ अंग छबि छाये घन नन्द के किशोर हे ॥ मधु पुर नर नारी नयन पलक टारी हृदय निहारि बोले कैसे चित चोर है ॥ १ ॥ कोटि कोटि सुर सोहे निरखि मनोज

मोहे ब्रज को सुभाग ऐसो बिधि सो निहार है ॥ कमल नयन श्याम संग सोहे बलराम आये धनुमख जहां नृप को बटोर है ॥ २ ॥ मल्ल को पछारि मारे खल नृप नास डारे खंड खंड धनु तोरे जैसे तृन कोर है ॥ कन्स को झपटि मारे धरणि को भार टारे बिश्व रूप छायो यस ऐसो शिर मोर है ॥ ३ ॥ राग टोड़ी ॥ संग दोउ आये बन मुनि के किशोर है ॥ एक संग सोहे नारी मुख छबि अति भारी मोहनी मनोज नारी रबि सो अंजोर है ॥ १ ॥ सुनि के पुलक छाये मिलने को मुनि आये नयन सनेह जैसे चन्द से चकोर है ॥ चित्र कूट के निवासी मुनिवर तपरासी भयो है मगन देखि जैसे घन मोर है ॥ २ ॥ पुर जो पथिक ग्राम लखि प्रभु छबि धाम करत अंदेसो कैसो जनक कठोर है ॥ बिश्व रूप सुरनाथ कहें पगु धरि माथ रघुबीर बेगि हरो भार चहुं ओर है ॥ ३ ॥ २ ॥ राग बहार ॥ श्याम हमारा भंवरी ॥ सुख दाइरी बसन्त सुहावनो ॥ फुलवा फूले बन भवरा लेभैले ठौर ठौर गुन गावरी ॥ १ ॥ रुचि सह कार बहारि मे रिलो कुसुमा कर छबि छावरी ॥ २ ॥ बिश्व रूप ब्रज बंसिया बजायो सुनत भई हम बावरी ॥ ३ ॥ बहार ॥ राम पियारा आवरी सुख दाइरी बसन्त पंचमी ॥ बगिया फूले घन बनवां फूलेलो मधुप मधुर धुनि छावरी ॥ १ ॥ मोतिया घने घन घनवां लुटाये अवध प्रेम बसवावरी ॥ २ ॥ बिश्व रूप दशरथ के छबीलो हंसि हेरै करि भावरी ॥ ३ ॥ २ ॥ राग होरी ॥ आजु की बारी मानि क्यों न लेरे कान्हा ॥ बिनति करों मैं पायन करि के जनि करु मोति रारी ॥ यदुनन्दन बरजो लरिकन्ह को राखहु लाज हमारी ॥ १ ॥ जिन डारो रंग मोहन मो पर भिजजैहै रंग सारी ॥ हमतो जैहैं अपने भवन को छोडु डगर गिरिधारी ॥ २ ॥ सुनत सखी कर बचन मनोहर तिरछे नैन निहारी ॥ बिश्व रूप बरजो नहि मानै श्याम दियो रंग डारी ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥ हाल को सारी फारि काहे दीन्ही कान्हा ॥ फागुन मस्त बाल संग परिके बाउर बोलतु हारी ॥ लाज न सहिहो तोरे संग बसि के होइहै हांस हमारी ॥ १ ॥ तजदे कुबाद बाद अब मोहन छोडु घाटर वारी ॥ हमतो यमुन जल जैहैं भरन को जिन रोको गिरधारी ॥ २ ॥ नन्द नगर कोइ नृप ना बसेरे जो करो नीति बिचारी ॥ बिश्व रूप हरि हेरि नयन सों हंसि दीन्हों बनवारी ॥ ३ ॥ होरी ताल जलद ॥ कान्हा खोरि मैं करत रंग बोरिरे ॥ जात रही हम कुंज भवन महं जहां रहत पिय मोरिरे ॥ बीचहि महं अस हाल किये सखि यदुनन्दन बर जोरिरे ॥ १ ॥ मुख में दियो है गुलाल लगाइ

रतन हार लियो छोरिरे ॥ काह कहों मैं नन्द नगर महं होत धूम चहुं ओरिरे ॥ २ ॥ अति उत पात करत ब्रज बालक कर गहि देत मरोरिरे ॥ बिश्व रूप मोहन मतवारे रंग मचावे ब्रज होरि रे ॥ ३ ॥ होरी ताल जलद ॥ कान्हा चोरि सो हरत पठ मोरि रे ॥ जाय सखी हरि यमुन पुलिन में नागर बाल बटोरिरे ॥ सब ग्वालिनि पट छीनि लियो हरि गर भूषण दियो तोरिरे ॥ १ ॥ चल में कियो है कलोल कन्हाई संग सोहत बल जोरिरे ॥ काह कहों मैं नट नागर सखि धूम रचो हरि होरिरे ॥ २ ॥ कबहुं कदम चढ़ि जात कन्हाई जल बिच परत झकोरिरे ॥ बिश्व रूप सखि यशुमति बारे हंसि हंसि हाथ मरोरिरे ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥ वृन्दाबन पावन श्याम लोभाये ॥ चहुं दिशि गुंजन पुंज भवंर को सुख सागर धुनि मोद बढ़ाये ॥ १ ॥ कर पिचुकारी अबिर कुम कुमा भरि कानन रंग नभ चहुं छाये ॥ बिश्व रूप के प्रभु हंसि हेरत बसत बाग होरि कान्ह मचाये ॥ २ ॥ होरी काफी ॥ वृन्दाबन लालन फागु मचाये ॥ चलो सखि देखन नन्द कुवंर को छबि सागर शत काम लजाये ॥ १ ॥ उड़त अरगजा गुलाल कुम कुमा मन भावन सुख अमित सोहाये ॥ बिश्वरूप के प्रभु मन मोहन चहत साथ मोहि नाथ बोलाये ॥ २ ॥ होरी जंगला ॥ काहे को नेह लगाइ रे माई नन्द के बाला ॥ नेह लगाई मोहनी डारे कान्ह कान्ह चित छाई ॥ १ ॥ नेह बढ़ाई सांवरो मोहि बिश्व रूप बिसराई ॥ २ ॥ होरी जंगला ॥ काहे कों प्रेम बढ़ाई रे माई नन्द के बाला ॥ प्रेम बढ़ाई द्वारिका बैठे श्याम बाम अरुझाई ॥ १ ॥ घर न सोहाई बावरी कीन्हो बिश्व रूप सुखदाई ॥ २ ॥ होरी ॥ लाल कुचाल न धारो ॥ अब बोलो न निलज देहों गारी फोरि देहो घट भारो ॥ नन्द वारोन नजरि लेहों तोसे लूटि लेहों धन प्यारो ॥ १ ॥ रंग बोरो न बिगरि जैहे सारी छूटि जैहे रंग सारो ॥ बिश्वरूप प्रभु पैयां गहत हों चंचल दृगन निहारो ॥ २ ॥ होरी ॥ लाल कुचाल न प्यारो ॥ संग जोरो न बिछुरि जैहो मोसे छोड़ि देहो मतवारो ॥ रंग डारो न नजरिला बो मोसे खोई दे हो पटसारी ॥ १ हंसि बोलो न बिगरि जैहे माधो मोहि देहो दुख भारो ॥ बिश्वरूप प्रभु अरज करत हों मोहन हंसि न निहारो ॥ २ ॥ होरीधी माता ॥ होरि खेले रि मोहन धायधाय ॥ खेलत रंगसंग ग्वालन ले ब्रजबासिन सो जाय जाय ॥ १ ॥ डारे अबीर तीर यमुना के पिचुकारिन रंग लाय लाय ॥ छीनत बिश्वरूप भाजन को दधि ग्वालिनि के खाय खाय ॥ २ ॥ होरीधीमाती ॥ प्यारि अबेरि मोहन पांय पांय ॥ हेरत श्याम

बाम नयननिकों बनमालन को लाय लाय ॥ १ डारत रंगसंग सखियन्ह के घन बुन्दन सों छाय छाय ॥ हेरत बिश्वरूप लालन को सखि रागन को गाय गाय ॥२॥ होरी ताल जलद ॥ कान्हा तोरि भारि नजरिया कवन बिधि टारों ॥ तोरि नजरिया अंग में लगोरि मोरिहाल निहारो ॥ १ ॥ नन्द किन-गरिया रंग से भरोरि मेरी काह पियारो ॥ बिश्वरूप प्रभु संग में वसोरी चेरीश्याम तुम्हारो ॥ २ ॥ होरी ताल जलद ॥ कान्हातोसे हारी न गरिया कठिन नन्द वारो ॥ तजब नगरिया अबनाबसो रि घेरी राह हमारो ॥ १॥ चटक चुन्दरिया रंग सो भिजोई मेरी साज बिगारो ॥ बिश्वरूप प्रभु हंसि के मिलोरी दे दृग श्याम निहारो ॥२॥ होरी जंगला ॥आजु नारंग लालरे मैं तो छांडोंगि अबिर गुलाल सैंयां ॥ पिय तोरे बैन सोहावन लागेचाहे चित निशबार ॥ जारो काम मिलि होरी खेलो राखो नाथ करार ॥१॥अपनो भवन सोहावन लागे ज्योतिन्ह की उजियार ॥ बिश्वरूप हरि होरिमचायो छूटी लाज हमार ॥२॥ होरी जंगला॥ छाड़िदे जंजाल रे जोपेचाहो रि लालगुलाल सैंयां ॥ आवो भवन पिया फागुन आयो होरीके दिन चार ॥ डारो रंग संग होरिखेलो लागी आस हमार ॥१॥ केस सवांरि सिंगार बनायोलाखों की गल हार ॥ बिश्वरूप प्रभु मिलिरंग खेली लागे फागु बहार ॥२॥ राग होरी जंग-ला ॥ नाहकरे मोहि रंग से भिजोई। आवन सुनिके श्याम डगरिया हो छाड़ि मिलेहिय गाहकरे ॥१॥ आजु चले हो श्याम नजरिया हो देहो नयनाजिय डांहकरे ॥२॥ विश्वरूपप्रभु न जेहों संगियातू ग्वालिनिचित चाहकरे ॥ ३ ॥ राग होरी जंगला ॥ सांवन रे मोरिअंखियां लागोई ॥ मोहन चितवो हंसि के नजरिया हो कियो जियराके बावलरे ॥१॥ बैरिन घरमें मोरिननदिया हो करि देहे जगमें रावलरे ॥२॥ बिश्वरूप तेरो दृगवर छबिया हो हम सरबस धन पावलरे ॥३॥ राग होरी जंगला ॥ होरिखेलत रंगिली श्याम संग छबि सद-न सोहावन बदनरंग ॥ मोहित सकल निरखि ब्रजबासी सुनत राग मोहनि उमंग ॥१॥ खेलत रंग रुचिर कुंकुम सो रोरी भालरमनी सुअंग ॥ २ ॥ गावत श्याम ललित गत छाये बजत बीन मुरलीमृदंग ॥ ३ ॥ बिश्वरूप सुख घन अबिनाशी तरनि कोटि दुति छबिअनंग ॥ ४ ॥ होरीजंगला ॥ होरि खेलत रंगीली राम संग ॥ रचि सुभग सिंगार बिहार रंग ॥ १ । डारतरंग लषन पिचुकारी सजत रंग जलनिधि तरंग ॥ २ ॥ बालक वृन्द अवध नर नारी खेलत संग जिमि रति अनंग ॥ ३ ॥ गावत रागसकल मनहारी बाजत डफ ढोलक मृदंग ॥ बिश्वरूप त्रिभुवन पति प्यारी सजलमेघ दामिनि सुअंग ॥

४ ॥ होरी काफी ॥ मोहि भावे संवलिया कि चालरी कैसि सोहे छबि तोरी भाल ॥ बांके भौंह नयन रतनारे पंच रंग सोहे बन मालरी ॥ १ ॥ भरि भरि रंग कनक पिचुकाले झुकि डाले नन्द लालरी ॥ अंबर लालगुलाल बदन भरे संग लीन्हे ब्रज बालरी ॥ ३ ॥ बिश्वरूप मोहन बिनुदेखें जलबिनु मीन कि हालरी ॥ ४ ॥ होरी काफी ॥ मोहिलागी संवलियाकी चालरी ॥ अन न जियों मैं नन्दलाल ॥ भूषन भार भवन नहिभावे नींद नयन नहि आवरी ॥ १ ॥ मोहन मधुपुर जाय लोभाने शोच अधिक उर छावरी ॥ २॥ फागुन राग रंग नहि भावे शोक बिरह उर दावरी ॥३ ॥ बिश्वरूप मोहन नहि माने नाहक नेह लगावरी ॥ ४ ॥ होरी तालजलद ॥ हम नही खेलब तोसे होरि पुरजन कसंग ब्रज खोरी ॥ बरजोरि कहत गहत कर यदुवर बे सर मचले मगु छोरी ॥ पांय परो श्याम तोरिसंग न खेलोंगी होरि चुन्दरि बिगरि गइमोरी ॥ १ ॥ मुखमोरि हंसत बसतलरिकन्ह संग बेदरद खेलेरंग होरी ॥ छांड़ो ब्रज बिश्वरूप कैसे के बसोंगी माइ मुंदरि छिनत बरजोरी॥ २ ॥ होरी तालजलद ॥ तुम दई बिरह मोके होरि सबछिन कि हाल नइतोरि ॥ संग जोरि करत हरत सब करमन वे चलनचले चहुं ओरि ॥ भावे करो सोइ सोई मान न करो रिहोई गुजरि मलतमुख रोरि ॥ १ ॥ दधि मोरि हरत उरत नहि नट षर वे कहल सुने नहि मोरि ॥ छाड़े बनै और संग बिश्वरूप होरिरंग कुवंर करत बरजोरि ॥ २ ॥ होरी ॥ छयल गहो करमोरी हो होरी ॥ मैंजो सुनी मोहन गये बनको लरिकन्ह संग लियोरी ॥ चपलन चारि करि नेह लगायो छबि छायो सो हियोरी ॥ एरिये कंज नयन मोहि मगुमें मिलोरि मैं लखि के भई भोरी होहोरी ॥ १ ॥ कुंडलझलक अधर रतनारे केशर तिल कियोरी ॥ ॥ अपनो हार मोहि पहिरयो चित भायो सो दियोरी ॥ एरिये नन्द छ यल मोहि मन मैं बसोरि मैं इनके संग जोरी हो होरी ॥ २ ॥ कर पिचुकारी कंचन केरी छवि अपनो लवनोरी ॥ बिश्व रूप मन सों छबि भायो पायो सो जियोरी ॥ एरिये मन्द हसनि मोहि उर में लगोरी मैं घर कोदई छोरी हो होरी ॥ ३ ॥ होरी जंगला ॥ होरी खेलत श्रीअवधेश ॥ देवन्ह संग लिये ॥ चतुरानन लावत मुखरोरी डारे गुलाल गणेशरे ॥ देवन्ह सं० ॥ १ ॥ गिरिजा नाथ लिये पिचुकारी ॥ झोरि अबीर सुरेश ॥ देव० ॥२॥ गावत नाचत किन्नर गण सब छिरकत रंग जलेशरे ॥ दे० ॥ ३ ॥ बिश्व रूप प्रभु जनक किशोरी रघुबर शरण हमेश रे ॥ दे० ॥ ४ ॥ होरी काफी ॥ घर कैसे कजैहों बीच खड़े अवधेशरे ॥ नयन शयन करि भेजत लरिकन्ह घेरि लेत चहुं देशरे ॥ १ ॥

जिमि दामिनि घन ललित बिराजे कोटि काम रुचिबेशरे ॥ २ ॥ बिश्वरूप लखि जलज बदन छबि मोद सिंधु परबेशरे ॥ ३ ॥ होरी जंगला ॥ यमुना कैसे जैहों झुकि डारत हरि रंगरे ॥ फोरत गागरि भूषण तोरत राखिलेत निज संगरे ॥ १ ॥ हंसि हंसिरारि मचावत मोहन गारी देत बड़बंगरे ॥ २ ॥ ग्वाल सखा सबचौहट ठाढ़े बिश्वरूप भरेरंगरे ॥ ३ ॥ होरीजंगला ॥ होरी कैसे मचैहों राग द्वेष दोउ संगरे ॥ फागु साज सब छीनलियो है फौज घनेरो जंगरे ॥ १ ॥ किये पैसार नगर महं बलते ममता मोह अनंगरे ॥ २ ॥ सब कह भयो है अगम दुख सागर नेक नहोत उमंगरे ॥ ३ ॥ बिश्व रूप यह अवसर नीके नहिं मन होत उमंगरे ॥ ४ ॥ होरी काफी ॥ सोहतआजु नई श्यामा श्याम को जोरि ॥ कुंज भवन में माधो आये राधे संग लई ॥ करत केलि भरे प्रेम रंग दोउ रस बस मगन भई ॥ १ ॥ गावत ग्वालउमंग छाव उर बाजत बीन रई ॥ बिश्वरूप ब्रज श्याम सिधारे गोपन्ह मोद दई ॥ २ ॥ होरी काफी ॥ होरी कुंजन आजु भई श्यामा श्यामसो ॥ बाल यूथसंगमोहन लीन्हो करिकरि साज नई ॥ ग्वालिनियूथ सिंगार साजिके राधे साथ लई ॥ १ ॥ नाचत श्याम नचावति राधे हंसिहंसि तालदई ॥ बिश्वरूपछबि हेरत हरिके सबसखिश्याम भई ॥ २ ॥ होरी काफी ॥ खेलतलछमन रामफागरी ॥ आए सुरेश सहितसुरमुनिवर छबिनिरखतमानोअमिय पागरी ॥ १ ॥ छायो उमंग अवध पुरजन कह होतसरस धुनिसुभग रागरी ॥ २ ॥ सरयू गंभीर तीर छबि घन अति रंग रुचिर भानो बहन लागरी ॥ बिश्वरूप छबि निरखत पुरजनरंक धनद जिमि अमित भागरी ॥ ३ ॥ होरीकाफी ॥ तूमेरे श्याम लियोरी ॥ कुंजन फागखेलत सखिहरि सों देखत करक हियोरी ॥ १ ॥ सब को भाग अधर मोहन के छीनि अकेलि पियोरी ॥ २ ॥ चपल अमल दृग टोनालाई निज बस प्रभुहि कियोरी ॥ मिलति राधिका हंसि मोहन सो दृग मुखचन्द्र दियोरी ॥ २ ॥ बिश्वरूप भइ मगन बारि जिमि तलफत मीन जियोरी ॥ ३ ॥ होरी ठुमरी ॥ नृपति सुतन जर लगायो मेरि ओर ॥ सकुचानी जानी हरिभेटे होरि खेलेबर जोर ॥ १ ॥ बिश्वरूप रघुवर रंग डारत भई चूंदर सर वोर ॥ २ ॥ भैरो ॥ होरी खेलत जनक नन्दनी रघुबर ओर निहारी ॥ केसर अबिर गुलाल उड़ावती छिरकें कनक पिचुकारी ॥ १ ॥ देव बधू सबनाचतगावति सुरगतिताल संवारी ॥ २ ॥ होत उमंग रंग खोरिन्ह मह रुचि वहे बिबिध बयारी ॥ बिश्वरूप भयो फागु सुफल अब तन मन प्रभु पद वारी ॥ ३ ॥ रागभैरो ॥ नन्दकुवंर बलराम श्याम

दोउ खेलत ब्रजमे होरी॥ अपनो अपनो यूथ बांधि केसखि सब खेलरचोरी ॥ कोउ गावत कोउ राग सराहति कोउ नाचति चित तोरी ॥ १ ॥ कोउ मोहन कहं पान खवावति कोउ चूमति मुख मोरी ॥ कोउ बसन भेवति पिचुकारिन्ह चहुं दिशि रंग चुवोरी ॥ २ ॥ कोउ कहै हरि जाने न पावैं घेरि लेहु चहुं खोरी ॥ बिश्वरूप मोहन छबि सुन्दर राधे नयन लगोरी ॥ ३ ॥ राग भैरो ॥ काशी पुरि गिरिराज किशोरी सहित खेलत हरि होरी ॥ बिघन हरण गण पति गुण सागर रुचि कर साज कियोरी ॥ डंफ बजावत नाचत गावत फाग पति ताल लियोरी ॥ १ ॥ करि शृंगार अमर तिय निरखत हर मुख नयन लगोरी ॥ गावत रुचिर सुनत सुख दायक सब उर उमग बढ़ोरी ॥ २॥ ढोलक बीन बजावत तुंबुर बरुण रंग छिर कोरी ॥ अबिर गुलाल उड़ावत धन पति सुरपति हरष भरोरी ॥ ३ ॥ चतुरानन बोलत धुनि जय जय हरि लावत मुख रोरी ॥ बिश्वरूप बिश्वेश नगर की उपमा कासों करोंरी ॥ ४ ॥ होरी ॥ सब जाडरे आजु सोई सजि आभरण छायो मन में बाठ सुनि सुनि के धावत पगु डारि झुंकि झुंकि ॥ १ ॥ जोइ आवे तेहि संगहि जोरे यूथिया बटोरे बाल नारि जत जावे मुकि मुकि ॥ १ ॥ आये तुरंत जनकचा कंत के देखि रही दृग डारी रुकि रुकि ॥ राम सिया अस खेल रचो है बाट न सूझै बाजि रही धुधुकारी धुकि धुकि ॥ छाये उमंग सबन के अंग में डारि देत पिचुकारि ढुकि ढुकि ॥ ग्वाल बाल सब संग सखा लिये बिश्वरूप गारी गावै लुकि लुकि ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥ तन में ब्रज आई बनोरी इन्द्रिय गण सब सखिय बनो हेसम भूषण पहिरोरी ॥ रुचिर बिचार पहिरि अंबर शुचि जग मग ज्योति जगोरि काम मद सकल भगोरी ॥ १ ॥ बिमल बिराग बनो बिन्द्राबन यमुना सुरति बढ़ोरी ॥ ज्ञान सुरंग प्रीति पिचुकारी सब सखि मिलि छिरकोरी खेलो आतम संग होरी ॥ २ ॥ अनहद शब्द उठत निशि बासर बहु बिध धुनि गरजोरी ॥ बिश्वरूप खेलो अस होरी आनन्द रंग मचोरी प्रीति प्रीतम सों करोरोरी ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥ ब्रज में जिन आजु बसोरी ॥ ग्वाल सखा सब संग लियो है ढूंढ़त फिरत मुरारी ॥ जेहि पावत तेहि रंगहीमे बोरत बहियां पकर झक झोरी खोल दृग उतचित ओरी ॥ १ ॥ घेरि लियो हरि सब सखियन मिलि राधा मलत मुख रोरी ॥ बिश्व रूप छबि देखि श्याम की अति आनन्द बढ़ोरी भलो यह खेल मचोरी ॥ २॥ होरी काफी की ॥ ब्रज में हरि फागु मचाई ॥ करि सिंगार राधिका बहु बिधि गज गामिनि रुचि

रा ई ॥ यूथ यूथ सखि संग आपनी लइ यदुपति पहं आई ॥ जलद दामिनिछबि छाई ॥ १ ॥ भूषण बसन बिबिध पहिरे सखि बरण अनेक सोहाई ॥ सकल भुवन की सकल संपदा प्रति प्रति अंग लगाई ॥ धनद लखि बहुत लजाई ॥ २ ॥ उड़त अबीर भरो नभ मांहि चहुं दिशि भइ अरुणाई ॥ मोहन पग छिरकत पिचुकारी रोरी बदन लगाई ॥ श्याम मुख निरखि लोभाई ॥ ३ ॥ बीन सितार ताल डफ बाजे सुनत उमग अधिकाई ॥ बिश्वरूप राधे मोहन दोउ होरी खेलें हरषाई ॥ सिंधु जिमि सरित समाई ॥ ४ ॥ काफी की होरी ॥ हरि होरी अवध में मचाई ॥ महा राज शिरताज भूप मणि दशरथ सुत सुखदाई ॥ राम लषन अरु भरत शत्रुहन जोरी अतुल सोहाई ॥ अमित रति पति छबि छाई ॥ १ ॥ डारत रंग राम पर लछमन रोरी भरत लगाई ॥ रिपु सूदन हाटक पिचुकारी भरि भरि रंग चलाई ॥ पीत पट हरि के भिजाई ॥ २ ॥ मारुत नन्दन बीन बजावत झालर लिये कपिराई ॥ ढोलक रुचिर बजावत अंगद सुनि मन हरत लोभाई ॥ पथिक कह लेत बोलाई ॥ ३ ॥ कपि दल करि सब साज मनोहर गावत अबिर उड़ाई ॥ बिश्वरूप रघुनाथ सखा सब आनन्द दधि न समाई ॥ रंक जिमि सब निधि पाई ॥ ४ ॥ होरी काफी की ॥ नित हे रि खेलो हरषाय प्रभु पहं जाइके ॥ सुरति निरति पिचुकारि करो यह ज्ञान को रंग बनाइ छिरिकु चित लाय के ॥ शम दम तोष अबीर उड़ावो दसहुं दिशा में छाई ॥ काम क्रोध मद लाज छोड़ि के मिलु निज रूपहि धाई ॥ कपट बिसराई के ॥ २ ॥ अहमिति भेद तजो निशि बासर प्रेम प्रीति उरलाई ॥ बिश्वरूप गुरु ज्ञान फागु गहु आवागवन नसाई ॥ भुलो इत आई के ॥ ३ ॥ होरी ॥ सैयां हम-रे बिदेश सिधारे कासे मैं खेलोंगी होरी ॥ सासु ननद दुख देति है दारुण सवति करै बरजोरीरे ॥ दुख को मूल परोस मिलो है कैसे मैं बासबसोरी ॥ ॥ १ ॥ खान पान मोहि कछु न सोहाई भूषन भार लगोरी ॥ चिन्ता अनल दहत निशि बासर नैनन नीर बहोरी ॥ २ ॥ नहिं आए नहिं पाति पठाये केहि बिधि धीर धरोंरी ॥ फागुन मास बिते ऐसे सखि कवन उपाय करोंरी ॥ ३ ॥ गुरु के बचन सोहावन मगु बर तूं धनि बेगि चलोरी ॥ बिश्वरूप सहजहि पिय पैहो मन करहिरिसि टरोरी ॥ ४ ॥ होरी काफी ॥ मैं न खेलों तोसे होरीरे ॥ नाहक मोसे करत बरजोरी ॥ १ ॥ लरिकन साथ हाथ पिचकारी भिजइ चुनरि सबमोरीरे । घाट बाट मंह रोकत टोकत बरबस हाथ मरोरीरे ॥ २ ॥ नन्दबबा जिसों जायकहोंगी ऐसो हालकियेरी ॥ बिश्व-

रूप ब्रज राज निरखि छबि बिहंसि सखी मुख मोरी ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥ रघुबर जनक किशोरीरे यूथ यूथ मिलि खेलत होरी ॥ बढ़ो है उमंग तरंग भरोहै रंग अवधि की खोरीरे ॥ जिमि बरबेष परम रुचिकर धरि रति मन पिज सोहै जोरीरे ॥ १ ॥ सब तिय चढ़ि चढ़ि निरखैं अटारिन मुरतिय सरिस बनोरी ॥ बिश्व रूप महराज राम के भाल तिलक सोहै रोरीरे ॥ २ ॥ होरी काफी ॥ अंखियां लगे बनवारि सखिरे ॥ कल न परे बिनु देखे मुरारिरे ॥ १ ॥ चपल नयन चित वनि अति सोहै हास मनोहर कारीरे ॥ चाल सोहावन ग्वाल बाल संग कोटि काम छबि धारीरे ॥ २ ॥ भूषन पट धारे रुचि कारे मनहुं तड़ित उजियारीरे ॥ बिश्वरूप प्रभु नट नागर संग होरी खेलो रंग डारीरे ॥ ३ ॥ होरीकाफी ॥ अब न कान्ह संग मति कोइ जारे यमुना गागरि मोरि छीन लियेरे ॥ आये अचानक चीर हरत हैं मानैन सखि यशोमति के बारे ॥ बिश्व रूप येरि नन्द छबीलो मनमोहन सब पर रंग डारे ॥ २ ॥ होरी काफी की ॥ यदुवर संग खेलोंगि होरी ॥ कोमल बालु पुलिन यमुना के छबि रमनीय बनोरी ॥ अमित काम सम श्याम मनोहर ले सखि संग चलोरी बेगि जनि बिलम करोरी ॥ १ ॥ कोउ कहै कंचन तें सुन्दर कुसुम सुगन्ध भरोरी चिबिध बयारि बहै रुचिकारी मिलि जुलि फागु रचोरी ॥ बिहंसि बोलैं ऐसी गोरी ॥ २ ॥ ब्रज मोहन पहं सखि सब चलि के साज संबारि गहोरी ॥ विश्वरूप प्रभु होरी खेलो मो सों बिनय करोरी ॥ सखी सब पांय परोंरी ॥ ३ ॥ होरी भैरों ॥ ज्ञान भवन पिय होरी खेलै सखि आपु अनाहद बाजे ॥ निज निज रंग न डारति सखि सब बैठि दशों दरवाजे ॥ १ ॥ तुरिया रूप झलक अति सोहै उजियारी चहुं छाजे ॥ निरखत रस बस भइहै मगन सखि पूरण फागु बिराजे ॥ २ ॥ जगको लाज काज सब तोरो कर्म कुटिल सब भाजे ॥ बिश्वरूप लगो नेह पियासों रंग अजायब साजे ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥ राम लषन सिय होरी खेलैं आजु उमंग चहुं छाजे ॥ धाई सखी निज यूथ बनाई पहुंचि सबै दरवाजे ॥ १ ॥ रतन जड़ित आसन पर बैठे भूषन अमित बिराजे ॥ होरी कीच मची चहुं ओरी बरषत घन जिमि गाजे ॥ २ ॥ सकल भूति मूरति धरि धरिके करों तिलक शिर ताजे ॥ बिश्वरूप सतगुरु परचे बिनु होत न दृग अनुरागे ॥ ३ ॥ होरी भैरों में ॥ मुनि समाज मिलि चित्रकूट महं रघुबर खेलत होरी ॥ सब तीरथ निज निज बिभूति युत रूप अनूप धरोरी ॥ आये जहां रघुबीर जानकी रघुकुल चन्द चकोरी ॥ १ ॥ आये सुरेश शेष बिधि शंकर सहित

नगेश किशोरी ॥ वनचर वृन्द सखा सब आये बिशद समाज भरोरी ॥ २ ॥ सुर बनिता सब बनि बनि आईं बसन तड़ित छबि छोरी ॥ तेहि समाज शोभा को बरने शरद मति सकुचे री ॥ ३ ॥ केसरि रंग अबीर उड़ावति ठेलक बीन बजोरी ॥ विश्वरूप जग भूप राम छबि जिमि रबि उदय भयोरी ॥ ४ ॥ होरी ॥ सोई फागु मन भावे ललारे होरि खेले पै रंग न लावै ॥ १ ॥ आवति सखि सब साज बनाइ निज निज भाव दिखावे ॥ ता महं नेकु नजर नहिं लावै तासंग खेल मचावै ललारे ॥ १ ॥ अंबर ओढ़ि दिगम्बर होवै मुख रोरी न लगावै ॥ बिश्वरूप अस फागु लागु जेहि युग युग अमर कहावे ललारे ॥ ३ ॥ होरी ॥ होरी खेलो पिय संग आपने फागुन समय भलोरी ॥ प्रति चुंदरिआ चटक रंगनि कीनिशि बासर पहिरोरी ॥ इन्द्रिय समन सिंगार बनावो जग मग ज्योति जगोरी ॥ १ ॥ बिमल बिवेक बिराग सोहावन सिंदुर भाल करोरी ॥ सुमति सखिनको साथ मिलावो कुमति सवति को तजोरी ॥ २ ॥ है पर पुरुष मोह परि पंथी जनि इन कहं निरखोरी ॥ ज्ञान अमल पिचुकारी बनो है पूरण रंग भरोरी ॥ ३ ॥ हंसि छिरकति आतम सुख घन पर भेद भाव बिसरोरी ॥ बिश्वरूप जग शोधनि नीकी जो अस फागु रचोरी ॥ ४ ॥ होरी काफी ॥ ऐसो भैरव खेले होरी ॥ करिसमाज सुर राज देव गण निज निज यूथ बटोरी ॥ आये सबै महराज सभा में चहुं दिशि भीर भयोरी ॥ सकल मुनि वृन्द भरोरी ॥ १ ॥ आये विष्णु चतुर मुख शंकर ज्योति सभा पसरोरी ॥ जिमि राकेश दिनेश अमित शत युगपत उदय कियोरी ॥ रुचिर अति ज्योति लगोरी ॥ २ ॥ भूत बेताल साज करि सुन्दर करि निज यूथ खड़ोरी ॥ छिरकत रंग अबीर उड़ावत बाजा अमित बजोरी सुनत सुख सिंधु बढ़ोरी ॥ ३ ॥ डारत रंग परस्पर सब कोइ आनन्द रंग मचोरी ॥ बिश्वरूप भैरव दरबारहि भुवन भूति निवसोरी ॥ अचल नहिं नेकु चलोरी ॥ ४ ॥ होरी ॥ देखो सखी ब्रज धूम मचोरी ॥ वारुरनहिं कोई निकसन पावै नन्द लला अस कोट रचोरी ॥ १ रंगन बोरत छोरत पटकों ऐसो हाल करोरी कोउ इत नाहि बचोरी ॥ २ बिश्वरूप ब्रजराज सांवरो ग्वालिनि कर गहि आपुन चोरी ॥ ३ ॥ होरी काफी की ॥ सैयां होरी खेलो मोसों जात है फागु बहार ॥ कान्ह तुम्हेबिन कछु न सोहाई लागत भूषन भार ॥ १ ॥ डारो रंग प्रभु पैयां परतहों बीती जात बहार ॥ २ ॥ बिश्वरूप प्रभु चतुर शिरोमणि राखो लाज हमार ॥ ३ ॥ होरी जंगला ॥ तू मेरे श्याम लियोरी ॥ कुंजन बाजति हरि अध-

रन में देखत कर कहियोरी ॥ १ ॥ सबको भाग अधर मोहनके छीनि अकेलि पियोरी ॥ चपल अमल दृग टोना लाई निज बस प्रभुहि कियोरी ॥ २ ॥ मिलति राधिका हंसि मोहन सों दृग मुख चन्द दियोरी ॥ बिश्वरूप भइ मगन वारि जिमि तलफत मीन जियोरी ॥ ३ ॥ होरी जंगला ॥ सखीरी मन मोहन कों होरी आज खेलै हौं ॥ आज कहूं भागन नहिंपैहैं बांह पकरि बिनमैहौं ॥ १ ॥ डारोंगि रंग अंगपर हरिके मुखमें गुलाल लगैहौं ॥ बिश्वरूप अब रसिक लाल संग कूंजन धूम मचै हौं ॥ २ ॥ होरी जंगला ॥ तू सखि ब त न मानत मोरी मैं हारी कहत बहुतेरी ॥ यमुना तीर रहत बनमाली रार करत हठिहे री ॥ डारत रंग पिचकारिन भरिभरि गारी हंसि हंसिदेरी ॥ १ ॥ पनियां भरन तेहि घाट जाहु जिनि मग वट पार बसेरी ॥ बिश्व रूप ब्रजनाथ सखा संग बर बस लेत है घेरी ॥ २ ॥ होरी काफी ॥ तनमें अस रंग रचोरी ॥ पिचुकारी रुचि कारी सुमति की ज्ञान रंगते भरोरी ॥ झिलि मिलि ऐसो फागु मंचायो चहुं दिशि कीच करोरी अमल पट रंग सजोरी ॥ १ ॥ बायु बिचार बहत रुचिकारी भरम अबीर उड़ोरी ॥ युक्ति साज करि सखि सब आवति समता भाल पुरोरी झलक छावैं चहुंओरी ॥ २ ॥ गुरु गम अगम समाज संगले अनहद ताल परोरी ॥ बिश्वरूप बिसरो सुधि तनको भेद लाजको तोरी उमंग उमड़ै चहुंओरी ॥ ३ ॥ होरी जंगला ॥ घर कैसे क पैहों जान गहों गुरु रंगरे ॥ ताकहं फागुन दूर बसोहै फागु रंग रस भंगरे ॥ १ ॥ होरी बिना जीवन नहिंनीको झूंठ साज दुख संगरे ॥ २ ॥ बिश्वरूप जोई निजरंग बसै फूलफाग उरदंगरे ॥ ३ ॥ होरी जंगला ॥ संगति सो भलो जहां आतम रूप बिचार ॥ कुमतिकुसंग तजो निशि बासर केवल नाम अधार ॥ भरम अबीर उड़ाउ तुरित सब कर्म रंग जनि डार ॥ १ फागुन मास महामद बाढ़ो धनि बनिता परिवार ॥ इनके हेतु भूलो जनि कबहूं अंत महां दुख भार ॥ २ ॥ सम्मत मन को चाह बनोहै सुख दुख मूल अपार ॥ अमल ज्ञान गत भेद बिशद अति प्रवल अनल तेंजार ॥ ३ ॥ केवल ब्रह्म निरंजन पूरण गुणा तीत गोपार ॥ बिश्वरूप सोइ रूपगहो निज तजि सब भेद बिकार ॥ ४ ॥ राग बसंत ॥ श्री गंगेरुचि करतबंतरंग ॥ निरखत बाढ़ै उरमहं उमंग ॥ १ ॥ कलि कोश कलिल हर सलिल धार ॥ मुनिबृन्द मनोरथ पुर करार ॥ सुरधेनु देव तरसम उदार ॥ अघ ओघमहा तरु तर कुठार ॥ २ ॥ सब सिद्धि दानि गुन भवन नीर ॥ सुख मूल दानि पद अजर धीर ॥ सुखद सुरेश सुयोगि धीर ॥ किय बिश्वरूप

तव भवन तीर ॥ ३ ॥ राग बसंत ॥ जय जय हरि वाहनि जगत मात ॥ भय शोक हरणि दुति भानुगात ॥ १ ॥ जय नन्द सुते कुरु मति बिशाल ॥ हरु मोह मान मद काम जाल ॥ अघ मूल हरणि बर दानि दानि ॥ २ ॥ जन इच्छित फल वर अमित खानि ॥ जगदीश्वरि वदन विशेष चंद ॥ वर-हास मोदकर रुचिर मंद ॥ सब सिद्धि सदाकर चोरि जोरि ॥ ३ ॥ पदकंज बसत चपलाइ छोरि ॥ तव चरित भानु जनु मनु सुकोक ॥ दुख शूल हरण करता बिशोक ॥ जगतारणि कारणि सकल लोक ॥ अबबिश्वरूप तवशरण ओक ॥ ४ ॥ राग बसंत ॥ को शंकर सम जग महं उदार ॥ देखिदीन नहिं ढरत बार ॥ १ ॥ मथेउ सुरासुर उदधि जाय ॥ प्रगटेउ दारुण बिषनिकाय ॥ जरत भुवन करै चाहि चाहि ॥ शरण टेरि परे चरण मांहि ॥ १ ॥ अतिदयाल प्रभु अभय दीन्ह ॥ जलकण सम बिषपान कीन्ह ॥ सुखिय भये अति जन समूह ॥ तपत मीन जिमि बारि ब्यूह ॥ २ ॥ साधन हीन मलीन दीन ॥ अघ अवगुण मदमोह पीन ॥ प्रभु ऐसो कलिजन कहं बिचारि ॥ मुक्ति जननि काशी सवारि ॥ ३ ॥ निवसत नितगिरिजा समेत ॥ अगजग मरतहि मुक्ति देत ॥ बिश्वरूप प्रभु बिनय मोर ॥ चरण युगल शशिचित चकोर ॥ ४ ॥ रागबसंत ॥ खेलत बसंत रघुराज राम ॥ संग भरत लषण रिपुसुदन नाम ॥ १ ॥ फुलेउ फूल बहु बिपुल जाति ॥ भांति भांति सोहै अमित पांति ॥ लटपट खटपद करैंगुंजार ॥ सुरभि सोहावन बहै बयार ॥ २ ॥ बालकेलि करैं सहित बालु ॥ सरयू तट शोभा बिशालु ॥ कंचन मय जहां बनेउ घाट ॥ बीचबीच मणिनि कर ठाट ॥ ३ ॥ सुचिरुचि दायक मालपोय ॥ छबि अनुपम बहु रंग जोय ॥ हरषि सबै प्रभु कंठ डारि ॥ मानहु रवि शशि सिमिटि धारि ॥ ४ ॥ सब के उरअति भयो उमंग ॥ जैसे पर्ब शशी उदधी उमंग ॥ बिश्वरूप धनि अवध लोग ॥ योगी अलाभ सुख करत भोग ॥ ५ ॥ रागबसंत ॥ डारत अबीर खे-लत बसन्त श्री अवध राजसुत सीय कन्त ॥ बाजत मृदंग ढोलक सितार अति भीर भई महराज द्वार ॥ सब नृपन कियेबहु रंग साज करि आये जहां है भूपराज ॥ १ ॥ सुरशेषसिद्ध मुनिवर सुरेश छबि देखि चकित भये विधि धनेश ॥ चहुंगान करत किन्नर उमंग लखि बिश्वरूप सकुचे अनंग ॥ २ ॥ रागबसंत ॥ मनचेतो केवल हरि स्वरूप ॥ अजहुं तजहुं भवजालकूप ॥ ममता बश जेहि कहत मोर ॥ सो नहिं ऐहै काम तोर ॥ दारा धन सुत बिषय रंग ॥ हाट पथिक जन सरिस संग ॥ १ ॥ काल उरग सिर बैठु आय ॥ ग्रास करैगो समय पाय ॥ नाम सजीवन रस अगाध ॥ गहत दहत सब

मोह बाध ॥ २ ॥ आदि अंत जग लेशनाहिं ॥ रबि कर जल समबीच आहि ॥ देखत सेा नहिं नयन हीन ॥ मृग सम चाहत प्यास छीन ॥ ३ ॥ अबकी अवसर बनोहै आई ॥ पायो है साधन साज भाई ॥ बिश्वरूप सेाइ धरु अधार ॥ जेहते न चौरासी अगार ॥ ४ ॥ राग बसन्त ॥ करु मेरो मनुवां हरि के आस ॥ जेहतें नशै जग दुसह त्रास ॥ १ ॥ जाके शरण ब्रह्मादि शेश ॥ निशि दिन सेवत रुचि हमेश ॥ लहत परम सुख पुलक छाव ॥ लहै जिमि सुरेश पद रंक पाव ॥ २ ॥ जो छन छन रहे नाम लीन ॥ बिषय हेतु नहिं होत दीन ॥ जिमि अगाध जल माहं मीन ॥ नहिं निदाघ तप होत खीन ॥ ३ ॥ शुक शारद नारद बालमीक ॥ चरण सरोरुह चंचरीक ॥ पिवत मधुर रस स्वादु सार ॥ रहत मगन तजि भेद भार ॥ ४ ॥ बिपुल नृपति तजि सकल राज ॥ जात बिपिन लखि सुख समाज ॥ बिश्वरूप प्रभु रूप ध्याउ ॥ अगम ज्योति घर बास पाउ ॥ ५ ॥ राग बसंत ॥ बोलो निशि वासर गुरु के नाम ॥ सुख सागर गुण बल तेज धाम ॥ १ ॥ हरि रूप ज्योति मय गुरु सरूप ॥ फागु बसंत अनूप भूप ॥ पावन पद रज फूलो है फूल ॥ मन मधुकर मोद अखंड भूल ॥ २ ॥ गन्ध सुहावन भरो है देश ॥ सुख खानि दानि सेवत हमेश ॥ गन बिश्व रूप गुरु चरण आस ॥ रबि कोटि ज्योति तम हरण भास ॥ ३ ॥ राग बसंत ॥ आये बसंत ऋतु पुलक छाव ॥ नित नेह राम पद रज सुभाव ॥ १ ॥ फुलेव फूल बिरहत अलिन्द ॥ तप ज्ञान सिंधु मुनि वृन्द वृन्द ॥ अबभोग रोग दारुण बियोग ॥ मदमानकुमति हर अचल योग ॥ २ ॥ सुख धाम राम पुर छबि अपार ॥ सुख दानि खानि सेाहे सरयु धार ॥ लखि होत चकित चित देव राज ॥ पुर बिश्वरूप नृप मुनि समाज ॥ ३ ॥ राग बसंत ॥ खेलत बसंत शंकर कृपाल ॥ सेाहै छबि अनूप दुति चन्द भाल ॥ १ ॥ शिर श्वेत कुसुम सेाहै गंग धार ॥ कर पूर गोर शेाभा अपार ॥ कर सेाहै डमरू ब्याल माल ॥ भसम अंग सेाहै दृग बिशाल ॥ २ गिरि राज सुता सेाहै बामबाम ॥ भय शेाक हरण गुण तेज धाम ॥ जग बिश्वरूप हर सम को आन ॥ तम रैनि द्वन्द घन तरुण भान ॥ ३ ॥ राग घाटो ॥ सजनी कठिन दुख छायो होइ गेले हरिसें दुरावरे ॥ कुमति सवतिया बसलि परोसवां निशि दिन झगरा लगायो ॥ १ ॥ बहत अमिय रस धार अंगनवां बाहर नाहक धायोरे ॥ कांच गहत ऐसो छोड़ि रतनवां पारस को बिसरायोरे ॥ २ ॥ बिश्वन हेरत मूढ़ नयनवां बिषय न नेह लगायोरे ॥ ३ ॥ राग घाटो ॥ भूलि गेलो शहर

मंझारिया हो रामा ॥ ना कोइदीखत सांचउ जरिया हो ना रुचि रंग नजरिया हो ॥ १ ॥ ना अब आइब बिश्व बजरिया हो॥ नापुर पति सों जुहरियाहो ॥ २ ॥ राग घाटो॥ झूठ रंगे मनुआंरहे अरुझाइहो रामा॥भजन कउलवादिये बिसराई॥ भव रसपरले भुलाई रामा ॥ १ ॥ कपट कलेवर रुचिर बनाई ॥ खरसम रहेव लोभाई हो रामा ॥ २ ॥ सुमति संघतिया डरन सुहाई ॥ कुमति संघतिया बढ़ाई हो रामा ॥ ३ ॥ बिश्वबिना रघुबर शरणाई ॥ नहिछुटे जगदुख दाई हो रामा ॥ ४ ॥ रागघाटो ॥ कुंज बन राधिका कन्हैया हो रामा ॥ करत बिहार सुहावन यदुबर ॥ कुसुमित तरुजुड़ि छैयां हो रामा ॥ १ ॥ सब वन चेत फुलाने रुचिकर ॥ अलिगन धुनिसुख दैया हो रामा ॥ २ ॥ फुलवा लोढ़ि लोढ़ि मोहन राजत ॥ मंगिया गूथत रुचिरैया हो समा ॥ ३ ॥ बिश्वरूप प्रभुकी यहजोरी। यमुनातीर सोहैया होरामा ॥ ४ ॥ राग घाटो ॥ पिया मोरे बसले विदेसवा हो॥रामा॥ कवनि समैया पिया मोरे ऐहें निशिदिन रहत अंदेसवा हो॥रामा॥ १ ॥ कवनि बिरहिनी पिय बिलमाये अजहुं न पाये संदेशवा हो रामा ॥ २ ॥ कुमति सवतिया देति दुख दारुन केहि बिधि सहिहों कलेसवा हो रामा ॥ ३ ॥ बिश्वरूप गहु गुरु शरना गति सहजइ होई उपदेशवा हो॥रामा पिय मोरे ॥ ४ ॥ रागघाटो ॥ पिंजरा लोभाई गइले सुगना नहिं आनमोरे रामा हो ॥ १ ॥ चिरे पिंजरवा रंगनहिं करे पहिचान मोरे ॥ २ ॥ पनियां अगिनि मिलि धरति रह बनोहै निसान मोरे ॥ ३ ॥ छनवांमेंटूटि जेहे सब की लिहैं पुरान मोरे ॥ ४ ॥ अपनो न कोउ बिश्व एक बिना भगवान मोरे ॥ ५ ॥ रागघाटो ॥ धनिसो अजबरे कुअवां जल भरे मुसुकाय मोरे रामाहो ॥ १ ॥ बिनुरे कलसवां डोरिया भरे बिनु कर पांय मोरे ॥ २ ॥ सखियां सहेलियां मिलि गये सुख उदधि समाय मोरे ॥ ३ ॥ पनियां अमिय रस छाके दुखद्वै तनसाय मोरे ॥ ४ ॥ बिश्व अगम यहगतियांबिनु गुरु न लखाय मोरे ॥ ५ ॥ रागघाटो ॥ जियरा उदासी भैलो नहिं आये यदुराय मोरे रामाहो ॥ १ ॥ कुबजा सवतिया बड़िरे लिये हरि मेलमाय मोरे ॥ २ ॥ घरवां न नीको लागे कुंज बन न सोहाय मोरे ॥ ३ ॥ ढरत नयनवां जलरे दुख कहि नहिं जाय मोरे ॥ ४ ॥ बिश्व कवन बिधि सखिरे यह बिरह नसाय मोरे ॥ ५ ॥ रागघाटो ॥ सजनि कइलों सुनावों सैयां क बोलना कठिन भैलो ॥ सैयां कहत हम जैहें बिदेशवा केहिबिधितें बिल मावेंरे ॥ १ ॥ केहि बिधि रहिहों अकेलि भवनवां कैसे बिरह बितावेंरे ॥ २ ॥ केमोरे सहिहै नयन कमनियां कैसे में दरद बुझावें ॥ ३ ॥ बिश्व

कवन बिधि रहिहो भवनवां जेहतें बियोग न पावेंरे ॥ ४ ॥ रागघाटो ॥ सजनि बड़ादुख पावों हरि जिक मिलना कठिन भैलो ॥ १ ॥ नाकछु आये हरिके संदेसवां कैसेके विरह बितावों रे ॥ २॥ जौन कन्हैया ऐहे भवनवां कैसेके रैन बितावेंरे ॥ ३ ॥ बिश्वमैं लगिहों कोहिके गोहनवां केहि बिधि शोच मिटावेंरे ॥ ४ ॥ घाटो ॥ सजनि कहांलों बुझावों बगियामें भंवरा लुभै लेरे ॥ १ ॥ बगिया लोभाये जबते भंवरवां तबते सोहागन पावों रे ॥ २ जोरे भंवरवा ऐहे भवनवां फुलवा कि सेज बिछावेंरे ॥ ३ ॥ बिश्व अगम घर करि हो गवनवां मिलि मिलि ज्योति जगावेंरे ॥ ४ ॥ राग घाटो ॥ रामा बाजि गैलो बाजि गैलो मधुर मुरलिया हो ॥ १ ॥ ना अब भावत सखियां नगरिया हो ना घरकी टकसरियाहो ॥ २ ॥ ना अब भावत यमुना कछरिया हो ना कुंजन कि डगरियाहो ॥ ३ ॥ नाअब भावत चटक चुन्दरियाहो॥ नाग-लहार मुंदरिया हो ॥ ४ ॥ बिश्व बिना अब सांवरि सुरतिया हो ना कहुं जात नजरिया हो ॥ ५ ॥ राग घाटो ॥ रामा लागि गैलो लागि गैलो बिषय बयरियाहो ॥ नाकोइ आपन लखत नगरिया हो ना प्रीतमकी डगरियाहो ॥ २ ॥ नाकोइ जातन बिश्व बजरिया हो नाहक लावे नजरिया हो ॥ ३ ॥ रागघाटो ॥ जियरा उदासी भैलो लागि बिरह कमान मोरे रामाहो ॥ १ ॥ चितरे संवलिया रंगेमुख छबि सुख खानि मोरे ॥ २ ॥ बिछुरे कन्हैया जब सें भयोतन बिनु प्रान मोरे ॥ ३ ॥ बिश्व भवनवां कबरे ऐहैं यदुकुल भान मोरे ॥ ४ ॥ रागघाटो ॥ सैंयां सुरतिया लगि गय भल बनोहै सोहाग मोरे रामाहो ॥ १ ॥ अबरे महल पिय पाये छुठि गये दुखदाग मोरे ॥ २ ॥ भ्रम किअटरिया गिरिपरे भयो पिय अनुराग मोरे ॥ ३ ॥ नियम गहनवां सतके सोहै सेंदुर मांगमोरे ॥ ४ ॥ बिश्व सोहागिनि सोई पायो अबिचलि भाग मोरे ॥ ५ ॥ रागघाटो ॥ मोतियन्ह मंगिया संवरतिउं माधो ॥ १ ॥ जोमैं जनतिउं मोहन मोरे ऐहै काहेको नेहिया लगवतिउं माधो ॥ २ ॥ जोमैं जनतिउं बिछुरि जैहे मोसे काहेको सेजिया संवरतिउं माधो ॥ ३ ॥ जोमैं जनतिउं बिरह मोहि देइहैं काहे को बतियां भुलवतिउं माधो ॥ ४ ॥ बिश्वमैं जनतिउं जोहरि नहि ऐहैकाहे कोपतियां पठवतिउं माधो ॥ ५ ॥ राग मलार ॥ ब्रज में श्याम नये ये छबि घन छाई श्याम घटा प्यारि रैन सखीरी आयो ॥ १ ॥ मेघ घटा चहुं जल घन बरसे श्याम सुधा भरे नयन ॥ २ ॥ तड़ित छटा छबि चमक सोहावन भुषन सोहै मुद दैन ॥ अति गंभीरगगन घन गरजे सखि मोहन मोहे वैन । ३ ॥ जलद घटा शिर

रहत न निशि दिन श्याम सदा छबि ऐन ॥ बिश्व रूप घनश्याम पियारे अंग अमित सोहे मैन ॥ ४ ॥ मलार ॥ जबते श्याम गये ये बिछुरनि मेरी शोचहिंयां सारी रैन सखीरि मधुबन ॥ १ ॥ सघन घटा लखि अहिरिपु दृग से चरन चपल महि दैन ॥ १ ॥ चपल चकित चपला चहुं धावति सजन बिरह कैसे चैन ॥ अबतो सखि भये युगल प्रगट घन एक जलधर दूजेनैन ॥ २ ॥ दुख सागर तन छीन रैन दिन चित मोहन छबिऐन ॥ बिश्वरूप रसना नहिं दुखलखे जोलखे ताहिन वैन ॥ ३ ॥ मलार॥ पुलकि पुलकि यदुवर सखि ललकि ललकि झूले ॥ १ ॥ झरत बुन्द बहत धार चपल चमक बार बार चढ़ो चढ़ो सखि कहि कहि कहि रस रस हिय भूले ॥ २॥ बिश्वरूप कहि न जात पवन वेग नभ सोहात झमकि जात लटपटात नभ सर चहुं फूले ॥३॥ मलार ॥ गरजि गरजि जल धर धर सखि चमकि चमकि आवे ॥ १ ॥ यदुवर जबतें बिदेश पाये नहिं कछु संदेश ॥ सुनो सुनो सखि रहि रहि रहि धक धक हियछावे ॥ २ ॥ बिश्वरूप नहिं सोहात समुझि समुझि पिछिलि बात सुरति जात श्याम गात घर नहिं मोहि भावे ॥ ३ ॥ राग मलार॥ प्रफुलित दल अमल कमल चपल नयन हेरे ॥ १ ॥ तरज लरज काहुकि नआवे मधुर बचन टेरे संग संग बालक लेइ करते कंज फेरे ॥ २ ॥ दरज परज काहुकिन भावे कृपा सर घनेरे बिश्वरूप निरखत सोई दृगन टरत मेरे ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ हरि बिगसित राजीव नयन वे मधुर टेरे ॥ १ ॥ गगन सघन बादर छाये घटा चहुं घनेरे ॥ गरजत उप घोर पवन सिधकि शोचमेरे ॥ २ ॥ बिपिन सघन सुधि न पाये निशिचर बहुतेरे ॥ बिश्वरूप लषन संग मुनिके भवन हेरे ॥ ३ ॥ मलार ॥ छयो बदरारे मोहि बिरह बढ़ायो ॥ १ ॥ घहरि घहरि झरि करि चहुं दिशवां अंधियरिया चहुं छायो ॥ कड़कि कड़कि चपला नभ धावे शोच उदधि अधिकायो ॥ २ ॥ कोइलरिया धुनि करक जियरवां सोवत मोहि जगायो ॥ बिश्वरूप उर अधिक अंदेशो हाल न श्याम पठायो ॥३ ॥ मलार ॥ आयो बदरारे नाहिं रघुबर आयो ॥ १ ॥ लटकि लटकि बन घन चहुंओरवां गह बर लता सोहायो ॥ टपकि टपकि घन बरसन लागे केहिबिधि बास लगायो ॥ २ ॥ कड़कि कड़कि आवत छन छनवां बिधि बियोग दरशायो॥ बिश्वरूप सियबर देखेबिनु रजनी घन युग छायो ॥ २ ॥ मलार ॥ आयो बदरारे नाहिं भवन छवायो ॥ १ ॥ अबघन गरजि गरजि चहुंओरवां बरषत झरी लगायो ॥ चुवत भवनवां केहि घरजैहों कुसमय शोच बढ़ायो ॥ २ ॥ झहरि झहरि चहुं बहत बयरिया जल थल जल भरि

आयो ॥ बिश्वरूप एक श्याम मिले बिनु पल पल कलप बनायो ॥ ३ ॥ मलार ॥ घूमि घूमि घूमि घेरेरे डगरवा ॥ ग्वालिनि पकरि बदन चूमि छीनले चदरवा ॥ बाट साथ कोउ न मेरे तड़पै बदरवा ॥ १ ॥ जामिनि फिरिके अंगना आवे बड़ोरे निउरवा ॥ बिश्वरूप मोहि लेत सांवरो लंगरवा ॥ २ ॥ मलार ॥ हेरि हेरि हेरि लायोरे नजरवा ॥ यामिनि कारि सखिरि घेरे कारि रे बदरवा ॥ मोहन हंसि मुरलि टेरे मोहिले जियरवा ॥ १ ॥ काछनि काछे मधुर बोले नन्द के पियरवा ॥ बिश्वरूप श्याम निठुर मोहेरे सहरवा ॥ २ ॥ मलार ॥ अगम भदौवां भैलि रतियां हो प्रभु मोरे बस लें बिदेश ॥ १ ॥ पांच सवति बसे शिर पर कलह करति निशि बार ॥ निज निज स्वारथ धावति जीवन कैसे हमार ॥ १ ॥ देति ननद दुख दारुन मिलिहै परोसिनि जाई ॥ कल न परत सखि मोकह अबका करउं उपाई ॥ २ ॥ बिश्वरूप गुरु पतियां हो पठवो मुरति सुधार ॥ तबहि पिया घर आइ हैं पुनि न बियोग बिकार ॥ ३ ॥ मलार ॥ अगम भइलि भव जल नदिया हो कैसे के उतरब पार ॥ १ ॥ घन बरसत घन बुंदहि सिमिटि मिले बहुधार ॥ लहरि अपार चहूं दिशि सूझत वार न पार ॥ १ ॥ केवट गरबी सुनत नहिं हारे करिके पुकार ॥ नहिं कोउ साथी खरच नहिं सांझ भइलि अंधियार ॥ २ ॥ बिश्वरूप गहु अनुछन के बन गुरु के अधार ॥ अवर उपाई न तरीहो हो कोटि करौ उपचार ॥ ३ ॥ मलार ॥ बिभुवन सैंयां भुलइ ले हो कैसे सहब दुख भार ॥ १ ॥ बनरे सघन चहुं ओरहि तहां न पवन पैसार ॥ केहि बिधि सुधि हम पाइब एह चिन्ता निशि बार ॥ २ ॥ करकस जंतु बसत चहुं सब कहं करत अहार ॥ बाट नहीं कहुं दीखत चहुं दिशि कांट करार ॥ ३ ॥ बिश्वरूप जग महं कोउ दीखत नहीं न हमार ॥ जा से अरज सुनावों हो सुनत करै उपकार ॥ ४ ॥ राग मलार ॥ सखि रघुबर बिन नहिं कछु भावत ॥ १ ॥ कुसमय बिधि बनबास देखायो धीरज उर नहिं आवत ॥ २ ॥ अति सुकुमार चरण सियबर को महि अंकुर चहुं छावत ॥ बिश्वरूप घन निशि दिन बरसे दादुर दरद बढ़ावत ॥ ३ ॥ मलार ॥ चहुं दिशि घन गरजत डर पावत ॥ १ ॥ घन घमंड महि तक जियराने श्याम नजरि नहिं आवत ॥ २ ॥ कब देखब नयनन्हते प्रभुकहं शोच अधिक उर छावत ॥ अंधियारी भई भानु छपित भयेबुंद गगन झरि लावत ॥ २ ॥ दामिनि दमक दरद उर महं अति दादुर बिरह जगावत ॥ बिश्वरूप दुख सिंधु बिना हरि को जग मांह बचावत ॥ ३ ॥ मलार ॥

बटोहिया हो हरिसों कहियो संदेश ॥ श्याम घटा घन चहुं दिशि छायो दृग जल ढरत हमेश ॥ १ ॥ कि धों घनश्याम निरखि छबि डरि गयो घन न गयो तेहि देश ॥ बिश्वरूप किधों श्याम डरो हे आवत उरमें अंदेश ॥ २ ॥ राग मलार ॥ बटोहिया हो जेहो कवने देश ॥ आवत घन बरषत कित रहिहो भारी भयो है अंदेश ॥ १ ॥ अजहुं बिदेशि समुझन करि हो पेहो-तु कठिन कलेश ॥ बिजुरि चमक चहुं गगन गरज भरे डरपे जियरा ह-मेश ॥ २ ॥ नाचत घन लखि मोरवा मगन भये दादुर धुनि चहुं देश ॥ बिश्वरूप घर जो न फिर जेहो पावस भल ना बिदेश ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ यरि हों श्याम शोच विधि दई है आजु री रैन सवाई होय ॥ कासों संदेश पठावों इहां के हित नहि आपन कोय ॥ १ ॥ श्याम लखे नहि हाल हियाकों तड़ित चमक चहुं ओय ॥ दादुर शोच बढ़ावे हियामें हरि मधुपुर रहे सोय ॥ २ ॥ अबतो जोरि सोहायो सखिरे कुबरी मोहन दोय ॥ बि-श्वरूप प्रभु भलन कियोरे श्याम सरम दियो खोय ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ यरिहों मोह फांसमें फसिहों आयरी नैन नसाये दोय ॥ सुन्दर आतम रूप हियेमों नेकु सुरति नहि होय ॥ १ ॥ ज्ञान बिचार सुदृग मुति गावे सो सुधि लखत न कोय ॥ भटकत आवत जात चरखमें नरक सरग दुख जोय ॥ २ ॥ अजहुं संभारो सुरति गरभको सहव कठिन दुख रोय ॥ बिश्वरूप लखु राम हियामें जनम वृथा दियो खोय ॥ ३ ॥ मलार ॥ भलो छबि वृन्दा-बन घनघोर ॥ शाखा रुचिर फूल चहुं फूले जंतु रमत चहुं ओर ॥ तरुवर सोहत मोहत श्यामहि चित मोहत धुनि मोर ॥ १ ललित सुरंग पटल मे-घनकी सजल सघन चितचोर ॥ बिश्वरूप परषत घन बूंदन दामिनि चमक अंजोर ॥ २ ॥ मलार ॥ लगो मन श्रीमोहन की ओर ॥ ललक झलक कुंडल छबि कानन अरुण ललित दृग कोर ॥ मुरली हाथ साथ गोपियन्ह के सखि मोहि परत न भोर ॥ १ ॥ ब्रज तजि हरि जबसों मधुपुर गये जलधर गये तेहि ओर ॥ बिश्वरूप सखि मेघ न बरषे बिरह बाण कियो जोर ॥ २ ॥ मलार ॥ करि हारी श्याम निहोरा रे नेकु बचन मन नाहि धरे ॥ १ ॥ यदु बन बारि डारि नजरि लगाये लखे दरद नहि मोरारे ॥ २ ॥ ब्रज बिसराये छाये घन मधुबन घोर गरज चहुं ओरारे ॥ ३ ॥ झरत नयन बरषत जलधर चहुं सखि चहुं पवन झकोरारे ॥ ४ ॥ बिश्वरूप बस भयो गोपिन्ह के चित कियो कान्ह कठोरारे ॥ ५ ॥ राग मलार ॥ मनभावे नन्द को छोरारे ॥ नयन सुछबि दृग मांहि भरे ॥ १ ॥ धुनि मुख कारि प्यारि

मुरलि बजावे ॥ चित लियो चन्द चकोरारे ॥ २ ॥ एक घनश्याम श्याम-घन दूजे वन सोहे चहुं ओरारे ॥ ३ ॥ लसत हंसत मुख मधुर बैन सोहे ॥ मणि गण भानु अंजोरारे ॥ ४ ॥ बिश्वरूप प्रभु मधुबन छाये ॥ सखि अटके चित मोरारे ॥ ५ ॥ मलार ॥ बोले कोइलिया प्यारे ॥ प्यारे गरजत मेघ-घन चहुं कारे ॥ १ ॥ ग्वाल सखासंग बनमें सिधारे ॥ घटा मनोहर नन्द दुलारे ॥ २॥कासें दरद सुनावें हिया के दादुर बोलिया दुख कों टारे॥ १ ॥ ब्रज चित चोरवा चितमो हमारे शोच हेतु बिधि दिवस संवारे ॥ बिश्व-रूप पल युग सें हियामो श्याम मुरलिया जों न निहारे ॥ २ ॥ मलार ॥ १ ॥ झुलत सेयां परिके कुसंग हिंडोल ॥ अगम अपार खम्भ दुइ लागे गुणमय गुण अनमोल ॥ १ ॥ पाया चारि सोहावन चमकत राजत रुचिर खटोल ॥ मणि गण जड़ित तड़ित ऐसे सुन्दर छबि अति बनो है अतोल ॥ २ ॥ बिनु कर पांय झुलावति पिय कहं बचन मनोहर बोल ॥ हंसति हंसावति रागहि गावति बहु बिधि करति कलोल ॥ ३ ॥ रैनि दिवस पैठत नभ माहीं कबहुं न होत मझोल ॥ बिश्वरूप अब भूल झुलेरे पुनि जिन चढ़हु मचोल ॥ ४ ॥ मलार ॥ हिंडोलना जो भूले तेरो रंग ॥ झुलि झुलि माति रहत सो निशि दिन छूटत कर्म कुसंग ॥ १ ॥ झूमि झूमि जात न डारत महि पगु बाढ़ो अजब उमंग ॥ बिश्वरूप गुरु मोहि झुलावो सोहूं झूल अभंग ॥ २ ॥ राग मलार ॥ सखि नहि श्याम संदेश पठाये ॥ आशा दिये श्याम आवनकी कौन हेत बिसराये ॥ १ ॥ कारी घटा छटा बिजुरिन की निरखि शोच उर छाये ॥ धार अपार बहत यमुना की नीर नदी भरि आये ॥ बिश्वरूप प्रभुश्याम मिलन कहं दैव सुयोग बढ़ाये ॥ २ ॥ मलार ॥ सुरपति कीन्हेउ क्रोध घनेरो ॥ जगलयकर घन बंधन छोड़े ब्रज पहं तु-रितहि प्रेरो ॥ १ ॥ करिकर कर सम बरषत धारहि ब्रज ब्याकुल बहुतेरो ॥ प्रभु करुणा निधि आरत मोचन कहि ब्रज चन्दहि टेरो ॥ २ ॥ सुनतहि गिरि कंह कर पर धारो दीन्हो अभय बसेरो ॥ बिश्वरूप जगदीश दया जेहि सो न परत दुख घेरो ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ अंधियारि आये बरसा-ति ॥ घिर सघन चहुं ओर मेघकी चपला चमक दिन राति ॥ १ ॥ मधुपुर मेह किये युवतिन सों गोप बधून सोहाति ॥ २ ॥ भवन भोग सखिमोहि नहिं भावत अब जीवन केहि भांति ॥ ३ ॥ मलार ॥ देखोरी काम घटाघन घेरो ॥ बिषय बूंद बरषत निशि बासर साहस वाद घनेरो ॥ १ ॥ प्रबलधि-राग बसन अति रुचि कर तेहि भेवत चहुं फेरो ॥ समता भूमि न जरि नहिं

आवत बारि भरेउ बहुतेरो ॥ २ ॥ ले गुरु बचन सुसाज रुचिर अति छावो भवन सबेरो ॥ बिश्वरूप सुख मो बिहरो अब आन उपाइ न हेरो ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ हरि बिना जियरवा तरसे ॥ रैनि दिवस अनुछन दृग बरसे ॥ १ ॥ बरषत घन मन चपल करत सोइ ॥ दामिनि दमक बिरह उर सरसे ॥ २ ॥ सुरति करत मन हरत तुरित सो छबि रमणीय रुचिर जल धरसे ॥ बिश्वरूप सुख रूप अलख सो चरण कमल कब परसब करसे ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ देखो सखि कारेकोर मिताई ॥ कारे कृष्ण प्रीति करि हमसों कीन्ह दुराव कन्हाई ॥ १ ॥ कारे मेघ घटा डरपावत घुमड़ि घुमड़ि घहराई ॥ तड़पि तड़पि उर साल बढ़ावत बिरह के बाण चलाई ॥ २ ॥ कारे घन घन मगु नहि दीखत जंतु बिपुल सखि मोहि नेकु न भावत ॥ ३ ॥ मलारबिहाग ॥ सखि नहि मधुपुर सें कोइ आवत ॥ तन इत मन जहां श्याम पियारे भवन काच नहि भावत ॥ १ ॥ निरखि सघन बन मोर मगन मन ब्रज युवतिन दुख छावत ॥ दादुर कोकिल केलिमचाये दै जुबियोग सहावत ॥ २ ॥ सखि अचरज पावस ऋतु आयो बरषत अगिन बढ़ावत ॥ बिश्वरूप मति बाम श्यामको कुबरी आस पुरावत ॥ ३ ॥ मलार बिहाग ॥ संदेशन मधुबन कूप भरे ॥ लिखि लिखि पाती श्याम पठाये कउलन सांच करे ॥ १ ॥ जैसे दाव अनल बन भीतर गिरह ते देह जरे ॥ कवन आस जल देहि बुझावों मन न भरोस धरै ॥ २ ॥ अबतो आवन टूर बात सखि मोहन टूर परे ॥ बिश्वरूप उर एक शोच उर मुख छबि दृगकों हरे ॥ ३ ॥ मलार बिहाग ॥ देखो सखि हरि अजहुं नहि आये ॥ बरषा ऋतु अब आय तुलाने मेघ घटा नभ छाये ॥ १ ॥ बोलत बैन मयूर कोकिला नाचत मोद बढ़ाये ॥ दादुर धुनि चहुं ओर करत अति ऋतु आगमन जनाये ॥ २ ॥ कठिन बिरह कछु कहि नहिजाई हरि न संदेस पठाये ॥ बिश्वरूप एक श्याम दरश बिनु नीर नयन भरि लाये ॥ ३ ॥ राग कजरी ॥ ऐसे हरि जिवितायें न पठाये पतियां ॥ एक वेर घन बरषत जल धारा टूजे टूजे रे झरत नैना रतियां ॥ १ ॥ एक दुख भूख ग्रहन अंधियारो जाने जाने रे कवन दूजे दुख बतियां ॥ २ ॥ बिश्वरूप मन मोहन मोही देखो देखो रे सबनकी भुलाई बतियां ॥ ३ ॥ कजरी ॥ ऐसे हरिको हिंडोल झुलावें सखियां ॥ कुसुम बाग तिय छवि सखि धारे गावें गावें रे सुराग कवन लखियां ॥ १ ॥ मोहन मुरली मधुर बजावै मोहे मोहे रे सुरेश सहस अंखियां ॥ २ ॥ बिश्वरूप धन धन ब्रजबाला देखो देखो रे अगम हरि रस चखियां ॥

३ ॥ कजरी ॥ ऐसे हरिके नयन मोरि मोहे मतियां ॥ चपलाई दृग टोना लाई कैसे कैसे रे जियों मोरि अस गतियां ॥ १ ॥ भइहौं बिकल सखिकल न परत मोहि नहिं सोहात ब्रज सुत पतियां ॥ २ ॥ बिश्वरूप घन बरण शरणमोहि अवर सोहात न दूजी बतियां ॥ ३ ॥ कजरी ॥ देखो अगमबिरह बरषत रतियां ॥ कालि रईनि बदरा चहुं कारे करे करेरे ॥ करक हरि झिकि बतियां ॥ १ ॥ केतिक अवध बिताये ऐसेझुठे झुठेरे मोहावे हरि मेरि मतियां ॥ २ ॥ बिश्वरूप मगु मुरली धरके जोहे जोहेरे सकल बनच-रजतियां ॥ ३ ॥ कजरी ॥ हरिगैया चरावेरे बजावे बंसिया ॥ मधुर मधुर मुरलि धुनिटेरे लगो लगोरे सबहिकों बिरह गसिया ॥ १ ॥ खग मृग मुख चारा रुकि राखे वभो वभो रे सबै मोहन फसियां ॥ २ ॥ बिश्वरूप उर का-गजहरिको लिखोलिखो रे प्रीति पिरीतम मसियां ॥ ३ ॥ ॥ कजरी ॥ बसे अजब महल रे हमारे पतियां ॥ दश दरवजवा बसे सब सखियां ॥ पियके मनावे नहि सुने बतियां ॥ १ ॥ करति कलोल देखावति लोभहि नयन सखन दर सावे मतियां ॥ २ ॥ बिश्वरूप यह नगरि न ऐहो मेटि रे गईलदुख वर सतियां ॥ ३ ॥ ॥ कजरी ॥ ६ ॥ रागसोरठ ॥ सखिरे कवन हरिको हाल ॥ सुरति ब्रजकि बिसरि दीन्हो कैसे गोपी ग्वाल ॥ कैसें यशुमति नन्द हूहैं कैसें ब्रजके बाल ॥ सखा संग जोकेलि कीन्हों कुंज मधुबन ताल ॥ बिश्वरूप सनेह हरिको देत दारुण शाल ॥ १ ॥ सोरठ ॥ मनरघुनाथ पदरज धारु ॥ बिषय परि हरि सुरति उरधरि कुटिल कर्म निवारु ॥ २ ॥ जाहि सेवत सिद्ध मुनिबर शंभु हृदय अगारु ॥ कागराज बिहाय निशदिन सेइ कालहि टारु ॥ १ ॥ सकल पदके दानि केवल हरण ममता भारु॥ जनम मरण अनेक बंधन सघनबन कहजारु ॥ २ ॥ कहत बेद पुराण महिमा लहत अजहुं न पार ॥ शेशशारद कहत हारे शरण शरण पुकारु ॥ ३ ॥ सकल तीरथ भूतिनि-वसत अगम ज्योतिसु चारु ॥ बिश्वरूप बसोसदां डरछुटो जग टक सारु ॥ ४ ॥ सखिरे श्याम दुखमोहि दई ॥ बिरह गांसी लाई हरिगयो कठिन जी-वनभई ॥ १ ॥ बितेउ केतिक दिवस सखिरे सुनेव बात ननई ॥ बिश्वरूप बियोग दुखकोवैद बिधि छिन लई ॥ २ ॥ सोरठ ॥ सखिरे आजु दुख मोहि भई ॥ राम बिनु मोहि कलन सखिरी पजकयुग समछई ॥ १ ॥ कहों केहि बिधि शोच उरको निन्द दृगसों गई ॥ २ ॥ बिश्वरूप बियोग छायो प्राण बिधि हरिलई ॥ ३ ॥ सोरठ ॥ सखिरे प्रीति प्रभुजि सोगई ॥ झूठि पाति श्यामपठयो कपटकारणदई ॥१॥ कवन पहिली भावसखिरे शोच उरमेंनई ॥१॥

॥ बिश्वरूप सनेह नीको भलन बिछुरनि भई ॥ ३ ॥ सोरठ ॥ सखिरे राज-कुंवरिहि भये ॥ लोक नाथ सनाथ कीन्हो सकल सुख विधि दये ॥ १ ॥ झूंठसबमन राव सखिरे मिलनको दिनगये ॥ बिश्वरूप चितेर जैसे मन मु-रतिलिखि गये ॥ २ ॥ सोरठ ॥ चखोरे नाम रससुखमई ॥ नाम रस सुख धाम जानो अवररस दुखहई ॥ नारदादि मुनीश चाखो भेद मति दुरिगई ॥ बिस्व-रूप अलेख देखो आपु पूरण भई ॥ २ ॥ सखिरे श्याम बसोहै बिदेस ॥ रैन दिन घन झरत जल कहं प्रवन सरस हमेस ॥ श्याम बिरहते सुख तरिवर होत कठिन कलेस ॥ १ ॥ गोप गोपी हाल लखिके होत जियमें अंदेश ॥ बिश्वरूप श्री द्वारिकाको आपु भयोहै नरेश ॥ २ ॥ लखुरे कामबंधन दई ॥ काम बसतें यम भूले सहज सुख दुरिगई ॥ १ ॥ कठिन जाल पसारि दीन्हो प्रीति नितिनितिनई ॥ २ ॥ बिश्वरूप सुसाजपायो रीति हरिसेा नभई ॥ ३ ॥ सोरठ ॥ जोपै कोई नेम अयसो धरे ॥ छूटति तुरितहि जगत फन्दा मोह ममिता टरै ॥ १ ॥ जैसे चातिक तृषा व्याकुल गंग जलमें परै ॥ वारि कण मुखमें न डारे चोंच बंधन करै ॥ २ ॥ वारिचर जिमि बारि बिहरत मोदउर में भरे ॥ पलक भरि होय जलसेा बाहिर प्राण कों परि हरै ॥ ३ ॥ विषय आशा सकल परिहरि प्रीति प्रभु अनुसरै ॥ बिश्वरूप अपार भवनिधि सहज हींसो तरै ॥ ४ ॥ सोरठ ॥ बिना प्रभु हिय दरदछाई ॥ रटतबीतेउ दिवस मोहिबहु दरशनहि पाई ॥ जलज जल बिनु रहत नाहि तुरित कुंभिलाई ॥ १ ॥ सरितपति सर दिंदु संगम बाढ़ि अधिकाई ॥ बिरह चन्दहि पाई तैसे शोक बहुताई ॥ २ ॥ कल परत नहि एकछन जल मीन बिलगाई ॥ बिश्व अवबिनु दरश हरिके मोहि न रहिजाई ॥ ३ ॥ ८ ॥ राग बिहाग ॥ कामना को तेज चाउंमानेा कहाएहि दाउहों ॥ अपने रंगन्ह सुरति भिजाउं असपै हेा न उमाउं ॥ १ ॥ जगमग सुन्दर ज्योति जगाउं बिनु पतंग दुति छाउं ॥ बरषत सुख हरषत जनतामह जेहि गुरुभेद लखाउं ॥ २ ॥ बिश्वरूप निज सुख अहमाउं ॥ जनमन बिषय भुलाउं ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ सांवरेके संगजाउं सखि मोहि घर न सोहाउं हेा ॥ १ ॥ मधुपुर हरि गये सुधि नहि पाऊं ॥ सखिदुख डर मोहि छाऊं ॥ २ ॥ स्वाति घन चातिक चित चाउ हरि छबि चित अरुझाउ ॥ ३ ॥ बिश्वरूप विधिगति को लखाउ हरिमोसे करिहे दुराउ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ राघेा हरत नपीर ॥ केहि कारण हरि देरीलगायेा भय मे-चन रघुबीर ॥ १ ॥ दीन बंधु प्रभु नाम कहावत भवसागर भरेनीर ॥ २ ॥ जेा महिमा नहि नामके रखिहेा को लइहे मोहि तीर ॥ प्रभु केतिक खल

३ ॥ कजरी ॥ ऐसे हरिके नयन मोरि मोहे मतियां ॥ चपलाई दृग टोना लाई कैसे कैसे रे जियों मोरि अस गतियां ॥ १ ॥ भइहौं बिकल सखिकल न परत मोहि नहिं सोहात ब्रज सुत पतियां ॥ २ ॥ बिश्वरूप घन बरण शरणमोहि अवर सोहात न दूजी बतियां ॥ ३ ॥ कजरी ॥ देखो अगमबिरह बरषत रतियां ॥ कालि रईनि बदरा चहुं कारे करे करेरे ॥ करक हरि चिकि बतियां ॥ १ ॥ केतिक अवध बिताये ऐसेझुठे झुठेरे मोहावे हरि मेरि मतियां ॥ २ ॥ बिश्वरूप मगु मुरली धरके जोहे जोहेरे सकल बनच-रजतियां ॥ ३ ॥ कजरी ॥ हरिगैया चरावेरे बजावे बंसिया ॥ मधुर मधुर मुरलि धुनिटेरे लगो लगोरे सबहिकों बिरह गसिया ॥ १ ॥ खग मृग मुख चारा रुकि राखे वभो वभो रे सबै मोहन फसियां ॥ २ ॥ बिश्वरूप उर का-गजहरिको लिखोलिखो रे प्रीति पिरीतम मसियां ॥ ३ ॥ ॥ कजरी ॥ बसे अजब महल रे हमारे पतियां ॥ दश दरवजवा बसे सब सखियां ॥ पियके मनावे नहि सुने बतियां ॥ १ ॥ करति कलोल देखावति लोभहि नयन सखन दर सावे मतियां ॥ २ ॥ बिश्वरूप यह नगरि न ऐहो मेटि रे गईलदुख वर सतियां ॥ ३ ॥ ॥ कजरी ॥ ६ ॥ रागसोरठ ॥ सखिरे कवन हरिको हाल ॥ सुरति ब्रजकि बिसरि दीन्हो कैसे गोपी ग्वाल ॥ कैसें यशुमति नन्द हुहैं कैसें ब्रजके बाल ॥ सखा संग जोकेलि कीन्हों कुंज मधुबन ताल ॥ बिश्वरूप सनेह हरिको देत दारुण शाल ॥ १ ॥ सोरठ ॥ मनरघुनाथ पदरज धारु ॥ बिषय परि हरि सुरति उरधरि कुटिल कर्म निवारु ॥ २ ॥ जाहि सेवत सिद्ध मुनिबर शंभु हृदय अगारु ॥ कागराज बिहाय निशदिन सेइ कालहि टारु ॥ १ ॥ सकल पदके दानि केवल हरण ममता भारु॥ जनम मरण अनेक बंधन सघनबन कहजारु ॥ २ ॥ कहत बेद पुराण महिमा लहत अजहुं न पार ॥ शेशशारद कहत हारे शरण शरण पुकारु ॥ ३ ॥ सकल तीरथ भूतिनि-वसत अगम ज्योतिसु चारु ॥ बिश्वरूप बसोसदां डरछुटो जग टक सारु ॥ ४ ॥ सखिरे श्याम दुखमोहि दई ॥ बिरह गांसी लाई हरिगयो कठिन जी-वनभई ॥ १ ॥ बितेउ केतिक दिवस सखिरे सुनेव बात ननई ॥ बिश्वरूप बियोग दुखकोवैद बिधि छिन लई ॥ २ ॥ सोरठ ॥ सखिरे आजु दुख मोहि भई ॥ राम बिनु मोहि कलन सखिरी पलकयुग समछई ॥ १ ॥ कहों केहि बिधि शोच उरको निन्द दृगसों गई ॥ २ ॥ बिश्वरूप बियोग छायो प्राण बिधि हरिलई ॥ ३ ॥ सोरठ ॥ सखिरे प्रीति प्रभुजि सोगई ॥ झूठि पाति श्यामपठयो कपटकारणदई ॥१॥ कवन पहिली भावसखिरे शोच उरमेंनई ॥१॥

॥ विश्वरूप सनेह नीको भलन बिछुरनि भई ॥ ३ ॥ सोरठ ॥ सखिरे राज-कुंवरिहि भये ॥ लोक नाथ सनाथ कीन्हो सकल सुख विधि दये ॥ १ ॥ झूंठसबमन राच सखिरे मिलनको दिनगये ॥ विश्वरूप चितेर जैसे मन मु-रतिलिखि गये ॥ २ ॥ सोरठ ॥ चखोरे नाम रससुखमई ॥ नाम रस सुख धाम जानो अवररस दुखहई ॥ नारदादि मुनीश चाखो भेद मति दुरिगई ॥ बिस्व-रूप अलेख देखो आपु पूरण भई ॥ २ ॥ सखिरे श्याम बसेहै बिदेस ॥ रैन दिन घन मारत जल कहं पवन सरस हमेस ॥ श्याम बिरहते सुख तरिवर होत कठिन कलेस ॥ १ ॥ गोप गोपी हाल लखिके होत जियमें अंदेश ॥ विश्वरूप श्री द्वारिकाको आपु भयेहै नरेश ॥ २ ॥ लखुरे कामबंधन दई ॥ काम बसतें राम भूले सहज सुख दुरिगई ॥ १ ॥ कठिन जाल पसारि दीन्हो प्रीति नितिनितनई ॥ २ ॥ विश्वरूप सुसाजपायो रीति हरिसेा नभई ॥ ३ ॥ सोरठ ॥ जोपै कोई नेम अयसेा धरे ॥ छूटति तुरितहि जगत फन्दा मोह ममिता टरे ॥ १ ॥ जैसे चातिक तृषा व्याकुल गंग जलमें परै ॥ वारि कण मुखमें न डारे चोंच बंधन करै ॥ २ ॥ वारिचर जिमि बारि बिहरत मोदउर में भरे ॥ पलक भरि होय जलसेा बाहर प्राण कों परि हरै ॥ ३ ॥ विषय आशा सकल परिहरि प्रीति प्रभु अनुसरै ॥ विश्वरूप अपार भवनिधि सहज हींसेा तरै ॥ ४ ॥ सोरठ ॥ बिना प्रभु हिय दरदछाई ॥ रटतबीतेउ दिवस मोहिबहु दरशनहि पाई ॥ जलज जल बिनु रहत नाहि तुरित कुंभिलाई ॥ १ ॥ सरितपति सर दिंदु संगम बाढ़ि अधिकाई ॥ बिरह चन्दहि पाई तैसे शोक बहुताई ॥ २ ॥ कल परत नहि एकछन जल मीन बिलगाई ॥ बिश्व अवबिनु दरश हरिके मोहि न रहिजाई ॥ ३ ॥ ८ ॥ राग बिहाग ॥ कामना को तेज चाउंमानेा कहाएहि दाउहों ॥ अपने रंगन्ह सुरति भिजाउं असपै हेा न उपाउं ॥ १ ॥ जगमग सुन्दर ज्योति जगाउं बिनु पतंग दुति छाउं ॥ बरषत सुख हरषत जनतामह जेहि गुरुभेद लखाउं ॥ २ ॥ बिश्वरूप निज सुख अहभाउं ॥ जनमन बिषय भुलाउं ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ सांवरेके संगजांउ सखि मोहि घर न सोहाउं हेा ॥ १ ॥ मधुपुर हरि गये सुधि नहि पाऊं ॥ सखिदुख डर मोहि छाऊं ॥ २ ॥ स्वाति घन चातिक चित चांउ हरि छबि चित अरुझाउ ॥ ३ ॥ विश्वरूप विधिगति को लखांउ हरिमोसे करिहे दुराउ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ राघेा हरत नपीर ॥ केहि कारण हरि देरीलगायेा भय मे-चन रघुबीर ॥ १ ॥ दीन बंधु प्रभु नाम कहावत भवसागर भरेनीर ॥ २ ॥ जेा महिमा नहि नामके रखिहेा को लइहे मोहि तीर ॥ प्रभु कैतिक खल

गन कहंतारे गिनि न सके कोइ धीर ॥ बिश्वरूप प्रभु देहु दयाकरि चरण भवन मोहि थीर ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ कब ऐहैं यदुबीर भवन सखि ॥ रैनि दिवस दुखघन अधि कायो ढरत दृगन से नीर ॥ १ ॥ गृहबिनु दीप ॥ रैनि बिनु शशिके भुज गन मणि बिनु थीर ॥ २ ॥ पति बिनु नारि बारि बिनु-सफरी व्रजजन को हियपीर ॥ ३ ॥ यमुना केलि खेलि मधुबन किया नट नागर रनधीर ॥ बिस्वरूप प्रभु नट नागर बिनु मन न लहत कहुंधीर ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ सेमर से जिमि कीर जगत सुख ॥ सेवत निशदिन आस लगायो चोंच लगत भयोपीर ॥ १ ॥ दीप शिखाजल फेन लहरिसों जेसे बिसों नीर ॥ बनिता राज भवन सुख तैसो मूढ़ लहत तेहि थीर ॥ २ ॥ पाई बिषय सुख हरष बढ़ायो बिछुरे होत अधीर ॥ बिश्वरूप दृग अंध भयोदोउ गत हगुरु ज्ञान भंभिर ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ भव सागर चहुंनीर अगन सखि ॥ ना कहुं नावनि खेवन हारो ना मूभतकहुं तीर ॥ १ ॥ छन छन अगम लहरि चहुंछावे पाई कुसंग समीर ॥ रैनि दिवस एकरस जलछायो केहि बिधि ते धरों धीर ॥ २ ॥ बारंबार पुकार करतहों विनति सुनो यदुबीर ॥ बिश्वरूप प्रभु जनक सुता घर राखि लेहु रघुबीर ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ प्रभु जग जाल कब परि हरिहो ॥ कबसाधन करिहो सुख दायक कब हरि पद उर धरिहो ॥ १ ॥ नरतन पाइ जो करत उपाइ न गर्भ अनल महं जरिहो ॥ २ ॥ इत दारुण दुख बिपुल लहोगे बहुरि नरक पचि मरिहो ॥ ३ ॥ बिश्वरूप बिनु गुरु सरणागति यम गण कह किमि टरिहो ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ जबते विषयन में अरु झाई ॥ तबतें चिदानन्द पूरण सुख मूढ़ दिये बिसराई ॥ १ ॥ कठिन त्रिगुण को फांस परो है परबस जहं तहं धाई ॥ सुख दुख लहत अनेकन्ह निशि दिन ऊंच नीच घर जाई ॥ १ ॥ कबहुंक देव दनुज सुर पति भये कबहुं के नरतन पाई ॥ कमला राज भोग अरुझानो सुमति बिचार बिहाई ॥ २ ॥ कबहुंक कीट पतंग भयोहै सघन तिमिर उरझाई ॥ चलत उपाय नहां साधन को समुझि समुझि पछताई ॥ ३ ॥ जबगुरु बचन बिचार सुअंजन उर दृग मांह लगाई ॥ बिश्वरूप निजरूप लखे तब दोष तिमिर बिनसाई ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ भजुमन राम काम बिसराई पातक पुंज सकल बिन सावत सुख सागर उर छाई ॥ १ ॥ तरेउ अजामिल आदि अधम बहु अचल लोक बसे जाई ॥ जोजो तरे करि गिनती वेद शेष गिरा सकुचाई ॥ २ ॥ सकल बिभूति प्रताप जाहि को चरणन्ह भवन बनाई ॥ महिमा अगम पार को पावे वेद नेति कहि गाई ॥ ३ ॥ जो

चाहसि कल्याण काल्प तरु तो यह सुगम उपाई ॥ बिश्वरूप हरि सरण गहो अब आवागमन नसाई ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ जनम हम हारे हरि लागी चरण कमल अनुरागि ॥ नांहि चहों धन धाम बिभव सुख नहि सुर पति पद मागी ॥ नहि सत्कार बड़ाई चाहों नेह तुमहि सो पागी ॥ नहि तनके सुखनाथ चहो मैं नहि चाहों बड़ भागी ॥ २ ॥ करहु दयाल दया जन जानी हरहु दुसह दुख दागी ॥ केतिक अधम लिये अपनाई अब न नाथ मोहि त्यागी ॥ ३ ॥ तुम प्रभु मातु पिता सुत बंधू काम सघनबन आगी ॥ बिश्वरूप मन मधुप पियत रस चरण कमल अनुरागी ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ बटिया हेरायल मन दुख पावल रेकि ॥ जात जात भुलि गेनी महावन चोरन धरि बेल मावल रेकि ॥ १ ॥ बिनय सुनत नहि देत दरेरो बहु बिधि त्रास देखावल रेकि ॥ २ ॥ जंतु घनेरे जहं तहं गरजहि निरखत धीर परायल रे कि ॥ ३ ॥ करत बिषाद बहुत पछितावा कोउ नहि डगर बतावल रेकि ॥ ४ ॥ खोजत खोजत गहलि न गिचवां सत गुरु राह मिलावल रेकि ॥ ५ ॥ बिश्वरूप जबपिय घरआये ताप सकल बिसरावल रेकि ॥ ६ ॥ बिहाग ॥ हियलागो दुख तीर मोहन बिनु ॥ मन मोहन किये खेल पुलिनमें हरे युवतिन्ह के चीर ॥ १ ॥ यदुनन्दनसों ब्रज छबि छायो ज्योति बरै जिमिहीर ॥ सो ब्रज नेकु न भावत मनमों सर जैसे बिनु नीर ॥ २ ॥ काह कहों गति ब्रज युवतिनकी मधुबन जंतु अधीर ॥ बिश्वरूप प्रभु मनहरि लीन्हों सांवल छबि यदुबीर ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ आजु भयो बिधि बामरी सजनी ॥ राज सुनाई बिपिन दियो रामहि कैसे सहों दुख धाम ॥ १ ॥ कब ऐहैं सियराम लषन घर ज्योति ललित घनश्याम ॥ यह चिन्ता मोहि रैनदिवस सखि नहि भावत सुख काम ॥ २ ॥ गृह अंधियार दीप बिनु जैसे तैसे भयो बिनुराम ॥ बिश्वरूप शोचति हियजननी कोटिन्ह युगसम याम ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ जग जीवन केहि काम भजन बिनु ॥ काह भये गजरथके पाये का सुरपतिके धाम ॥ १ ॥ काह भयो गुरुता गुणपाये महि मंडनके याम ॥ काह भयेतन भेष बनाये अंत बिबिध परिनाम ॥ २ ॥ काह भये बहुनेम बढ़ाये मन न लगो सियाराम ॥ बिश्वरूप एकदिन अस ऐहै छूटि जैहैंघरदाम ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ ज्ञानके ज्योति छाउं फेरिगरभ नहि आउं ॥ बिषय भोग ईंधन चित चाऊं सहि सब बेगि जराउं ॥ २ ॥ क्रम क्रोध मदतम दुरि जाउं भानु प्रकाश सोहाउं ॥ बिश्वरूप गुरु ऐसो लखाऊं सहजहि द्वैत नसाउं ॥ ३ ॥ रागभैरो ॥ प्रात समय मुख निरखि रामको कौशिल्य हरषाई ॥

निज करतें प्रभुको मुख धोवति लेई झारी सुचिराई ॥१॥ अंचल पोंछि मोद बैठावतिमन छबि रहेबले भाई।फल अरु फूलदेति प्रभुके कर मेवा बिबिधि मंगाई॥२॥ब्रह्मादिक समूह सुर जेते निज निज थलतें आई ॥ जय जय धुनि करिप्रभु यश गावत पूजत प्रीति बढ़ाई ॥३॥ चारिउ वेद राममुण गावत निज निज बेष छपाई ॥ गान करत गंधर्ब मनोहर नाना राग बनाई ॥ ४ ॥ शोभा खानि मदन छबि हारक उर धरि सबै सिधाई ॥ बिश्वरूप प्रभु चिभुवन स्वामी हरो मोह ममताई ॥ ५ ॥ राग भैरव ॥ श्री रघुबीर धीर सुत बालक दानि अचल पद केरे ॥ बारिज नयन मोह मद खंडन जन मंडन हित हेरे ॥ १ ॥ बालापन ध्रुव कीन्ह महा तप असन बसन तजि जेरे ॥ दीनबंधु भगवन्त महा प्रभु तुरित गये तेहि नेरे ॥ २ ॥ सुर दुर्लभ वर देई शीस पर रघुबर निज कर फेरे ॥ जहं कालहुकी गति न प्रभु है सो पद दीन्ह बसेरे ॥ ३ ॥ सुर नर धरणि धरम बाधक खल अस रावण प्रगटेरे ॥ ताकहं मारि उबारि बिभीषण कहं प्रभु तिलक करेरे ॥ ४ ॥ जय जय धुनि नभ सब मुनि गण करें कुसुम समूह बखेरे ॥ बिश्वरूप असप्रभु सरणी गति को नहिं जग उबरेरे ॥ ५ ॥ राग भैरव ॥ रमा रमण रघुबीर धीर भजु तजो मोह मद मायारे ॥ भूलि परेसि का बिषय भोग में झूठे तनधन जायारे ॥ १ ॥ जासु प्रताप अखंड अनूपम भुवन चतुर्दश छायारे ॥ ताहि बिसारि भ्रमसि कामी बस मिथ्या जन्म गवांयारे ॥ २ ॥ काको मृग जल तृषा गयेको स्वप्नराज सुख पायारे ॥ उदधि पारचा हंसि गहि बीची हरि बोहित बिसरायारे ॥ ३ ॥ अर्थ अनर्थ रूप श्रुति गावत व्याध सारिस दुख दायारे ॥ तेहि नित सुख जोवत तुच्छनको अजहुं समुझ नहिं आयारे ॥ ४ ॥ जो सुख निधि चाहसि निशि बासर निरबाध चित भायारे ॥ बिश्व रूप गहु सम कल्प तरु सबकर भूल सोहायारे ॥ ५ ॥ राग भैरों ॥ भजुमन रमा रमण भयहारी ॥ जगत बंधु जम जाल काल हर ममता भेद कुठारी ॥ कुमति कुसंग कुचाल कुमग तजु विषम रैन अंधियारी ॥ चण्ड भानु शत कोटि तेज धर अज अनीह अविकारी ॥ २ ॥ जनमन कुटिल कर्म दारुण बन लोभ मोह बनचारी ॥ जारत अनल अखंड अमित शत तरुण तेजबपु धारी ॥ ३ ॥ अभिमत दानि खानि सब सुखके करुणा सिंधु मुरारी ॥ अंतर गति जानत सब जनकी जल थल जीव अपारी ॥ ३ ॥ सबकोई समूच धर केवल रघुकुल कमल तमारी ॥ बिश्वरूप प्रभु आरत मोचन जो गजराज उबारी ॥ ४ ॥ राग भैरों ॥ अब मोहि शंभु दया करि हेरो ॥ बल अगार

भव भाव हरण प्रभु देहु चरण महं डेरो ॥ १ ॥ जगत सघन बन पार न दीखत मोह मर्त्त बहुतेरो ॥ काम क्रोधके हरि द्वीपी बहु हठि घेरत चहुं फेरो ॥ २ ॥ खलको बचन कंठ उर बेधत सुधि न रहत तन केरो ॥ आसा नदी बहुत बाढ़ी है दीखत नाव न बेरो ॥ ३ ॥ बनचर बंधु सखा बालक पितु तिय पुरजन सब केरो ॥ इनके सुख दुख तें मानत उर हर्ष बिषाद घनेरो ॥ ४ ॥ धायउ सब दिशि कियेउ यतन बहु लगत उपाय न मेरो ॥ विश्वरूप अब शरण परो है नाथ करो निज चेरो ॥ ५ ॥ राग भैरों ॥ श्री रघुनायक जन सुखदायक द्विज सुर हित तन धारी ॥ कहत मंदोदरि बिनय बहुत करि सुनु पति बचन हमारी ॥ राम विरोध बहुत पछतैहो देखो नैन उघारी ॥ १ ॥ कालहुको भक्षक जनरक्षक जाहि नमत त्रिपुरारी ॥ तिनसों का पुरुषारथ करिहो काल बदन शिर डारी ॥ २ ॥ सुनि रावण असि गरजि तरजि अति कहत बचन भयकारी ॥ मो समको योधा जग माहीं जो सकिहै भुज टारी ॥ ३ ॥ लखि विपरीत बिधाता पियको शोच करति अति भारी ॥ विश्वरूप रघुबीर बिमुखको सकिहै कवन उबारी ॥ ४ ॥ राग भैरों ॥ जय महेश अखिलेश सनातन करुणा सागर शोक हरो ॥ कुंद इन्दुवर वरण सरिस तन अमित दिवाकर तेज धरो ॥ १ ॥ उदधि मथन संभव बिष दुर्जर जरत सुरासुर ताप गरो ॥ करि बिष पान निमिष महं सबको अभय कियो यस भुवन भरो ॥ २ ॥ पर उपकार उदार काहि अस जाके प्रभु मैं चरण परो ॥ शिव केदार दानी उदारहो दानि चारफल देव तसो ॥ ३ ॥ अर्ज मानि जन जानि दयानिधि मन इच्छित फल दान करो ॥ विश्वरूप तव शरण परोहे आन उपायन काज सरो ॥ ४ ॥ राग भैरों ॥ यमपुर कौन बचेहै हो ॥ हरि बिन साथी नहीं कोइहोइ हे मरणसमय जबरेहै हो ॥ मातु सुता सुत धन हित मानत सोतो इतरहि जैहैहो ॥१॥ देखु बिचारि समुझ मन अपने जैसो पाप कमैहैहो ॥ सो जन तैसो अवशि लहैगो निज फल कवन दुरैहै हो ॥२॥ सावन हरित रहत नहि सब छन कछु दिन बीति सुखैहै हो ॥ देखतहू जग अंध भयो है अंत समय पछितैहैहे ॥३॥ साधन मूल पाइ नर तन कहं जो तुम अबहि बनैहै हो ॥ विश्वरूप सोइ भाग पुंज नर अमर लोक घर पैहै हो ॥४॥ राग भैरों ॥ देखो कर्म रेख कठिनाई ॥ जोजस करत लहत तैसो फल ऐसोबेद हु गाई ॥१॥ कोउ जन त्रासन बसन नहि पावत दुखतें दिवस बित ई ॥ कोउ सुरराज भवन बिहरत नित नमत सकल सुर आई ॥२॥ कोउ सब धरणी राज करतु है दल चतुरंग सोहाई ॥

॥ खंड खंड भूपाल जे किंकर पद रज शीस चढ़ाई ॥ ३ ॥ कोउ नर बाहन सरिस भयो है परम मोट उर छाई ॥ सकल भुवन बिहरत कोउ निज रुचि कोउ यम गेह सिधाई ॥ ४ ॥ गहन कर्म गति लखि न परत यह टरत न आन उपाई ॥ बिश्वरूप गहु हरि शरनागति तब यह जाल नसाई ॥ ५ ॥ राग भैरो ॥ सुनहु सिखावन रावण मेरा कहत बिभीषण बिनय करी ॥ जो जगदीश चराचर नायक रघुनायक सो रूप धरी ॥ इनते बैरकुशल नहि होइहै पछितैहो शिर आय परी ॥ १ ॥ डरत सुरेश सेष सुर जेते जेहते निशि दिन काल डरी ॥ बंदत चरण शंभु अज जाको बिनय करत उर प्रीति भरी ॥ २ ॥ जनकसुता जगदम्ब जानकी बिन समुझे तेहि मूढ़ हरी ॥ ले सिय चरण परो रघुबर के और उपाय न काज सरी ॥ ३ ॥ सुनत बचन कोपेउ दशकंधर सकल अंग महं आगि बरी ॥ बिश्वरूप बिधि बाम जाहिके कोटि यतन नहि काल टरी ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ जय रघुबीर दनुज कुल नाशन गरुड़ासन जन अभय मगहे ॥ चौदह सहस प्रबल अति खल दल खर दूषण जो बिदिश रहे ॥ छनमहं कीन्ह बिनास सबन को जैसे पावक तून दहे ॥ १ ॥ रावण शकुन सैन सब मारे मोद उदधि चहुंओर बहे ॥ सुर नर नाग धर्मद्विज धरणी हवे प्रसन्न सुख अचल लहे ॥ २ ॥ होय अभय तप रत मुनि गणभये निज सरूप सुख अचल चहे ॥ बिश्वरूप महराज रामको अति अगाध यश कवन कहे ॥ ३ ॥ राग भैरो ॥ सोई धीर सोई परम बिवेकी रहे यक्ष चितलाई ॥ द्वैत भाव कछु हृदय न दीखे ब्रह्म स्वरूप सोहाई ॥ १ ॥ अंतर बाहर भेद नहीं कछु सैंधव घन समुदाई ॥ लाभालाभ भाव नहि आवत ममता सेतु नसाई ॥ २ ॥ पाप पुण्य को लेप न होवे ज्ञान अनल दहिजाई ॥ रहत सुखी दुख लेसन आवत संग दोष तजि जाई ॥ ३ ॥ पवन अनल नभ भानु सरिस बिचरत सबदिवस बिताई ॥ बिश्वरूप सोइ गुणातीत है निज स्वरूप लखिपाई ॥ ४ ॥ राग भैरो ॥ प्रभु पालक सबकर आपेहो तव कृपा टरे भवतापेहो ॥ भक्तन को सतत प्रण राखत ऐसी रीति कहो कापे हो ॥ १ ॥ जाकहं प्रभु तुम निज करि मानत धन्य भाग है वाके हो ॥ निर्गुण निर्विकार अबिनाशी सुख स्वरूप चहुं व्यापेहो ॥ २ ॥ मैं अरु मोर तोर यह बंधन उदधि घटज हरि जापे हो ॥ बिश्वरूप बसो राम सदा हिय सहित बाण धर चापेहो ॥ ३ ॥ राग भैरो ॥ निशि दिन चेतो हरिको नाम जाको नाम अमित खल तारे ॥ गुण सागर सुखधाम ॥ १ ॥ महिमा अगम कहत श्रुतिजाको हरण दुरित भ्रम धाम ॥

जननि जनक सम पालक जनके जल थल नभ सब ठाम ॥ २ ॥ जे जन प्रीति सहित लो लावे घरी पलक छन याम ॥ सकल भुवन महं भागउ-दधि मोलहे अचल विश्राम ॥ ३ ॥ नहि कलिमांह अवर कछु साधन केवल नाम अकाम ॥ बिश्वरूप रघुबीर रटो नित जीवन धन अभिराम ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ मन अपने रूपहि अटको ॥ काया गढ़में देखु बिचारी बाहर नाहक भट को ॥ १ ॥ अपने में सब खेल रचो है जैसे लीला नटको ॥ आपुहि में सब लीन रहत जिमि बीज मांह तरु बट को ॥ २ ॥ अमित खानि पुतली कंचुक बहु होत सूत संघट को ॥ खोलि निहारो नजरि न आवे कछुक निसानी पटको ॥ ३ ॥ सुख सरूप आनन्द घन केवल दसंव दिशा में लटको ॥ बिश्वरूप जेहि समुझ परोहे सहजहि सब भ्रम सटको ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ भरमत बीतेउ दिन सब तेरो ॥ पर अपवाद निरत निशि बासर कंचन प्रीति घनेरो ॥ १ ॥ रसना रसबस बिषय बिवस भये नाम कबहुं नहि टेरो ॥ पर तिय नेह मेह रुचिधारे नहि हरि चरण बसेरो ॥ २ ॥ अमृत रस सुख नेकु पिवत नहीं भूलेउ झूठ झमेरो ॥ थोरे दिन महं समुझि परैगो जब करिहे यम जेरो ॥ ३ ॥ मानु कहा तजु अजहुं जगत सुख भजु रघुबीर सबेरो ॥ बिश्वरूप यह अवसर नीको गरभ कठल मन हेरो ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ करो मन ज्ञान भानु उजियारो ॥ ममता कुमति कुसंगति रजनी छूटत सब अंधियारो ॥ १ ॥ शमदम तोष सरोरुह सुन्दर बिगसेउ अति रुचि कारो ॥ काम उलूक लुकाने जहंतहं क्रोध कुमुद कहं जारो ॥ २ ॥ तारा गण सब हम हमार यह कुटिल कर्मदुख भारो ॥ भये हत तेज टरत तुरितहि सब पुनि नहिं लहत पसारो ॥ ३ ॥ बेद सारउर प्रगट भयोहे झलकत ज्योति अपारो ॥ बिश्वरूप धनि भाग ताहिको जो निरखत निशि बारो ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ ज्योति सरूप नयन बिनु हेरो ॥ कोटिन्ह रजनी पति दिन कर दुति सकुचि रहे तेहि नेरो ॥ १ ॥ भरत अगम सुख बरत रैनि दिन तेज पुंज छबि ढेरो ॥ शोक लोभ भय मोह सघन तम लेसन करत बसेरो ॥ २ ॥ करि बहु यतन रमत योगी जन परि हरि माया घेरो ॥ मगन रहत सुख सागर महं नित तजि सब इन्द्रिय झेरो ॥ ३ ॥ अजब बस्तु अति निकट सदा है ओट परेउ बहुतेरो ॥ बिश्वरूप जो देखन चाहो गहु पद सत गुरु केरो ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ मन तेरो लाज नसानी ॥ चलत कुपथ अभिमानी ॥ १ ॥ सचि सचि लछमी भवन संवारे पाछिल बात नजानी ॥ नारि नयनशर दुखके सागर अजहुंन

शठ पहिचानी ॥ २ ॥ काल कोलाहल करतरैन दिन चलन समय नियरानी बिश्वरूप कब हरिपद भजिहौ समुझत होत गलानी ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ ऊधो हरि कब दरशन देइहै ॥ काल किये सो बीति गयउ अब कबधौं यदुपति ऐहै ॥ १ ॥ नैनन नीर बहत निशि बासर कहु कब श्याम चितैहै ॥ शोक अनल जारत चहुंदिशिते कब होइ जलद बचै है ॥ २ ॥ कब प्रभु मधुर पियूष बचन चर मुरली टेर सुनै है ॥ बिश्वरूप मोहनदेखे बिन यमपुर प्राणासिधै है ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ ऊधो हरि सों कहियो संदेसो ॥ कहिगये और करत हौ औरै यह मन बहुत अंदेसो ॥ १ ॥ रसना रटत थकितभइ निशिदिन मन रहे चपल हमेसो ॥ तुम बिनु जीवन प्रभुनहि होइहै बिनु जलमीन मरेसो ॥ २ ॥ आवन कहेउ बचन सोइ पालियका भूलेउ दुसरेसो ॥ बिश्वरूप प्रभु प्रेम मगन सखी सुधि बिसरीतन केसो ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ मधुकर ते सखि कहे मुसुकाई ॥ ऊधव ते अस कहति सुनायके बचन माधुरी अति सुख दाई ॥ १ ॥ कारेते हम प्रीति करत नहि मधुर मुखर तब मोहि न सोहाई ॥ २ ॥ कहितुम प्रीति अवशि बिछुरोगे जैसे यदुकुल नलिन कुम्हाई ॥ ३ ॥ उड़ि उड़ि जात पलटि अंगत पुनि बैठत अंचल प्रीति बढ़ाई ॥ ४ ॥ तुमरी कहा कबहुं नहिं करिहौं कोटि भांति जो करिहो उपाई ॥ ५ ॥ कारे में गुण एक बड़ो है बरबस मन कहं लेत लोभाई ॥ ६ ॥ बिश्वरूप बिन मोहन जीवन बिधि ने उलटी चाल चलाई ॥ ७ ॥ बिहाग ॥ ऊधो कब ऐहैं ब्रज राज ॥ हमसबकर सुधि जाइ बिसारेउ भूले राज समाज ॥ १ ॥ एक पलक शत कलप बितातुहै नहि सूझत कछु काज ॥ करि अति प्रीति मोहनी डारे प्रभु नटवर सिरताज ॥ २ ॥ इन्द्रिय गण मति भयेउ थकित अति जिमि बटेर लखि बाज ॥ बिश्वरूप हरिसों कहियो असकरिये शरण की लाज ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ माता सोच करत मनमाहो ॥ कोमल पद मगु उकट बिकट अति वन घमंड चहुं पाहो ॥ १ ॥ अति सुकुमार गात रघुबर को कोउ पटतर जग नाहीं ॥ जनक सुता की काह कहों मैं सुनेउ न दुख परि छांही ॥२॥ रैनदिवस उर मांह बिकल अति पलक कलप सम जाहि ॥ यह दुख उदधि पार किमि चैहो कौन सुने कहो काहि ॥ ३ ॥ काह कहों बिधि की उलटी गति नहि बिबेक कछु आहीं ॥ बिश्वरूप सिय राम बिरहते प्राण अधम न नसाहीं ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ दशरथ राज दुलारे प्यारे करत सबे रखबारे हो ॥ कौशिल्या नन्दन जग बंदन हरत मोह मद मारेहो ॥ १ ॥ सबके प्राण प्राण पति जीवन दीनबंधु हित कारे

हो ॥ जो नित जपत टरत भव संकट काल कर्म दुख भारेहो ॥ २ ॥ जेहि अनादि अज श्रुति अस गावत भक्त हेतु वपु धारेहो ॥ सच्चित घन सुखसागर साहेब सब महं सबते न्यारेहो ॥ ३ ॥ लीला करत हरत मन जनके सुर नर होत सुखारेहो ॥ अस्तुति करत बिनय कर जोरे अशरण शरण उदारेहो ॥ ४ ॥ अवध पुरी बालक बड़भागी संगमें करत बिहारेहो॥ बिश्वरूप सोई बड़ भागी को कबि बरणै पारेहो ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ बालक बृन्द लिये रघुबर करैं केलि बिबिध फुलवारी ॥ करत गुंजार मनोहर मधुकर द्विज धुनि बहुरुचि कारी ॥ १ ॥ मानहुं मुनि जन रूप साज करि गावत प्रभु यश प्यारा॥ आनन्द उदधि भरो उरअंतर तनकी दशा बिसारी ॥ ३ ॥ फल अरु फूल लगे बहु भांतिन्ह भूमि नवे तरुभारी ॥ प्रभु से बिनय करत बहुभांतिन्ह करिप्रणाम अनुहारी ॥ ३ ॥ कोउ गावत कोउराग सराहत कोउ नाचत दैतारी ॥ बाजत ढोल मृदंग बीन डफ होत उमंग अति भारी ॥ ४ ॥ शरणत पाल करुणा निधि केशो अशरण शरण पुकारी ॥ बिश्वरूप प्रभु कृपा कीजिये सुनिये अर्ज हमारी ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ सखियां उपमा प्रभु की नहीं ॥ ऐसो रूप नहीं जग कोई हारेउ खोजि मही ॥ १॥ जाइ जलज जल मांहि भवन करि अनछन सकुचि रही ॥ श्याम तमाल गरब निज परि हरि सघन गहन को गही ॥ २ ॥ बारिद आइ सिधारेनिज थल ब्याज शरद को लही ॥ बिश्वरूप अनुपम सुखमा छबि दृग निशिबार चही ॥ ३ ॥ रागभैरो ॥ आस तोष हर नाम तुमारो ॥ जनपर दया करत तुरितहि प्रभुहरत फन्द दुखभारो ॥ १ ॥ श्रवण सुखद अति परम मनोहर जो करै नाम उचारो ॥ अघि मादिक तेहि पांयन लोटे कर तल सुगति सुधारो ॥ २ ॥ अस दयालता श्रवण सुनेनहि खोजेउं सब जग सारो ॥ बिनु श्रम योग यज्ञ बिनु साधन अग जग जीवहि तारो ॥ ३ ॥ फणि नायक सारद मुनि नारद गज मुख बुद्धि अगारो ॥ चरित सोहावन अमित कल्य सत गावत लहत न पारो ॥ ४ ॥ गुण अगार संसारभार हर जनहित परम उदारो ॥ बिश्वरूप प्रभु अंतरयामी जानत हाल हमारो ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ माया में भुलाने मन हरि को न जाना ॥ निशि दिन करत बिषय कोलदिनी मोह जाल अरुझाना ॥ १ ॥ रबिकर निकर सरिस जग सुखहै तूसठ नाहिं किये पहिचाना ॥ २ ॥ कहुं सपना संपति को धनिक भयेतेहि बस नाहक होत हैराना ॥ ३ ॥ अब करु हेतु रघुबर ते धन जन बिभव जानु दुख थाना ॥ ४ ॥ धीर सुजान सोइ जगमांही जो हरिपद लपटाना ॥ ५ ॥ बिश्वरूप

यह अवसर बीतें यम पुर में परि है पछिताना ॥६॥ भैरवी ॥ भरपरो जग की चतुरैया ॥ अपने गये अवर को खोवत करत कुपथ में प्रीति सदैया ॥ १ ॥ सपनेहु नहिचित धरम धरतु है असत कर्म को नाव चलैया ॥ २ ॥ कब हुन हरि सों हेतु करतु है हेतु निरंतर सुत पितु मैया ॥ ३ ॥ बिश्वरूप धिग राम शरण बिनु को सठ तो कहं पार लगैया ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ सखि नियरैलो तेर गवनवां ॥ समुझ करो का गहसि मनववां ॥ १ ॥ नैहर गैले गर्ब भुले ले वासन पैवे पिय के भवनवां ॥ २ ॥ ॥ जबउहं सहबे ताप बिबिधि बिधि तब तूं लगवे केहिके गोहनवां ॥ ३ ॥ बिश्वरूप पिय चेत सबेरे फेरि नहि ऐबे देश अवनवां ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ भूलेसि कातन रहेउ लोभाई ॥ क्रिम बिट भस्म अंत है जाको तो कह सो सुधि अजहुन आई ॥ १ ॥ गये बंचक वे नृप न रहे कोउ अवर तुच्छ की कवन चलाई ॥ २ पृथु पुरु रवा गाधीनहु सगये और ययाति नृपति समुदाई ॥ ३ ॥ गये नमुचि संबर भौमासुर कनक कशिपु गये तजि ममताई ॥ ४ ॥ रावण गये जासों डरत सकल जग तिह मारेउ छण महं रण जाई ॥ ५ ॥ बिश्वरूप गहु राम अचल पद अबकी भूल बहुत दुख दाई ॥ ६ ॥ भैरवी ॥ हंसा करो सरोवर बास ॥ आनद जल तहं पूरिरहो है प्रेम कमल सोहैपर गास ॥१ ॥ काई कपट रहत तहं नाहीं अति अगाध निशिदिन सुखरास ॥ २ ॥ घटत बढ़त कहूं सर नाहीं रहत येक रस बारह मास ॥ ३ तहं अंधियार लेश कछु नाहीं अमित भानु सम सदां प्रकाश ॥ ४ ॥ क्रूर काक तहं जात कबहिं नहिं उहां मिलत नहिं बिषय बिलाश ॥ ५ ॥ बिश्वरूप सत गुरु शरणागत मोति चुगे मिटे जग चास ॥ ६ ॥ भैरवी ॥ हरिबिनु मोकहं कछु न सुहाई ॥ गयउ बहुत दिन सुधि नहि पाई ॥ १ ॥ काह भये कछु बूझि न परतुहै पर बस भये कि सुधि बिसराई ॥ २ काहे को हरि प्रीति लगायो अब हरि बिनु मोहि कछु न सोहाई ॥ ३ ॥ बिश्वरूप ब्रज नाथ दरश बिनु पलक कल्प सम निशि दिन जाई ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ गहिरि नदिया कैसे पार लहो बहुत अंदेशा चित में रहो ॥ आरत हरण सुनत हों नाम प्रभु सत्य करो जस बेद कहो ॥ २ ॥ अगम लहरि कछु सुझिन परतु है परेउ मांझ बहु ताप सहो ॥ ३ ॥ बिश्वरूप प्रभु संकट टारो आपन जानि के बांह गहो ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ गये बहुत दिन रहि गये थोरे ॥ अजहुं चलसिना प्रभु की ओर ॥ १ ॥ बिषय लहरि महं भूलि गये का आइ तुलाने काल कठोर ॥ २ ॥ किये भजन को कौल गर्भ में बाहर आवत परि गये

भोर ॥ बिश्वरूप अंतहु पछितै हो हरि बिनुनाहि मिटे दुख घोर ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ चलना अकेे संग नही रे ॥ सुत बित नारि तु हित करि मानत सोतो के तजि इहांई रहीरे ॥ १ ॥ बहुत नृपनन्ह को राज गयो है रहत न धन मद को समही रे ॥ २ ॥ जाके संग बहुत दल सोभित सो सम छिन महं जात बही रे ॥ ३ सूर बीर केते ह्वै चलि गये जाको बल को सकत कही रे ॥ सभ नर अंध भये नहि सूझत निशु दिन रहत कुपंथ गहीरे ॥ बिश्वरूप गहु राम शरण अब भव जल अगम जो पार चही रे ६ ॥ भैरवी ॥ भारि नदिया देखि बहुत डरों अब केहि भांतिनि बाह परों ॥ १ ॥ धार अपार नहीं ठहरावा ता महं जन्तु समूह भरो ॥ २ ॥ जो पै सत सो पलटि न आवत गाह मकर गहि ग्रास करो ॥ ३ ॥ नाव बेरा कछु बुझि न परतुहै केहि बिधितें अब पार तरों ॥ ४ हेात चकोह भयंकर नाना सभ कर धीरज निरखि टरो ॥ ५ ॥ ऐसन हित कोइ बुझि न परतु है जासन मेरो काज सरो ॥ ६ ॥ राम नाम दृढ़ नाव करे अब कन हरि या गुरु चरण धरो ॥ ७ ॥ बिश्वरूप रघुनाथ कृपा तें सहजै भव जल पार तरो ॥ ८ ॥ भैरवी ॥ रघुबर अजब तमासा तेरो ॥ नटवर सम प्रभु खेल कियो है जीव फसे तेहिफेरो ॥ कोउ भूले राजभोग सुख कोठममता फन्द घनेरो ॥ १ ॥ नारि पियारिबहुत मानत उर भयोहै काम को चेरो ॥ परबस भ्रमत सदा कपि समनित नहि थिरता छनकेरो ॥ २ ॥ तृष्णा उदधिबढ़त छनछन अतिलाभ शशिहि जब हेरो ॥ बढ़ो तरंग ढपे सब दृग चहुंदिशि भयो अंधेरो ॥ ३॥ गारुड़ि तब स्वरूप श्रुति संमत जब उर करै बसेरो ॥ बिश्वरूप भव जाल छुटै तब मुनि जन सबै निबेरो ॥ ४ भैरवी ॥ गहुशरणागति मन रघुबरको काभूलेसि जग नातारे ॥ ताहि बिसारत मूढ़ मोह बसि तजि अमृत बिषखाता रे॥१॥ रिपुके बंधु बिभीषण आरत परे चरण जल जाता रे ॥ रिपु मति उरन गहे करुणानिधि दीनबंधु जनत्राता रे ॥ २ ॥ कीन्ह अस कलंक पति कहं प्रभु सजल नयन मुसुकाता रे ॥ ३ ॥ भेटत करि सतकार बार बहु हर्ष न हृदय समाता रे ४ ॥ कोमल चित जनअघ न गहत हरि जिमि जननी शिशु रातारे ॥ बिश्वरूप अस प्रभु उदार भजु मन बांछित फल दातारे ॥ ५ ॥ भैरवी दानि शिरोमणि राम सुजान प्रणत कल्प तरु कृपानिधान ॥ १ ॥ अभिमत दाता भव भय त्राता पालन कर्तासभै समान ॥ जन सुकंठकोपाप नेवारो बालि अधम हति एकै बान ॥ राजबिभीषण पायो है लंकको रावण जीति समर मैदान ॥ बिप्र सुदामाकियो अयाचक सकल

भुवनमें यश प्रगटान ॥ बिश्वरूपप्रभु कृपा करौ अवहरो मोहममता अज्ञान॥४॥ भैरवी ॥ त्रिगुण तनीया सभै अरुझान ॥ आपन रूप नहीं पहिचान ॥ आवत जात भ्रमत बहु भातिन्ह काम क्रोध मदमें लप टान ॥ १ हरि पद प्रीति करत नहि कबहूं बिषय चाह दिन दिन अधि कान ॥ परमारथ हिय नाहि गहतु है स्वारथ में सब दिवस खि रान ॥ ३ ॥ भक्ति प्रभाव लखत नहि कबहूं माया मोह को हित करि म न ॥ इन्द्रिन के बसि भूलि गयो है निज करनी नपरत पहि चान ॥ बिश्वरूप भ्रम त्यागि भजो हरि सो जन जग महं चतुर सुजान ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ सोई गवबले मनुवां मोर ॥ १ ॥ राखि सके असकोउ जग नाहीं इहा न बस गति होइ है तोर ॥ २॥ जाना टूर नही कछु सामर कैसे जैबे राह कठोर ॥ निर्दय दूत कहा नहि माने कितनेा बिनय करों करिसोर ॥ ३ ॥ अवर उपाय नहीं बचिबे की बेगिजा- हु तुम हरि की ओर ॥ बिश्वरूप प्रभु शरण गहहु अब तब मिटिहै भव भयदुख घोर॥ ४ ॥ बिहाग ॥ मस्ताना मन मत वारे रहा निरंतर एकता रे ॥१॥ जिमि उन्मत फिरत है जहं तहं सुधिन रहतहै तनकारे ॥ जो कछु भये बहुरि जो होइहै जो बर्त्तत नहि चित धारे॥ २॥ काम क्रोध का तार कठिन है ज्ञान अनलते तेहि जारे ॥ प्रेम पियाला पियेा मगन होय सकल बस्तु महं यह सारे ॥३॥ है यह अगम मिलत सुधि नाहीं खोजत खोजतसब हारे ॥ सतगुर कृपा कोइ जन पावतपियत छूटेजग ब्यवहारे ॥ बिश्वरूप घर अचल बैठिरहु आवा गवनते भयेन्यारे ॥ ४ ॥ परज ॥ सून भवन मन करो बसेर ॥ जहवां चन्द सूर कोउ नाहीं राति दिवस नहि सांझ स- बेर ॥ स्वर्गनरक तहं लोक नहीहै धर्मअधर्म न कछुक निबेर ॥ नहिं छितितेज पवन नहि पानी नहि माया कर लागत घेर ॥ २ ॥ चर अरु अचर कोऊ तहं नाहीं नाहि सुरासुर कर्मके फेर ॥ ऊंच नीच तहंवां कोऊनाहीं नहि है साहेब नहि कोउ चेर ॥ ३ ॥ विश्वरूप हय अलख पुरुष यक जेहि समुझे सभ मिटि है अंधेर ॥ ४ ॥ परज ॥ भजुमन दशरथ नन्दकु- मार ॥ भूमीद्विज सुर भार हरण हरि लिये जनहित अवतार ॥ ॥ १ ॥ रावण सकुल सदल मारे इत करी उते लीला रुचिकार ॥ उत खल कठिन कंस कहं मारे टारे इत मही सुर भार ॥ २ ॥ उग्रसेन कहं और बिभीषण इत उत कीन्हभुवार ॥ पावनि नीर बहति सरयू इत भानु सुता उत धार ॥ ३ ॥ इत चरित्र बन हतेउ ताड़िका उत बक भगिनिही मार॥ गौतम तिय तारे इत प्रभु उत धन पति तनय उबार ॥ ४ ॥ राम कृष्ण बर बेष मनो-

हरसिय राधा बर प्यार ॥ बिश्वरूप प्रभु भक्त हेतु करै मथुरा अवध बिहार ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ ऊधो येहें की नहि ब्रज लाल ॥ एक पलक सत कल्प बितत है हमसब प्रभु बिन रहत बिहाल ॥ १ ॥ कोउ सखि कहत अबहि नहि येहें भूलेउ धन मद राज बिशाल ॥ २ ॥ हम सब ग्वालिनि कवन पुछत है जेहि सेवत अज शिवधन पाल ॥ ३ ॥ लक्ष्मी जेहि पद नांहि बिसारत रहति निरंतर तजि निजचाल ॥ ४ ॥ प्रीति करत थिर नहि नन्द नन्दन छन में बिछुरै छन में दयाल ॥ बिश्वरूप हरि प्रेम मगन भई सुत बित बंधु भुलेउ जगजाल ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ राम ब्रह्म व्यापक निरधार ॥ सदाप्रशांत अभय निशि बासर जंहवां द्वैत नहीं व्यवहार ॥ १ ॥ बोधसरूप शुद्ध सुख सागर सब कारज कारणते न्यार ॥ २ ॥ बेदहु की जहां गति न परत है भेद प्रपंच करै पैसार ॥ बिश्वरूप जेहि संमुखि परो है छूटेउ साधन कर्म अपार ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ भूलेमनुवां भटका खात तेहिते जनमि जनमि पछितात ॥ १ ॥ आवत जात चर्ख चौरासी भ्रमत सदाई नहीं थिरात ॥ कर्म कठिन भरभेट देत है शिर परसहत महा दुख घात ॥ २ ॥ बिश्वरूप हरि शरण अजहुं गहु भली भांति सबबनी हैवात ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ अब मोहि निज जानो रघुबीर ॥ प्रणत पालकरुणा निधान हरि सेवक बस श्रुति सेतु शरीर ॥ १ ॥ सकल सुरशुरनमतसदा जेहि कोउ संमुख न परत असधीर ॥ पालत मातु पिता जिमि बालक पालन करत हरत सभपीर ॥ इन्द्री गणदुख घोर नेवारो चरण कमल मन देहुगम्भीर ॥ २ ॥ अबकी बिनय मोर मति डारो अर्ज सुनो प्रभुचित होय थीर ॥ बिश्व रूप प्रभुदीन बंधु हो अशरण शरण हरो जनपीर ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ सखि हियगहि लेपिय के शरणवां ॥ चेतु सबेरे फेरि न अवन वां ॥ १ ॥ सेंदुर सत्य सोहाग बनो है पहिरो सुन्दर भक्तिगनवां ॥ ज्ञान बिराग बसनझल-कावो निशिदिन होइरहु पियके मगन वां ॥ २ ॥ लोक कानि यह सवति बड़ी है तेहि के बीचका ताप सहन वां ॥ बिश्वरूप यह समय चूके तें मेटिहे नहि जगजन्म मरणवां ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ को दयाल रघुबर समभाई ॥ मुनि जन हेतु गवन किये बनके अवधराज सुख सब बिसराई ॥ १ ॥ देखि राज सुरपति मन चाहत चिण समान सो मनहि न आई ॥ सकल मुनिन कहंदरशन दीनो निरखत नैनन नाहिं अघाई ॥ २ ॥ निरखि मगन भए सुधि सब बिसरी जैसे रंक सकल निधि पाई ॥ तप फल भएउ गयेउ क्रतन के जैसेवर्षातरु समुदाई ॥ ३ ॥ अस्तुति करत भरत उर आनन्द

जयकृपाल जयजन सुखदाई ॥ फल अरु फूलदेत भरि दोनन्हलेत राम अति प्रीति जनाई ॥ बिश्वरूप गहु रामचरण अबछेाडु सकल मनकी चतुराई ॥ १ ॥ परज ॥ वादिन भजन बिनु जन्म कियेरे ॥ ना सतसंग न साधु की सेवा ना बिप्रन के दानदियेरे ॥ १ ॥ तीरथ बरत नहीं कछूकीन्हो पर उपकार न कबहुं कियेरे ॥ २ ॥ कथा सुधारस धार बहतु है नाहि श्रवण पुट कबहुं पियेरे ॥ ३ ॥ बिश्वरूप रघुवीर शरण बिनु कीट सरीखे जगमें जियेरे ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ गहुरे निजसरूप मन भावन ॥ तजु प्रपंच सब अगम मोह कर दारुण शोक बढ़ावन ॥ १ ॥ अलख अगोचर नेति नेति जेहि करत है बेदसिखावन ॥ अगम अनादि सनातन सुख घन शुद्ध निरंजन पावन ॥ २ ॥ जैसे रविप्रतिबिंब अमित घटदीखत अमित रूप छबि छावन ॥ नहिं परमारथ भेद वस्तु कछु केवल एक सोहावन ॥ ३ ॥ लवण पूतरी परेउ अगम जल सके कवन बिलगावन ॥ बिश्वरूप अपने पूरण भये फेरि रहत नहिं आवन ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ बिनु हरि मन सुख कतहुं न पैवे ॥ कोटि यतन करि जो जग धैवे ॥ सुर तरु आकढाक सम तो कहं अमिय भोजन चिखसम खैवे ॥ १ ॥ करतल बिभव बिराने होइ है नरक सरिस स्वर्गहु जो जैवे ॥ २ ॥ हित अरि होइहै गुण औगुण सम बिबिध भांति सेवा जो लैवे ॥ ३ ॥ बिश्वरूप येकराम भजन बिनु पर बसहोय अंतहु पछितैवे ॥ ४ ॥ठुमरी ॥ जग सुख जन्म क्या खोयारे देवाने बाहवा ॥ नजीरी कूंचकी गाजे क्यों गाफिल होतरे काजेगरभ तो फेरसों ताजे ॥ १ ॥ रैनदिन सैन के राजे जों बालुन घेरि के छाजे बिषय सुख मे हसों दाजे ॥ २ ॥ समुझि जब जगत् सों भाजे जो कानन दाव कों लाजे लखेारे विश्वमै आजे ॥ ३ ॥ खेमटा ॥ छांड़ो नेहियां रसीले छबीले हरि अपने मुख भवन बातु कहि नागर रंग रंगीले ॥ १ ॥ ब्रजललना दृग चपल बाण गहिमारत मोहि गर्सले ॥ बिश्वरूप मन मोहन प्यारे काकरिहोरे छबीले ॥ २ ॥ भैरो ॥ हरो क्यौन मान रामाहो ॥ अपनो जन हरि जान ॥ भय हरि लीजे सुख पद दीजै देहु ज्ञान के बान ॥ १ ॥ अगजग कर्ता सब को हर्ता मोह तिमिर को भान ॥ प्रभु मुखतेरो मुनि हित हेरो बिश्वरूप के ध्यान ॥ २ ॥ भैरो ॥ राम कृपाल दयानिधि के शो पतिराखेा प्रभु तुमहि बड़ाई ॥ एक भरोस आस हरितेरो अवर नहीं मोहिद्वितिय सहाई ॥ १ ॥ गति मति भुक्ति दानिसबही कहपालत यथा भाग समुदाई ॥ सकलचराचर कर्ता केवल इन्द्रजाल मयजग दरशाई ॥ २ ॥

ऐसी प्रतीति भई प्रल्हादहि सुखी भये सब भय बिसराई ॥ पितु कृत ताप दाप नहिं ब्यापेउ जिमि अनीशकर्त्तव टरिजाई ॥३॥ जल थल सरिस मगन होय सोवत बिष अमृत पावक शितलाई ॥ महा मत्त कुंजर पगुतन पर्राई सम नहिं भारबुझाई ॥४॥ मारण मंच किये सबद्विज गण भये बिपरीत गिरे मुरछाई ॥ बिश्वरूप जेहि प्रभु रखवारो काल प्रचंड निकट नहि आई ॥ ५ ॥ परज ॥ देखो देखो मुरलिया श्याम को ॥ अमित चन्द रबि दुति उजियारी निरखत मन बिश्राम को ॥ १ ॥ सकल निगम तें पूरि रही है आनन्द कर छवि धामको ॥ त्रिभुवन मन मह पटतर नहिकोउ हारी सब शशि आन को ॥ २ ॥ बिश्वरूप मोहति मन मोहन करत अधररस पानको ॥ ३ ॥ भैरो ॥ अद्वय ब्रह्म सनातन पूरण केवल एक अधारो ॥ स्वगत सजाति बिजाति भेद ते रहित शुद्ध सुख सारो ॥ १ ॥ निजगत भेदरहत जिमि तरुमहं पा-तफूल फल डारी ॥ भिन्न भिन्न तरु भेद सजाति गिरि बिजावे बेवहारो ॥ २ ॥ त्रिबिध भेदनहि घटत अकलमहं असमत वेदबिचारो ॥ अचल अम लअजज्योति अनूपम बुद्धि बचन मन न्यारो ॥ ३ ॥ जिमि माला महं अहि बपु भाषत पाइ कछुक अंधियारो ॥ तिमि निर्गुणमहं नाम रूप दोउ गुण मयभेद अपारो ॥ ३ ॥ तजि त्रिपुटीरति भेद जनित मति हति सब बिषय विकारो ॥ बिश्वरूप निज बोध आत्मा सोईरूप हमारो ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ माधव मनकृत जग ब्यवहार ॥ जोमन जीति कियो बस अपने सोजन भव तेन्यार ॥ १ ॥ जोइ जोइ गुणत होत सोइबपुनट वर सम टक सार ॥ छन महं भुवन सकल फिरि आवत जिमि सबठौर अगार ॥ २ ॥ नारि नयनअति प्रबल सिलीमुख जब बेधत उरपार ॥ तासु सरूप होत आतुर तब भूलत सकलबिचार ॥ ३ ॥ रसनाते रसस्वाद पाई बहु धावत करतअपार ॥ पाये हर्ष बिषाद मिलेबिनु अरिहित गहतबिकार ॥ ३ ॥ सबस्वरूप सुखरूप भानु जब हृदय करै उजियार ॥ बिश्वरूप मन दोष अमित तम नसत न लागे बार ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ रघुबरजी से आदर चहुरे ॥ जेह आदर तें सब घर आदर पुनि न अनादर लहुरे ॥ १ ॥ जाको भूति भुवन महं ब्यापी कजअखं-डित बहुरे ॥ आज्ञा करत सुरासुर जाको कर बांधे सिरमहुरे ॥ २ ॥ जाके बलतें शेष शीस पर सरस प्रशम महिरहुरे ॥ येकलिकाल कठिन पातक दल नाम अनलते दहुरे ॥ ३ ॥ निर्बल केवल श्रीकरुणा निधि जो दृढ़ पद रज गहुरे ॥ मानुष देह साज भल पायो परबस दुख जनि सहुरे ॥ ४ ॥ कमल नयन जनताप बिमोचन तासे बिनय निज कहुरे ॥ बिश्वरूप प्रभु अधम

उधारण केहि अपराध तजहुरे ॥ ५ ॥ बिहाग॥ माधव मनकी मैलिहरो ॥ बिनु तव कृपा कटाच्छ महाप्रभु कबहुन फन्दटरो ॥ १ ॥ मुकुर मलीन नाहि मुख दीखत जो सनमुखहि धरो ॥ तिमिउर बस्तु दीखत नाही हरि ऐसो ओट परो ॥ २ ॥ मनकृत बेग अनेक बिबिधि बिधि सहस प्रबाहभरो ॥ जीवनि-काय बहतन लहत थिति कोटि उपाई करो ॥ ३ ॥ सबको पतिहित मति दायक असदीखत नहि दुसुरो ॥ सिंधु अगममहं उपल तरणि चढ़ि कहहु कवन उबरो ॥ बिश्वरूप प्रभुगहु शरणागति को भवजल न तरो ॥ मेरिबेर प्रभु देरिकिये का मन अतिशोक गरो ॥ ५ ॥ भजन ठुमरी ॥ काहभये बहु भेष बनाये जोदिल रामन आयारे ॥ लोभ बिबस मन छोभ बढ़ावत रसनाबस नित धायारे ॥ गहत कुसंगकुचाल कुमारगक्रोधके कोशभयारे ॥ १ ॥ परतिय परधन प्रीति निरंतर परअपकार बढ़ायारे ॥ निगमागम गुरुमत नहिमानत कल्पित मतठर भायारे ॥ ॥ २ ॥ पूजा हेतु दंभबहु बिधि करे देखरावत बहु मायारे ॥ एकोछन हरि भजन करत नहिकपट बजार बसायारे ॥ ४ ॥ देखतहू भये अंधनैन दोउ नहि समुझत समुझायारे ॥ बिश्वरूप जब यम गणऐहैं भुलिहै सकल उपायारे ॥ ५ ॥ परज भजन ॥ देखोरे जग चीन्हत नाही ॥ अकल अनीह जाहि श्रुति गावत सोबैठे अपनेघट माही ॥ १ ॥ शुद्ध सनातन ब्यापक चेतन कोटि चन्द रबिद्युति समुहाही ॥ २ ॥ रबि करनीर निरषि नितधावत तृषा न मिटे अधिक अधिकाही ॥ भयेदृग अंध बंधनहि सूझत जैसे हठि कपिकीर बंधाही ॥ ३ ॥ चिन्तामणि तजि कांच गहतुहै भटकत फिरत नकबहुं थिराही ॥ तजि आत्मा सुखसिंधु मे हबस पिवत ओसकण कैसे अघाही ॥ ॥ ४ ॥ सुतबित देहनेह अति बाढ़ो सपन बिभव मानत थिरताही ॥ बिश्वरूप गुरुघट संभव बिनुभव दुर्गम जलनिधि नसुखाही ॥ ५ ॥ साम कल्याण ॥ मेरेहिये बसोधनु णनी ॥ चितनहि टरत हरत दृगदृग बरकर सर लसत बसतमनहि नितकंज नयन छबि ऐनबैन कहि मतियां हरत मुसुकानी ॥ १ ॥ गति चतुराई चित लेतहै चोराई चहुं चमक छटाई तड़िताई पटछाईहै ॥ बिश्वरूप चित लज्जित मदन भयेनिरषि बदन छबि खानि ॥ २ ॥ साम कल्याण ॥ हमभले तुम्हें पहि चानी ॥ थिर नहि रहत गहत कर यदुवर रसबस चपल हरत चितवनि चितकंज बदन छबि सदन शिरोमणि मन मोहन छबिखानी ॥ १ ॥ नन्द कीदोहाई तोहि कहत कन्हाई अबछोड़ु चपलाई लरिकाई न भलाई है बिश्वरूप ब्रजजन बसकिये कहिबयन सरसरस खानी ॥ २ ॥ भजनठुमरी ॥

मनचेतो राम सुजान सपने समजगरे ॥ काम कुटिल दुखमूल शूल प्रदतेहु बसि अधम भुलानि बिषयारस मगरे ॥ १ ॥ कनक कामिनी कोश तेप धरे भटकत जन्म सिरान झूठे चिन्तगरे ॥ चेतनतन मनुज को पायो सोनहि समुझ अपान जैसे जडगनरे ॥ २ ॥ बिश्वरूप शिरकाल बैठुहटि अवशि हतै गेप्रान बचिहो केहिलगरे ॥ ३ ॥ भजन दुसरी ॥ मनभजिले राम उदार ॥ निशि दन छनछनरे॥ मातुउदर दुख लहेउ बिबिधि बिधि कीन्हें भजनकरार ॥ भूले तन धनरे॥ १ ॥ अजहुं कुमग तजुशुभ मग यम सजु जग सुख टरत न बार जैसे रजकनरे ॥ २॥ करिबहु यतन कहेउ गुरुहित मति बेधत नाहि पहार जैसे सर घनरे ॥ ३ ॥ बिश्वरूप प्रभु एक शरण बिनु सुनि है कवन पुकार जब गहे यम गनरे ॥ ४ ॥ भजन बिहाग ॥ अब जिन बिछुरो राम दृगनतें ॥ गुण निधान करुणा के सागर ममता हरु बिषयनतें ॥ ॥ १ ॥ तब मुख चन्द चकोर होउ मन प्रीति पपीहा घनतें ॥ तेरो चरित अगाध बारि मन मीन पीन निशि दिनतें ॥ २ ॥ दृग भरोस आशा दृढ़ तेरो दूसर आस न मनतें ॥ हसनि चलनि बोलनि मन भावनि निरखो प्रभु अनुछनतें ॥ ३ ॥ काम कुटिलता भय दुख दाई बेगि टरो यह तनतें ॥ बिश्वरूप रघुवर सुर तरु तजि याचो काहि कृपिनतें ॥ ४ ॥ परज ॥ करि सुर काज अवध प्रभु आये ॥ सहित लषन सिय राम बिराजत अगणित रति पति छबि सकुचाये ॥ १ ॥ पुर जन कंज राम रबि निरखत बिगसे मोद सरस उर छाये ॥ निरखत भरत परे प्रभु चरणन्ह मगन भये तन सुधि बिसराये ॥ २ ॥ मिलत सप्रीति भरत सें प्रभु जिमि राका शशि जल निधि एकठाये ॥ ३ ॥ एकहि बार मिलें सबतें प्रभु धरि प्रति रूप न कोउ लखि पाये ॥ गुरु बशिष्ठ मुनि वृन्द सबै मिलि रामहि तिलक दिये हरषाये ॥ बरषत कुसुम देव मुनि हरषत ब्रह्म नन्द मगन समुदाये ॥ बिश्वरूप प्रभु राम राजतें सकल भुवन के शोक नसाये ॥ ५ ॥ परज ॥ राधिका हरि रास लोभाये ॥ कुंज लता बन सघन सोहावन तरु फूले दल हरित सोहाये ॥ ॥ १ ॥ राधे केश कुसुम रु बिकारी निज कर रुचिर हार पहिराये ॥ कुमुद बंधु कर रुचि कर सोहै बन प्रकाश चहुं ओरहि छाये ॥ २ ॥ मुरली टेर कियो मधुवन हरि सुनत सखी मन मोद बढ़ाये ॥ बिश्वरूप मोहन संग बिहरति सब सखि छन समर इन बिताये ॥ ३ ॥ बिभास ॥ अवध पुरी सरयू तट बिहरत रघुराई ॥ सघन बन सोहावन अति सुन्दर सुर पुर समान निरखत मन खैंचि लेत मोद हिय बढ़ाई ॥ १ ॥ भरोहै सुगन्ध अ-

मित लहत नाहि कोउ प्रमित सुमन फल अपार लगे महि तरु मह जाई ॥ अलि गन गुंजार करत बिबिध बिधि प्रमोद बढ़त पीवत रस मधुर खानि रहत नित लोभाई ॥ २ ॥ निर्तत हे मोर जाति गान करत कीर पति कोउ द्विज राम चरण निरखि ध्यान लाई ॥ ३ ॥ पंछी फल रुचिर खात हर्ष नाहि उर समात कंचन मय भूमि सकल सोभा निधि छाई ॥ बिश्वरूप राम धीर बिचरत कर धनुष तीर सीता लछिमन समेत आनन्द अधिकाई ॥ ४ ॥ ठुमरी ॥ बिनु रघुबीर न जरनि नसाई ॥ यह जग जाल कराल सालप्रद छुटै न अवर उपाई ॥ १ ॥ ध्रुव प्रहलाद अंब ऋषि नारद सनकादिक समुदाई ॥ राम नाम रस अमिय पान करि बिहरत शोक बिहाई ॥ २ ॥ बालमीक घट संभव मुनिवर जपेउ नाम मनलाई ॥ ज्ञान भवन सुख रूप भयो है चहुं दिशि कीरति छाई ॥ ३ ॥ अबहूं मनु जानु हित अपनो छोड़ो आश पराई ॥ बिश्वरूप सुख सिंधु दानि हरि केवल गहु शरनाई ॥ ४ ॥ भजन ताल जल्द ॥ जय जय अवधेश सुवन रघुबर सुखदाइ ॥ जगत जाल तिमिर हरन दीन दानि सकल शरन नटवर सम खेलकरन लीला दर्शाइ ॥ १ ॥ रावणारि असुर मारि द्विज सुर महिताप टारि मुनिजन होय अभय ध्यान चरण में लगाई ॥ अस्तुति सब देव करत सुमन वृष्टि सुभग होत बाजत बाजा अनेक दिशि दिशि धुनि छाई ॥ २ ॥ नाचत सब देव बधू मुनिजन मिलि गान करत निरखत हिय मगन होत आनन्द अधिकाई ॥ ३ ॥ कपि दल सब निकट ठाढ़ चरण कमल प्रीति बाढ़ लंका पति भूषण पट सब के पहिराई ॥ ४ ॥ बिश्वरूप रामदास करत नाहि जगत आश रिद्धि सिद्धि बिभव सबै आपुहि चलि आई ॥ ५ ॥ राग टोड़ी ॥ हरहु राम काम घोर मोर के घटासे ॥ रैनिवार चित चकोर बिषय चन्द प्रेम कीन्ह चरण कमल छाड़ि दीन्ह मोह मंद फांसे ॥ १ ॥ तड़ित चमक सघन गेह तासों प्रेम अधिक कीन्ह आपनो निहारि लीन्ह मूढ़मंद आसे ॥ २ ॥ जात कुपथ करि कुसंग निगम बोध चित न दीन्ह कोटि भांति रोध कीन्ह योग युक्ति पासे ॥ ३ बिश्वरूप प्रभु रमेश कमल नयन नयन कोर हेरि हरो कुमति घोर सकल शोक त्रासे ॥ ४ ॥ राग टोड़ी ॥ रवि ललाम श्याम चोर भोर के छटासे ॥ ग्वाल बाल संग बटोरि कुंज भवन केलि कीन्ह अमित मोद सबै दीन्ह प्रेम पुंज प्यासे ॥ १ ॥ झलक रुचिर ललित केश कमल कोस भंवर पांति मणि समूह भांति भांति तड़ित घन घटासे ॥ २ ॥ बसन कसन कटि सुदेश लसित हार देव छन्द ज्योति

झनक सूर चन्द मन्द मन्द हासे ॥ ३ ॥ बिश्वरूप छबि अपार चकितहोत मदन हेरि सकुचि सकुचि दृग न फेरि सरिस कहां कहांसे ॥ ४ ॥ खेमटा ॥ न हकरे बितत सब दिनवां ॥ नहि हरि भजन शरण नहि गुरुके हूं हैयम गण गांहकरे ॥ १ ॥ कुमति कुसंग सनेह बढ़ाये मोह भार शिर बाहकरे ॥ बिश्वरूप पुनिपुनि पछितैहो पैहोदुख डर दाहकरे ॥ २ ॥ मलार ॥ देखोरी मायाघन चहुंघेरे ॥ कपट कुसंग कुभाव कुमतिजल आठयामबसेरे ॥ ज्ञान ध्यान छबि चांद सूरबर ज्योति ढपैचहुं फेरे ॥ भयो अंधियार बिचार नसानो सूझत रूप नमेरे ॥ २ ॥ सूखेव धर्मजवास आश दुख लतालालित बहुतेरे ॥ बिश्वरूपगृहगुरुको शरण गहोतब यह द्वंदकटेरे ॥ ३ ॥ मलार ॥ देखोरे बिगरि गईसबबात ॥ जहां मनोराज साजसुख कैसो झूठो ज्ञानकनात ॥ १ ॥ गहुगुरु चरण कंज सुखसागर सोभन रितु बसंत ॥ सहज सुभाव ज्ञानघन बर्षत आनंद वारि सोहात ॥ २ ॥ मनोराज दुखद्वन्द फन्द भ्रमतपत धूरि बिलात ॥ बिश्वरूप जिनको सुधरो है सोगुरु शरण समात ॥ ३ ॥ छन्दमधुकर ॥ रघुबीर धीर कृपाल गहु मन शरण सुखघन कारणं ॥ अवधेश बाल दयाल तरहरि गहन अघदल बारणं ॥ १ ॥ मुनिबंश षटपद रावणारि रमेश राजित भूषणं ॥ खरदूषणारि मुरारि अजरुचि तेज अगणित पूषणं ॥ २ ॥ श्री रावणारि रमेस माधव पुरारि नरहरि श्रीधरं ॥ सर्वेश शेष सुरेश मुनिवर सेव्य चरण सुखावहं ॥ ३ ॥ नरकारि ईश व कारि प्रभु गोपाल नन्दन चिद घनं ॥ बसुदेव नन्दन नन्द सुतगो गोपी जीवन मुनि धनं ॥ ४ ॥ शिरछत्र धरमुख्य मुरलि धर भगवन्त भक्त सयापहं ॥ शरचाप धर रघुबंश बर श्रुति गेय सुयश सुखावहं ॥ ५ ॥ बल बिश्वरूप नगारि रिपु सनकादि व्यास सनातनं ॥ मिथिलेश नंदिनि नंदकर हर नाथ भवभय जातनं ॥ ६ ॥ राग कल्याण ॥ चित्रकूटि पावन थल हरण सकल पातक मल निवसत रघुबंश बीर भक्तन सुखदाई ॥ मुनिजन समूह धीर राम चरण प्रीति थीर प्रभु के आगमन सुनत दर्शनके आई ॥ फूलनकी अमित जाति माला गुथि बिबिधि भांति प्रभुके पहिरावत उर आनन्द अधिकाई ॥ २ ॥ निर्गुण हरि निर्विकार अज अनादि जगआधार महिसुर महिभार हरण बपुके प्रगटाई ॥ ३ ॥ गावत गुण सहित प्रेम भक्तिभाव अचल नेम जोरिकर बिनय करत बचन बर सुनाई ॥ ४ ॥ बनचर सबजीव जाति पक्षीसब बिबिध भांति निरखत मन सुखी होत बिहरत हर्षाई ॥ ६ ॥ सबकर सबहीसों प्रीति काहुसन कछुना भीति साधुभाव सरिस सबै बयर के बिहाई ॥ ७ ॥ बिश्वरूप प्रभु उदार

त्रिविध ताप हरनि हार खलदल हति विषम द्वन्द अभय मुनि बसाई ॥ ८ ॥ भैरवराग ॥ याछबि बसी नजरियां सजनी मोहन दृग मोहेरे ॥ चपल अमल कुंडल कचकारे बदन कंज अलि घेरे ॥ १ ॥ श्याम कंज तन मंजु मनोहर भूषण रुचिर घनेरे ॥ कोटि काम छबि धाम श्याम को निरखि सकुचि मुख फेरे ॥ २ ॥ तिरिछे चाल बाल संग बिहरे दे मुख मुरली टेरे ॥ पद पराग अनुराग निरन्तर बिश्वरूप मन मेरे ॥ ३ ॥ मलार ॥ मोहन रहत नेकु न थीर ॥ घन समान चंचल सखि मोहन जैसे दीप समीर ॥ कबहुं भवन कबो बनहि सिधारत कबो यमुना के तीर ॥ १ ॥ युग समान युवती जन को दिन कौन लखै यह पीर ॥ बिश्वरूप सखि हरि बिनु देखे होत नयन झरिनीर ॥ २ ॥ आसावरी ॥ नन्दलाला हो भव दुख मोचन नाम ॥ शरद सरोरुह दृगयुगल शोभा सब सुखदानि ॥ दशन पांति दाड़िम घनो अरुणअधर छबिखानि ॥ निरखत चित्तबिसराम ॥ १ ॥ भृकुटि झलक सोहावनो निज कर रचे सुजान ॥ कुसुम चाप धर चाप के छबि धन गर्व हेरान ॥ सुमिरत पूरण काम ॥ २ ॥ कुंडल छबि कबि को कहै चहुंदिशि ज्योति निसान ॥ मरकत मणि गिरि पर उदित प्रात युगल जिमि भान ॥ जनत महारक धाम ॥ ३ ॥ कुटिल केश मनको हरे मुखवारिज चहुंपास ॥ जैसे मधुकर प्रेम सो करत सरस रसग्राम ॥ मुनिजनचित अभिराम ॥ ४ ॥ कंठरुचिर वनमाल छबि मणि माला छबिदेत ॥ नाभि रुचिर गंभीरतर चितनी चित हरिलेत ॥ हेरत पल छनयाम ॥ ५ ॥ भुज बिशाल जगजाल हर अंगद कटक अनूप ॥ अंगुलीय अंगुरिलसेजड़ित नगीनी रूप ॥ निज जन वांछित दाम ॥ ६ ॥ जानु मनोहर चित वसे सकल अंग छबि ऐन ॥ चरण युगल की चन्द्रिका युगल नयन सुखदयन ॥ भव भय टारत बाम ॥ ७ ॥ वसन पीत सोहेभली तड़ित चमक चहुंठाम ॥ बिश्वरूप बंशी रुचिर वसि कीन्हो ब्रज बाम ॥ ब्रज धन जीवन श्याम ॥ ८ ॥ आसावरी ॥ श्री महाराजा हो भव भय भंजन राम ॥ कंज बदन छबि चित हरै चितवनि चित हरिलेत ॥ बेनसुधारस छबि भरे सुनत श्रवण सुखदेत ॥ कलि दुख मोचन साम ॥ १ ॥ भृकुटी छबि सब छबि सिमिटि कीन्हो अपने पास ॥ उतपति लय जगत को छनमह करत बिनास ॥ सबघट कीन्हो बिसराम ॥ भाल तिलक रबि बाल छबि कुंडल तरुण दिनेश ॥ मंद मंद मुसुकात प्रभु सोहत कुटिल सुकेश ॥ हेरत मोहन काम ॥ ३ ॥ दहिने छबि धन लषन प्रभु कर धनु परम सुजान ॥ करजोरे आगे खड़े मारुत सुत बलवान ॥ सीता

सोहति बाम ॥ ४ ॥ सोहत कंठ बिशाल छबिमाल सुभूषण अंग ॥ जगमग जगमग ज्योति अति चहुंदिशि उदित पतंग ॥ कलितम टरत भान ॥ ५ ॥ भुज बिशाल बर चाप धर श्रीपतिकृपा निधान ॥ कहना निधि चिबली निरखि टरत तीनि गुण मान ॥ पीत बसन छबि धाम ॥ ६ ॥ चरण युगल नख ज्योति अति मणि मुज्योति की पांति ॥ मोह मान अज्ञान हर सकल कंज रुचि कांति ॥ हेरत आठौ याम ॥ ७ ॥ रतन सिंहासन ज्योति घन सोहत राम सुजान । लषन सहित श्री जानकी बिश्वरूप को ध्यान ॥ मंगल मूरति श्याम ॥ ८ ॥ रेखता ॥ बिना रघुबीर छबि देखे कठिन सखि शोच उर छाये ॥ कहां आह चैत दिन सजनी अवधपुर सकल सुर आये ॥ कहां बैशाख दिन पहिलो निरखि सुर राज सकुचाये ॥ १ ॥ कहां आह जेठ दिन सजनी तपत दुख नेकु नहिपाये ॥ कहां आसाढ़ ऋतु सजनी ग्रीषम निज धाम बिसराये ॥ २ ॥ कहां आह मास भादों की उमड़ि जल धार महिछाये ॥ कियो चहुंओर धुनि दादुर गयो सावन न सुख पाये ॥ ३ ॥ कहां आसोज वह सखि रे धवल सरयू अमिय छ ये ॥ कहां सो मास कातिक के बसन मुनि तीर तपलाये ॥ ४ ॥ कहां अगहन सोहायन सो सकल महिपाल पुर आये ॥ गयो सो पूष आह दिन के लषन सिय राम बन पाये ॥ ५ ॥ कुसुम ऋतु माघ नहि भावै निरखि जिय मोह अधिकाये ॥ चढ़ा फागुन कठिन सखि रे भवन रघु नाथ नहि आये ॥ ६ ॥ सकल पुर प्राण रघु नन्दन बिधाता बाम बिछुराये ॥ कवन बिधि बिश्वजीवनरे जलज जिमि मीन बिलगाये ॥ ७ ॥ बारहमासा ॥ बिहरै रघुबीर आंगसुत दशरथ केरो ॥ चैत चतुर सखि मंगल गाउ॥ परम मोद सब के उर छाउ ॥ रास श्याम छबि अति रुचिकारि॥ निरखत सकल अवध नर नारि ॥ नयन नहि फेरो ॥ १ ॥ बैशाख मास बोलत बरबैन ॥ परम मनोहर श्रुति सुख दैन ॥ सुनत हर्ष अति सकल समाज ॥ जैसे पीक रुचिर ऋतु राज ॥ बचन बर टेरो ॥ २ ॥ जेठ जननि प्रभु छबि सुख दाय ॥ निरखत प्रीत न हृदय समाय ॥ दुलभ सुख अनु छन अधिकाय ॥ रहनि नाथ जिमि सागर पाय ॥ बढ़त बहु तेरो ॥ ३ ॥ असाढ़ आस होय सब की पूर ॥ जो याचक होय जात हजूर ॥ अचल राज संपति समुदाय ॥ पाइ सुखी सब दुख बिन साय ॥ शोक नहि नेरो ॥ ४ ॥ सावन श्रुति कुंडन झलकार ॥ पीतबसन दामिनि उजिआर ॥ अंग अंग भूषन बहुभांति ॥ जैसे चांद सूरजकी पांति ॥ कियो है बसेरो ॥ ५ ॥ भादों भक्त हेतु धरिरूप ॥ लीला करत सकल जग

भूप ॥ बेद चरित गावत निशिबार ॥ सुनत लहत सुख सिंधु अपार ॥ परै न भव घेरो ॥ ६ ॥ कुवांर कुमति छोड़ो जग जाल ॥ प्रीति करो मन दशरथ लाल ॥ अयसो नर तन उत्तम पाई ॥ नाहक धरणी धाम लो भाई ॥ करत है अबेरो ॥ ७ ॥ कातिक कामिनि करके शिंगार ॥ मंजन करि सरयू सुचि धार ॥ दिन मणि ते मांगति कर जोरि ॥ राम रूप बसै मानस मोरि ॥ नयन हित हेरो ॥ ८ ॥ अगहन अगणित जन की भीर ॥ आये जनक पुर श्री रघुबीर ॥ हर धनु तोरि जनक दुखटारि ॥ सीता ब्याहि अवध पगु धारि ॥ मोद बहु तेरो ॥ ९ ॥ पूष परम पर प्रीति अपार ॥ करति सखी सब सीय शिंगार ॥ सेवा करति बहुत मनलाय ॥ छबि निरखति नहि नयन अघाय ॥ पुलक उरढेरो ॥ १० ॥ माघ मुनीश शेषसुरराज ॥ बिधि हरबाणी वीणा साज ॥ गावत रुचिर सहित बरतान ॥ मंगल तोरण दीप बितान ॥ लगे चहुंफेरो ॥ ११ ॥ फागुन फल देखें सियराम ॥ पाइ अवध पुर जन बिश्राम ॥ बिश्वरूप सुख धरे चहुं ओरि ॥ उड़त अबीर रंग भरेखोरि ॥ देवजय टेरो ॥ १२ ॥ रागभैरों ॥ यशोदा नन्दन जगवंदन मन मोहन मुरली वाला ॥ बंशी बजावत चितहरि लीन्हों अजब मोहनी सबकों कीन्हों ॥ प्रभु नन्द लाला कमली वाला ॥ पंचरंग सोहै बनमाला ॥ १ ॥ बारिज कर बारिज छबि छावत बारिज नयन शयन दर शावत हंसत हंसावत खेल मचावत बिहरै संग ब्रजबाला ॥ २ ॥ बिश्वरूप गिरधर छबिनीको दिन मणिदिन शशि मुख चरणनको अजब कला जो इकाल को काला दृग हेरत गोवाला ॥ ३ ॥ राग परज ॥ प्रभुबिन कवन करैमेरो भाव ॥ बिन प्रभु शरन मिटैनहि कबहूं यह दारुण जगके दुख दाव ॥ १ ॥ जासुकृपातें लहत सकल सुख छनमें करत रंकते राव ॥ २ ॥ जो कछु करों सो प्रभुहि समर्पों छोड़िदेहु मन अब अपनाव ॥ ३ ॥ बिश्वरूप एक आशराम के दूजो नहि अधार नितआव ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ शरणा गति राम कृपालकी ॥ मिटै सकल जग जालकी ॥ आनन्द घन प्रभु जनहित कारकजन उरबसत मराल की ॥ १ ॥ श्याम सरूप अनूप सोहवन शोभा घटत तमाल की ॥ २ छनछन की सबबात लखत प्रभु जानत सब उर हालकी ॥ ३ ॥ ज्ञानध्यान करि कोउ जन पावत छूटत सब उर सालकी ॥ ४ ॥ बिश्वरूप प्रभु द्रवत जाहि पर सोन परत मुख कालकी ॥ ५ ॥ राग भैरो ॥ अवध पुरी मधुमास सोहावन श्री नवमी कंहभीर भयोरी ॥ अज अनादि मन बुद्धि अगोचर श्रुति जेहि नेति कहोरी ॥ महाराज दशरथ तप बलतें सुर हित जन्म लियोरी

॥ १ ॥ बाजु बधाव मोद जिमि बाढ़ो चन्द सिंधु निरखेारी ॥ मणि तोरन घरघर कंचन घट मनिमय ज्योति जगेारी ॥ २ मज बाजी मोघरणी धाम बहु पट भूषण बहु जोरी ॥ महा राज दियेदान सबन कहं भुवन अयाच किजेारी ॥ ३ ॥ गिरा अमर तिय उमा सहित बिधि सुरहर नन्द किशेारी ॥ आए रिद्धिसिद्धि जुत गणपति रबिरथ नभ बिलमेारी ॥ ४ ॥ नारद सनक सनन्दन मुनिगण श्रुति गणरूप धरेारी ॥ करि उतशाह साज सुर नायक सची सहित पहुंचेारी ॥ ५ ॥ देवसरी यमुना बिधि तियसिलि सर सागर सगरेारी॥ सरयु सेाहावनि शीक नसावनि सब तीरथ बटुरेारी ॥ ६ ॥ परम मनेाहर शेाभा पुरकी रचना अलख बनेारी ॥ शारद की मति भूलि गईहे बरनि सके कवि केारी ॥ ब्रह्मा नन्द मगन सबकेाई भये देहदशा बिसरेारी ॥ सकल भुवन के पाप तापगये सुखघन पुण्य भरेारी ॥ ८ ॥ सबजन सबहुन रत सुकर्म मंह कुपथ बिचार टरेारी ॥ तजि चपलाई रमा सेाहावनि तेहि पुर आइ बसेारी ॥ ९ ॥ केाशल्या मुख कंजगम को निरखि न पलक परेारी ॥ बिश्वरूप सर्बेश दयानिधि उर पुर बास करेारी ॥ १० ॥ भैरवी ॥ मनरे गहिले नाम निसानी ॥ झूठे जाल कालके फन्दा अजहुंनही पहिचानी ॥ १ ॥ इन्द्रिय गण सब दुखके सागर निज निज बिषय सयानी ॥ धेाखा अंत करंगे तेासें जिमि ठग झूठी बानी ॥ २ ॥ लहि नर साज भजन को आए अरुझेउ सूत पुरानी ॥ लाभ अधिक कछु नजरि न आवै मूलहुकी भइहानी ॥ ३ ॥ चेतेा निशि बासर गुरु मगुकेां जेा सब सुखकी खानी ॥ बिश्वरूप अब जेान बनेहेा पछतैहेा अभि मानी ॥ ४ ॥ भैरेा ॥ राम भजनकी सुधि बिसराये नाहक तू सठ जनम गंवाये ॥ विषय बिबस परि लपटि गयेा हे स्वान सरीके घरघर धाये ॥ १ ॥ काम क्रोध मद लेाभ महाबल रैनि दिवस तेहिमाहि बिताये ॥ जेा सुख अगम दिये बिसराई आस चाटि जिमि चाह अघाये ॥ २ ॥ ज्ञान नयन ते अंध भयेा हे केहिबिधि साहेब लखहिं लखाये ॥ बिश्वरूप अबिगत अबिनाशी बिनुहरि कृपा शरण नहि पाये ॥ ३ ॥ परज ॥ लाजकरेा हरि अपने जनकेा ॥ राम कृपानिधि करुणासागर अंतर गति जानत सब मन केा ॥ १ ॥ गज जल मगन नगन भइ द्रौपदि लीन्हउबारि बिदितहे भुवनकेा ॥ बेद पुराण संत संमत मत पालन करत सदा जन पनकेा ॥ २ ॥ कमल नयन हित चयन दयन प्रभु तुमसम नहिं भव तापस मनकेा ॥ अघ बारिधि नासन सब समरथ दायक परमारथ सुख घन केा । ३ ॥ जन मन कामदेव तनसुन्दर जनद प्रबल अति मेाह दहनकेा

बिश्वरूप शरणा गति दायक अभय देहु जन जानि चरणको॥ ४॥ भैरवी॥ रघुवर तुमबिनु कवन उबारे॥ पंकते पंक छुटत नहि कबहूं दुखिया दुख किम टारे॥ बिनुबि रैनि नवे कैसे जे उदय अमित शशि तारे॥ १॥ मज जगदीन दीन प्रभु तुमहो बेद बिदित मतसारे॥ पाहि करत अवलम्ब देत हरि ऐसो बिरद तुम्हारे॥ २॥ बालक बनिता बंधु सहो दर स्वारथ बिबस बिचारे॥ तासन चहत निज कुशलाइ छारभरो दृगद्वारे॥ ३॥ तुम सर्बज्ञ चराचर नायक अगनित पतित सुधारे॥ बिश्वरूप प्रभु बेगिद्रवो अब करुणा सिंधु उदारे॥ ४॥ बिहाग॥ मन अब करिले बेगि संभार॥ जोमुखके धावत निशिबासर सोनहि पैबे बिनु कर्तार॥ १॥ गृह धनजेव देहधुव मानत येह बिनमत नहि लगिहै बार॥ करिअधर्म जे हितू पालतहो सोनहि संगीहो इहै तुम्हार॥ २॥ यमकर दूतबांधि तोहि लेइहैं तबनाहीं कोउ रोक निहार॥ कहूं अनल कहूं तपत बालुहे कांट बिषम अति राह कुरार॥ ३॥ शिरपर मुद्गर बहुत परतहै मूर्छित जाय गिरे यमद्वार॥ तपत नरकमहं सहत बहुत दुख समुझत अपनो कर्म अपार॥ बिश्वरूप अबइन्द्र जाल तजु राम चरण हिय करो अधार॥ ४॥ बिहाग॥ गुरुमोहि रूपदियो दरशाई॥ जहां बाणीकी गति नपरतुहै मन गतिनहि ठहराई॥ १॥ जोजन लखत चखत अमृतरस चिबिध देापदुरि जाई॥ हम हमार यहभेद गयो सबपूरण सुख उरछाई॥ २॥ अचल अमल जनथल सचराचर पूरण एक समाई॥ कारज कारण भेद उभय जहं सीप रूप समताई॥ ३॥ अगह अगोचर अज अबिकारी चितसुख रूप सदाई॥ मतमुरु परम दयाके सागर सेघट मांह लखाई॥ ४॥ यह चौरासी लखे कठिनहै बंधन अति कठिनाई॥ बिश्वरूप गुरु कृपा करत जेहि छिनमें देत छोड़ाई॥ ५॥ ठुमरी॥ श्याम अबहम तोसन राते॥ नहि सोहात घरबासु नेकु मोहि न ह सोहात हितनाते॥ १॥ जाहु भवन फिरि नाथ कहत मोहि सुनि येह बचन दहत सबगाते॥ २॥ जीबन धनप्रिय प्रान हमारे तुमबिनु प क कलप समजाते॥ ३॥ बिश्वरूप ब्रज जीबन सुख निधि भई मगन सुनि काहि असबाते॥ ४॥ ठुमरी॥ ऐरि कुबरीने जादु लाई॥ जाके बस परिश्याम मनोहर हम सबकंह बिसराई॥ १॥ माला गूंथि प्रभुहि पहिरावति बहुबिधि गंध लगाई॥ चारु बचन कहि हरिहि भुलावति करि निजबस बरिआई॥ २॥ कहैं बहुत पैकाम न आवत नहि कछु कहत उपाई॥ बिश्वरूप मन मोहन यदुबर सुन्दर देखि लोभायगई॥ ३॥

ठुमरी॥ कुबरी पटरानी भईरे॥ कूबर देखि हंसत सब जाकी अब सो तो दिन गईरे॥१॥ जोनहि सुनेदेखेउ नहि नैनन सोबिधि प्रगट कईरे॥ केहरि नारि अहार छीनिके गीदरि बदन दईरे॥२॥ जोदासी नित नीच करमरतसोपद जंच पईरे॥ बिश्वरूप ब्रज राजराज महं अब सब होतनईरे॥३॥ ठुमरी॥ रघुबर जाइहोंकेहि पाहीं॥ जनममरण दुखफन्द हरणको अभयकरणको आहीं॥१॥ कमल नयन छबि भवन तुमहि बिनु कौन दीनकों चाही॥ बिश्वरूप चहुं हेरि थकित भये प्रभु तुम सम कोउ नाही॥ २॥ ठुमरी॥ देखो सब यहएक समानी॥ करि मतिभेद खेद जनपावत लखतनहीं अभिमानी॥१॥ बिषय मांह करै चाह घनेरो सुख मेधा उर आनी॥ बाहर बाहर धाइ मरतनित नहि अंतर हरि जानी॥ २॥ जिमि गिरिवर सागरमहं मणिगण रतनखानि सुख दानी॥ विनु उपाइ ते नजरि न आवत दीखत पाहन पानी॥ ३॥ जब गुरु ज्ञान उदय रबि होवै खोवै भरम निसानी॥ बिश्वरूप तब अज अबिकारी प्रभुपूरण पहिचानी॥ ४॥ रागबिभास॥ मेरो महाराज रामप्रीति भवन सोई॥ जासों निज हेतु कहो ऐसो जन जोई॥ हारे हम खोजिसकल भुवन नाहिं कोई॥ १॥ करिवर कर गाहगहे बारि नाकलेई॥ हारेपरिवार खींचि एक एक होई॥ २॥ जय जय हरि आरत हरटेर कीन्हेयोई॥ तुरितहि प्रभु मनके बेगिशत्रु बदन खोई॥ ३॥ द्रोपदि पनपालि दियेपालन जन तोई॥ जाके पद बारि गंग जगत पाप धोई॥ ४॥ गावत यश सहस बदन शारद मति गोई॥ ब्रह्मा सनकादि ईश शीस चरण मोई॥ ५॥ जानत सब बाल हाल पिता मातु दोई॥ बिश्वरूप कर्त्ता प्रभु करिहै सोइ होई॥ ६॥ राग बिभास॥ सुरसरि तब बिमल नीर सेवत मुनि वृन्दधीर मेटत भव दुसह पीर मानस दुरितोई॥ राजित तिहुं पुर तरंग निरखत चित होतरंग होवै तिहुं ताप भंग कलिमल दुखदाई॥ पातकतरुअति प्रचंड होवै शत खंड खंड अतुलित ब्रह्मांड भूति सिमिटि धारआई॥ २॥ शंकरके जटा बास अतुलित छबि राशि भास जैसे रबि अमित बीच अमित चन्द छई॥ ३॥ शम दम संतोषदानि निर्मल सुख ज्ञान खानि अर्थ धर्म काम मुक्ति करतल जनु पाई॥ ४॥ बिधि कमंडलू बिचिच धारेतामहं पबिच तपोराशि निखिल सिद्धि सिमिटि जनु भराई॥ ५॥ बिष्णु चरण कंज मंजु दुति अनूप भूति गंज तेहतें प्रगटानी महो बेद सुयश गाई॥ ६॥ ब्रह्मद्रव बहत नीर निरखत मन होत थीर मज्जन अनुराग बढ़त छन छन अधिकाई॥ ७॥ बिश्वरूप अर्ज जानु मातु शरण लाज मानु हंसबंस

कंज हंस रामउर सोहाई ॥ ८ ॥ बिहाग ॥ अगम घर ज्योति बरै निशिबार ॥ होत प्रकाश अपार ॥ होत नहीं ठहराव नयनकी कोटिन दिनकर सम आकार ॥ १ ॥ आनंद नदिया बहत सोहावन पियत है कोउ कोउ संत पियार ॥ २ ॥ पियत मगन जग खबरि भुलानी जैसे रहत सदा मतवार ॥ ३ ॥ त्रिगुण कर्म सब दुरित पराने निर्मल हृदय भयेउ उजियार ॥ ४ ॥ बिश्वरूप सतगुरु शरणागति अलख पुरुष मन गहो निरधार ॥ ५ ॥ ठुमरी ॥ मन कबहुं आसरा लगहोगे ॥ रघुवर पद में प्रीति निरंतर जग के सुख कछु नाहिं चहोगे ॥ १ ॥ पर अपकार धरो हिय नाहीं पर निन्दानहि पलबन लहोगे ॥ २ ॥ काम क्रोध मद बिषय बास तजि राम शरण महं मगन-इहोगे ॥ ३ ॥ पुण्य समूह बसै हिय माहीं पाप अनलतें नाहिं दहोगे ॥ ४ ॥ गुरु सेवामें प्रीति निरंतर सम अस्तुति निन्दाहि सहोगे ॥ ५ ॥ बिश्वरूप हरि कृपा करै जब तब भवजालतें पारपरोगे ॥ ६ ॥ राग बिभास ॥ परब्रह्म रामचन्द्र श्रुति समूह गावै ॥ अलख पुरुष निर्बिकार सकल बिश्वके अधार सगुण रूप भक्तन हित जगमें प्रगटावै ॥ १ ॥ धाता होय सृष्टि करत बिष्णु रूप सबै भरत शंकर होय सकल हरत उदर निज समावै ॥ २ ॥ साहेब प्रभु एक रूप पूर्ण अजब सर्ब भूप नाम रूप बिबिधि भेद माया दरशवै ॥ ३ ॥ काम क्रोध दूरि करै प्रेम भक्ति हृदय धरै बिषय चास तजे आश आनन्द उर छावै ॥ ४ ॥ मगन रहत आठं याम मेटेउ मति बिषम बाम चारि खानि जीवएक आतम ठहरावै ॥ ५ ॥ बिश्वरूप मोह धार त्यागिबे गि होहु न्यार कीट भृंग सदृश राम निज स्वरूप पावै ॥ ६ ॥ रागबिभास ॥ हरि हर प्रभु एकरूप गावत श्रुति चारी ॥ भेदभाव कर दुराव आनन्द तब हृदय छाव दिव्य दृष्टि उदय भई मिटि गई अंधियारी ॥ १ ॥ जन्म मरण शोक गये ब्रह्मरूप मगनभये इन्द्रीगन जोर नसेउ काल कर्मटारी ॥ २ ॥ आनद रस पियत निस दूसर न गहत हित शत्रु मित्र बिषम भाव सबतें भये न्यारी ॥ ३ ॥ जीवन सन मुक्त भये देह दशा दूरिगये बिचरत निर्लेप होइ बिधि निषेध जारी ॥ ४ ॥ धन्य पुंजके समूह जेहिके असदशा जूह सुखी जग मांहि मोह अवर सब दुखारी ॥ ५ ॥ बिश्वरूप गुरु प्रसाद मेटत मनके बिषाद अपर न उपाइ कछू खोजि सकल हारी ॥ ६ ॥ ठुमरी ॥ भजन बिनु काहेको देह धरी ॥ बिना भजन भव नाहि तरी शठ कोटि उपाइ करी ॥ १ ॥ आवत जात भ्रमत निशि बासर जअहुं न समुझि परी ॥ २ ॥ सुत बित हित मानत शठ अपनो सोतेसे दूरि टरी ॥ ३ ॥ बिश्व-

रूप रघुबीर शरण बिनु कबहुं न भवतें तरी ॥ ४ ॥ ठुमरी ॥ चेतु सवेरो अपनो देश ॥ छन छन घरि घरि समय टरतुहै भूलि परेसि का विषय हमेश ॥ १ ॥ इहां कोई तेरो संगी न होइहै दिना चारिके सकल सुबेस ॥ काल कठिन को फन्द परोहै बचत नहीं कोइ रंक नरेश ॥ बिश्वरूप एक राम शरण गहु छोड़ सकल जग नाना भेष ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ ममता मनतेहि नाच नचावत ॥ बाल कुमार युवा पन बीतेउ चौथे पन शिर शेत जनावत ॥ १ ॥ बिषय बिबस होइ भूलि गये शठ मोहि निशा सब दिवश बितावत ॥ २ ॥ अजहुंन जागु हेतु कर हरिसों मानुष तनका बिफल गंवावत ॥ बिश्वरूप रघुबीर शरण बिनु यमपुरतो कहं कवन बचावत ॥ ३ ॥ राग भैरो ॥ माया पुरी अघ ओघ नसावनि जन पावनि सुखराशी ॥ परम तपो धन मुनिजन निशि दिनतेहुंटघलकेर निवाशी ॥ अचल समाधि मुक्ति जन पायनि दायिनि अति सुख मासी ॥ १ ॥ अप कीरति कुवृत करिणी सब प्रबलसिंह जायासी ॥ मोह सघन तम बिपुल चंड दुति रबि शशि अनल प्रभाशी ॥ मेख मास याची जन आवत जो जन यश अभिलासी ॥ ता कहं दानि खानि सब गुण की काम धेनु बिदितासी ॥ ३ ॥ अणिमादिक दासी निशि बासर महिमा बेद प्रगासी ॥ बिश्वरूप जग जननि कृपा करि राम रूप बरदासी ॥ ४ ॥ राग बिहाग ॥ सब सुख साहेब के घरे जहां गये जन मे न मरे ॥ ब्रह्मादिक जहां सेइ रहे हैं कर जोरे निशिबारखरे ॥ १ ॥ ऋद्धि सिद्धि सब विपुल बड़ाई लक्ष्मी जाके चरण तरे ॥ ध्रुव प्रहलाद बिभीषन जेते अस्तुति करत शरणमें परे ॥ २ ॥ सनकादिक जेहि रटत निरंतरशारद नारद शेष बरे ॥ ४ ॥ हय प्रभु सकल अनीह निरंजन निज जन हेतु स्वरूप धरे ॥ बिश्वरूप अबि गति करुणा मय शरन गये सब ताप हरे ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ प्रभु तजि यांचि हौं अब काहि ॥ अज डर डरन दीन को दानी अशरण शरण को आहि ॥ १ ॥ अति कृपाल भव जाल हरण हर तोरो यश कहुकहां नाहिं ॥ करुणा करहुं हरहु भव संकट जानि शरण गहुबांहिं ॥ बिस्वरूप बर देहु दया करि चरन शरण गुरुमांहिं ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ समैया गैली बीति रे हरि से करत ना प्रीतिरे ॥ बालापन खोय अजान महं सहत दुमह दुख शीतिरे ॥ १ ॥ भये कुमार खेलत बालक संग मात पिता महंरीतिरे ॥ २ ॥ भये युवा युवती संगराते करत है बहुत अनीतिरे ॥ ३ ॥ बिरध भये इन्द्री गण थाके चलने की भई भीतिरे ॥ ४ ॥ यम गण आए मुद्गर मारे बिकल परोहै चीतिरे ॥ ५ ॥ सहत नरक महंताप बिबिध

बिधि कवन मिटावै भीतिरे ॥ ६ ॥ बिश्वरूप का भूलि अधम पथ रामनाम करु चीतिरे ॥ ७ ॥ राग भैरो ॥ अचल सुतापति अबिचल गति मति दायक हर त्रिपुरारी ॥ सेत कंज शशि बरण बिशद लसि गंग तरंग जटारी ॥ शेष माल बिधु बाल भाल पर शोभा अमित बनारी ॥ १ ॥ नमत सुरासुर परत चरण महं कहत चरण भयहारी ॥ होत अशोक रोक सब छूटत जेसें कोकतमारी ॥ २ ॥ अग जग भवन दवन सब दुख के दीनबंधु हितकारी ॥ अति उदार सुख शारदानि प्रभु केतिक अधम उधारी ॥ ३ ॥ निकटहि बसत लखत नहि कोऊ माया तिमिर पसारी ॥ बिश्वरूप गुरु बचन तरणि बिनु होय न उर उजियारी ॥ ४ ॥ भैरो ॥ बिश्वेश्वर नगरी सुख सगरी भूलि जाहु जिनि अवर घरे ॥ अणिमादिक जहांरहे कर जोरे भुक्तिमुक्ति जहसकल भरे ॥ १ ॥ ब्रह्मादिक सेवत कर जोरे एको छन पै लखत न परे सुर सरि पावनि परम सोहावनि काशीते कबहूं न टरे ॥ २ ॥ चार खानि के जीव चराचर होय मुक्त काशी जो मरे ॥ पातक पुंज प्रचंड तूलहै काशी निरखत तुरत जरे ॥ ३ ॥ बिश्वरूप गहु शरन शिवा शिव काम क्रोध मल सकल हरे ॥ ४ ॥ राग बिभास ॥ काशी कैलाश भवन बरनि नहीजाई ॥ निरखत अति आनन्द होय प्रीति हृदय छाई ॥ १ ॥ शंकर नित करत बास गिरिजा युत हिय हुलास सेवत ब्रह्मादि चरण पंकज चित लाई ॥ अस्तुति सनकादि करत आनन्द उर माह भरत टारत नहि नेकु दृष्टि निरखत चितलाई ॥ २ ॥ गावत यश शेष जासु पावत नहि पार तासु कबि जन सभ हारे कछु उपमानहि पाई ॥ बिश्वरूप भाग्य राश शंभुपुरी करत बास मेटत यम त्रास मुक्ति करतल में आई ॥ ३ ॥ राग बिभास ॥ जय जय शंकर कृपाल दीन बंधु प्रणत पाल बेगि हरो जगत जाल दीजे शरनाई ॥ सच्चिद घन निर्बिकार सुख स्वरूप अति उदार अलख प्रभु अखंड एक ब्यापेव समुदाई ॥ १ ॥ नारदादि गावत यश पावत हिय आनन्द रस लगो है समाधि अचल मेटेव दुचिताई ॥ २ ॥ उमा रवन ज्ञान भवन मोहि मारताप दवन देवन हित त्रिपुर हतेव भूतल यश छाई ॥ ३ ॥ जर जर बिषपान कियो अभैदान सभै दियो पर के उपकार हेतु निज सुधि बिसराई ॥ ४ ॥ ब्रह्मा जो लिखेव भाल नरक भोग अति कराल फेरि अंक देइ डंक स्वर्ग तेहि पठाई ॥ ५ ॥ निरखि महा तेज सघन चकित भये चतुर बदन शंभु के प्रताप सकल सभा मांझ गाई ॥ ६ ॥ दाता शिरताज साज भुवन ख्यात महाराज बचन मन अगोचर गति पारकोउन पाई ॥ ७ ॥

विश्वरूप शिव कृपाल तुरित हरो मन कुचाल शरण लाज करोनाथहृदय बसोआई ॥ ८ ॥ राग परज ॥ जय महेश जन आरत मोचन ॥ उरमालाराजित अति सुन्दर कुंद इन्दु दर बपुष त्रिलोचन ॥ १ ॥ रहत अखंड समाधि सदा जेहि राम चरण बारिज चित दोचन ॥ २ ॥ हय निर्लेप अमाननिरंजनजेहि मदमोहकामभय मोचन ॥३ ॥ सदांमगनसुखअजअबिनाशीहर्षविषाद लाभदुख सोचन ॥ ४ ॥ हरिपद कमल जपै उरमोही भवजल काम गहेतेहि बोचन ॥ ५ ॥ बिश्वरूप प्रभु दानि शिरोमणि राम भक्ति बरदेहु त्रिलोचन ॥ ६ ॥ रागपरज ॥ जयमहेश जयजय त्रिपुरारी ॥ दीनबंधु प्रभुजन हित कारी ॥ करत सदा उपदेश शिवाके तत्वज्ञान बरभव भयहारी ॥ १ ॥ पर उपकार निरत निशिबासर करि बिष पान बिबुध भयटारी ॥ कर डमरू शिरजटा बिराजे भसमअंग रतिपति सतकारी ॥ २ ॥ अहिमाला उरमांह बिराजे तेज पुंज रबिसत उजियारी ॥ गौरबरण सुख भवन दयानिधि गावत सुयश सदा श्रुति चारी ॥ ३ ॥ जासुनाम सबताप नसावन द्रवो बेगि प्रभुशिर शशिधारी ॥ बिश्वरूप प्रभु हर दयालहो देहु रामपद प्रीति अपारी ॥ ८ ॥ भैरो राग ॥ जयसोमेश्वर प्रभु निष्टिलेश्वर उमा रवनभय हारी ॥ तीरथ पतिके अक्षय कोशको हमाराज अधि कारी १ ॥ जाको जो फल अमल सोहावन तपसो ताहि बिचारी ॥ देत दयानिधि देरि करतनहि दरदवंत हितकारी ॥ २ ॥ दर्शनतें मति बिमल करत अतिज्ञान रूपबपु धारी ॥ याची जनमन शोक हरण हरअमित भानु उजियारी ॥ ३ ॥ इहभव अगम अपार सिंधुको तरणि चरण तुमारी ॥ बिश्वरूप प्रभु अधम उधारण काहि शरण नहितारी ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ कर्दमेस सर्बेस त्रिपुरहर शोकहरण जनत्राता ॥ कलि मल दोख रोख हरशंकर अभय मुक्ति पददाता ॥ तेरो चरित अगाध पारनहिं पावत अहिपति धाता ॥ १ ॥ शंकट तरुउन्मूलन करहर गहत नजन अघबाता ॥ अति उदार सुनि चरित श्रवण पुटहोत पुलक सबगाता ॥ २ ॥ याची जन अघसिंधु अगमतर सोखक जिमि घटजाता ॥ ज्योति सरूप अनूप महाछवि अमित दिवाकर भाता ॥ ३ ॥ अरजसुनो करुणाके सागर सबघट के तुम ज्ञाता ॥ बिश्वरूप प्रभुचरण शरणदेह हरहु सकल जग नाता ॥ ४ ॥ राग भैरो ॥ जयजग जननी शंकट हरणी भवजल तरणी नन्दसुते ॥ छबिअतु-लाई बरणि न जाईबल प्रताप गुणसिंधु जुते ॥ हर कमलासन प्रभु गरुड़ासन सिद्धासन सुरशक्र नुते ॥ १ ॥ आरतहरणी आनद करणी भ्रमतम तरणी अघ धूते ॥ गतिअन पायिनी शुभ मति दायिनी अभय बिधायिनि श्रुति ब्रूते ॥

२ ॥ जगस्थिति हरणी उदभव करणी सुयश बितरणी विदितहुते ॥ जनमन रंजनि कलिदुख गंजनि शोक बिभंजनि बहुभूते ॥ ३ ॥ याची तरणी सुर मौ शरणी भीम चंडिके यश अकुते ॥ अज अविनाशिनि शोक बिनाशिनि बिश्वरूप पदकमलनुते ॥ ४ ॥ रागकल्याण ॥ जयजय कलिपाप समनिरोध्य राग,दोष दमनि तोय मोष दायिनि जग अभय कारिका ॥ बंदत ब्रह्मादि देव पावत नहि जासुभेव चरितसिंधु आवति अतिग्रीति चारिका ॥ १ ॥ मोह मानमद कुधार बहेजात जीवभार और ठौर पावत नहि तुहीं तारिका ॥ नन्द भवन जन्म लिये अभय दानसबहि दिये भूसुर भूभार हरणि असुर मारिका ॥ २ ॥ उदभव थिति नाशकरणि जगके जगबंध हरणि बुद्धि सुद्धि दायिनि सबशोक हारिका ॥ काल कर्म कुटिल चंड जनके भ्रम बिषम मुंड खंड खंड करणि निजिस शक्ति धारिका ॥ ३ ॥ रुंड निपति बिमल बदनि सोहति अतिमंद हसनि धारेपट भूषन बरतड़ित सारिका ॥ तरुण तरणि तेजरासि लीला तनुदेवि भासि दिव्यदृष्टि दायिनि मनभेद बारिका ॥ ४ ॥ बिश्वरूप जगत शमनि अरज मानुष्ठान अपनि रामचरण शरण देहु भीम चंडिका ॥ ५ ॥ रागभैरो ॥ जय मारुत सुत जयहनुमान दीनबंधु प्रभुकृपा निधान ॥ रामनाम रटरहत निरंतर प्रेम सुधा नित करत है पान ॥ १ ॥ अंजनि तनय तेजबल सागर ज्ञान भवन समगुन गनखान ॥ कीन्हेउ भक्ति परम सुखसागर निजबसि राखेव रामसुजान ॥ २ ॥ जाके यश रघुबर निजमुख तें कपिदल महं कियो बहुत बखान ॥ छन महं लांघि पयोधि गयेहै जासु प्रताप जगत प्रगटान ॥ ३ ॥ खलदल तूलताहि पावक सम बालापन मुख मेलेउ भान ॥ बिश्वरूप प्रभु रामदूत बरदेहु बेगि हरिपद निर्वान ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ महाबीर रनधीर शिरोमणि रामदूत गुरुज्ञानी ॥ यशप्रताप महिमा अतुलित बल कहिनसकत श्रुति बानी ॥ गोपद सम लांघेव सागर कंहलगे वननेकु थकानी ॥ कीन्ह परिक्रमा देव बिविध बिधि लखिप्रभुता सुखमानी ॥ १ ॥ सीताशोक हरण करुणाकर बनसागर बरदानी ॥ दनुज दितिज कुल अगम गहन वनदहन बिदित जग जानी ॥ २ ॥ जारेउलंक शंकनहि मन महं तोरेउ बाग बितानी ॥ हाहाकार कियो सब पुरजन टेरत पानी पानी ॥ ३ ॥ मुनि जन सुख कारक भय हारक द्रवो सुजन पहिचानी ॥ बिश्वरूपप्रभु दया कीजिये हरिये मोह निसानी ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ जयगणेश जय जय जगबंदन ॥ अशरण शरण भक्त उर चन्दन ॥ नाम प्रताप भले बिधि जानत सुमिरत तुम्हे नसै भ्रमफन्दन ॥ करिवर बदन हरणदुख सागर राम

भक्तिउर जेहि चितनन्दन ॥ १ ॥ चरण कमल जेहि पूजिसटा नर कबहुन लहत मोहमद मंदन ॥ कोटि सूरसम कांति विराजै निरखत टरैताप जग द्वन्दन ॥ २ ॥ विश्वरूप प्रभुशरण पुकारत रामभक्ति देहु शंकर नन्दन ॥ ३ राग भैरो ॥ अघखण्डन जन मंडन शंकर काशी नाथ दयाला ॥ अति दाता उदार हर केवल हारक काम कराला ॥ जो सुरतरु सुरधेनु सरिस कहों तो नहि बनत कृपाला ॥ १ ॥ यह सब अल्प फलन को दायक यासकिये चिहिकाला ॥ तुमप्रभु निज सरूप सुख प्रापक चिदघन रूप विशाला ॥ २ ॥ महिमा अगम पार नहि पावत षट दरशन श्रुति माला ॥ बरुणा तीर बसे याची हित अघ हरि करत निहाला ॥ ३ ॥ करुणा सिंधु दयाकरि खोलो अजर मोहकी ताला ॥ विश्वरूप रामेश्वर हरजी जानि नाथ निज बाला ॥ ४ ॥ रामभैरो ॥ जय रामेश्वर प्रभु सर्वेश्वर दीनबंधु अविनासी ॥ अलख अनादि वेद जेहि गावत ब्रह्मा करत खवासी ॥ इन्द्र वरुण चरणन्ह पर लोटत शरणागत अभिलाशी ॥ १ ॥ अनल भानु शशि नयन बिराजत तेजपुंज सुखरासी ॥ जापर दया करत क्षितवत प्रभु हरत मोह मद फांसी ॥ २ ॥ रामचन्द्र निज करतें थापे जलनिधि तीर सभासी ॥ देवनि कर मुनिचरयुत पूजे जयजय धुनि नभ बासी ॥ ३ ॥ करुणा जलधि चन्द्र शेखर हर आसु तेपना माशी ॥ विश्वरूप प्रभु याची तारण बसे बरुणा तटकाशी ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ धर्म राज महाराज दम निधि तेज पुंज तप धारी ॥ जाको रिपु कहुं नजरि न आवत सबकरि सबै निहारी ॥ गर्व मोह ममता मद माय निज स्वभावतें टारी ॥ १ ॥ जाको बंधुमहा बल सागर विदित जगत महचारी ॥ सुरपति देख जाहि अर्द्धासन डरपत खल भयकारी ॥ २ ॥ पापसिंधु अति लख दुर्योधन कीन्ह उपद्रव भारी ॥ ताको दर्प हरण समरथ यशुहांके कृष्ण मुरारी ॥ ३ ॥ शिवपुर बास शिवरूप भये हैं याची जन अघहारी ॥ विश्वरूप जेहिनाम जपेतें होत धर्म मति प्यारी ॥ ४ ॥ राग भैरो ॥ पंडु तनय अति बुद्धि उजागर बलसागर गुण खानी ॥ धर्म राज महाराज सजसजि दिशिदिशि तें धन आनी ॥ सब नृपजीति रीति श्रुति मतके यज्ञहेत व्रत ठानी ॥ १ ॥ सकल दिशातें मुनिवर आये वेद विज्ञा बरज्ञानी ॥ कृष्ण सदलबल सुख निधि आये सभा हर्ष अधिकानी ॥ २ ॥ प्रथम पूजिसब महं निरणय करि पूज्यकृष्ण कहजानी ॥ पूजे वेद घोखद्विज बरसब किये यथोचित बानी ॥ ३ ॥ सुनि रिस हर्ष उरबाढ़ो सूखेनृप अभमानी ॥ विश्वरूप यदुभूप जाहि बल ताको भुवन निवासी ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥

जय भगवान अनादि सनातन कपिल जगत हितकारी ॥ देव हूति कर्दम के जाये जग तारण बपु धारी ॥ करि उपदेश बिबेक अनेकन्ह जननीभवते तारी ॥ १ ॥ तत्वबिबेचन मग सबहू बेनिज बल ताहिउबारी ॥ भयेहै पुनीत चरित मन भावन बिदित भुवन दशचारी ॥ ३ ॥ मातुहि करि उपदेश ज्ञान बरमोह जाल सब टारी ॥ चेतन अमल सोहावन निजसुख कीटभृंग सम डारी ॥ ४ ॥ अति कृपाल निजपाल बालजिमि जननी प्रीति संभारी ॥ बिश्वरूप काशीश संभु जन याची को रखवारी ॥ ४ ॥ यह सोलह भजन पंच कोशीके ॥ गौरी ताल जल्द ॥ आरति श्री मोहन जीकी कीन्ही कनक थार यशोमति कर लीनी ॥ १ ॥ चांद सूर दोउ ज्योति सोहाय जगमग ज्योति तरुण तमहीनी ॥ माल पटल रोरी छबिसोहै नवल सुरंग लसत पटझीनी ॥ २ ॥ शीस मुकुट मणि जड़ित बिराजे त्रिभुवन छबि सिंहासन छीनी ॥ बरषत देव कुसुम चहुं हरषे बनमाला छबि लसत नवीनी ॥ ३ ॥ गावत राग सकल ब्रज नारी सकल लोक छबि ब्रज आधीनी ॥ बिश्वरूप ब्रजलाल कन्हैया भूषन ज्योति हरत गुनतीनी ॥ ४ ॥ गौरी तालजल्द ॥ आरति श्री रघुवर जीकी कीन्ही सकल भुवन छबिचित महदीन्ही ॥ भक्ति सुदीप सुहावन लागे बाती तत्व बिचार नवीनी ॥ प्रेम सोहावन घृत छबिछाजे बरत ज्ञान मय ज्योति अलीनी ॥ १ ॥ श्रद्धा सचिव सकल इन्द्रिय गण शुक्र सनकादिक मुरदि जोबीनी ॥ शम दम योग बिराग यतन सब ढोलक मधुर मृदंग नफीनी ॥ २ ॥ आरति अलख लखत जनसोई श्री गुरुशरण बारि बर बीनी ॥ बिश्वरूप प्रभु अचल निरंजन झलकत ज्योति होत भ्रमछीनी ॥ ३ ॥ भैरवी तालजल्द ॥ मंगल आरति श्री यदुबरकी ज्योति सोहावन राजे ॥ मकरा कृत कुण्डल छबिसोहै मुकुट भानु छबिछाजे ॥ १ ॥ माल बिशाल लसत मणि गणको पदिक कंठमह भ्राजे ॥ कटक बलय भूषण छबि छावत चहला घन मह गाजे ॥ २ ॥ बदन सरोरुह लसत मनोहर कुटिल केश अलिताजे ॥ हास मनोहर ध्यान करत सुचि सिद्धि होत सबकाजे ॥ ३ ॥ ब्रज बनिता बालक परिजन सब साजि सुमंगल साजे ॥ बिश्वरूप प्रभु आरति गावत झांझ बिपंची बाजे ॥ ४ ॥ भैरवी तालजल्द ॥ मंगल आरति श्रीहरिहर की ब्रह्मादिक सुरसाजे ॥ कनक थार कर्पूर कि बाती जगमग ज्योति बिराजे ॥ १ ॥ श्याम शेत घनकुंद सोहावन कोटिन्ह रविछबि छाजे ॥ मणिगण हार माल अहिगण को बाम शिवा श्री भ्राजे ॥ २ ॥ गान करत सब देव मनोहर बहु बिधि बाजन बाजे ॥ रतन सिंहासन झलकत प्रभुके देखि

मनो भव लाजे ॥ ३ ॥ शारद शेस सिद्धि गुण गावत छोड़ि सकल भ्रमकाजे ॥ विश्वरूप महिमा हरि हर को गावत श्रुति शिर ताजे ॥ ४ ॥ राग भैरो ॥ आरति करत तुमरी रघुवर ॥ दीपक बुद्धि प्रीति घृत ता महँ बाती सुरत सवारी ॥ बरतहै ज्योति अखंडनिरंतर दशोदिश उजियारी ॥ १ ॥ थार बिचार धरी ता ऊपर तत्व कुसुम बहुंतरी ॥ अद्भुत छबिरवि तरुण तेज सम शोक रैनि तम टारी ॥ २ ॥ शमदम तोष बसन भूषण वर इन्द्रिय गज रुचिधारी ॥ गावत ताल देत बहु भांतिन्ह नर्तत मन रुचि कारी ॥ ३ ॥ यह गुरुगम आरति धारत उर मेटत ममता भारी ॥ विश्वरूप लहे अचल अमल पद जेहि गावत श्रुतिचारी ॥ ४ ॥ जय जयश्रीगुरु प्रभु जग तारक तरक ब्रह्म नन्द हरे ॥ अति उदार सुख सार सिंधु प्रभु नमत चराचर चरण तरे ॥ सकल महीश अहीश नमत नित कर जे रैनिशि बार खरे ॥ १ ॥ आज्ञा करत देवगण जाको ऋद्धि सिद्धि दासी सगरे ॥ सब गुण बपु धरि शरण शरण करि चरण पलोटत प्रीति भरे ॥ २ ॥ शारद सुरसरि सर नाना बिध जो तप पुंज भुवन निसरे ॥ तजि निज निज थल चरण कमल दल बसत पलटि न हु जात रे ॥ ३ ॥ जन मन कुमुद निशाकर रुचिकर सुर तरु इच्छित दनि वरे ॥ शम दम ज्ञान दया तप संयम चारो फल अति सरस फरे ॥ ४ ॥ दरशनतें अतिहर्ष बढ़तउर कलिपातक दल सकल हरे ॥ जैसे पंचानन काहु निरखत भाजत करि गज बहुतडरे ॥ ५ ॥ भानु निकर कर जासु वचन वर सुनत अविद्या रैनि टरे ॥ कामक्रोध मद लोभ नखत गन छीन भये नहि नजरि परे ॥ ६ ॥ ईश बिष्णु बिधि नाम भेदचय केवल आपुहिं रूप धरे ॥ मङ्करीश परमीश पुरातन सतचित व्यापक अचर चरे ॥ ७ ॥ दिशि दिशि भ्रमेउ लहेउ नहि अस प्रभु जोदुखसुनतहिं तुरित टरे ॥ बिश्वरूप मनमधुप मनोहर चरण सरोरुहबास करे ॥ ८ ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

शरच्चंद्रचन्द्रप्रतिमवदनां कोटिरविभां शुभंगंगाम्बांछा जलजकरशा भीति करिकाम् ॥ शिरोरत्नैर्गाढान्धबलमकरासीनजननीम् पटैर्दैवच्छन्दैर्लसित सुतनुम्यामिशरणम् ॥ १ ॥ बलेर्योंचाव्याज त्रिपदभुवनाक्रान्तजयिनो द्रुतो द्रेकाङ्घ्रि प्रखरनखबिद्धांडमुखिरात् ॥ अवद्धारापारा दुहिणनिलये प्राविशदजा कपर्दे गच्छन्तीनकुलतपसामेशशिखरे ॥ २ ॥ चतुर्द्धास्वं कृत्वाऽवनित लबिशन्तीभगवती परिवाहोल्लोलप्रवरसुरवै मोचमतिदा ॥ अकूपाराबिष्टा शुगकलुषजिनाने कहकषा वहित्यादिव्यश्रि प्रचुरदरणी दीनजननी ॥ ३ ॥ जग·

न्मातर्नीर म्परमरुचिरन्ते चिपथगे वरंसेव्यंसारं सकलतपसां शुद्धमतिभिः ॥ विहस्तस्याकारं निरपदनिकारौघशमनम् मनोवाग्धीजौघ प्रशमविदधद्विद्धुश रणी ॥ ४ ॥ मुनीन्द्रास्त्वतीरेऽपिचकुमतयो व्रात्यनिचया मनोजित्वोषित्वा पुरचलपदम्बेदविदितम् ॥ समारुह्यत्वष्ट्रा सुरथघटना खिन्नमनसा कृतंदिव्यं ज्ञानंजननिनिययुर्नाकभवनम् ॥ ५ ॥ बियद्गंगेऽनंगारि शिरसिचरद्वारि बि-मलेनुदापुण्ये ऽजस्रं सुरसुरबधूसेव्यसलिले ॥ चलद्वीचिश्रेणि श्रमपदजगत्ताप हरणिहराशान्तुःपाशःम्परमकृपयाबिष्णुयदिमे ॥ ६ ॥ त्वमीशस्त्वं धातात्वम-सिहरिरम्बाऽखिलनृणामिरात्वं रुद्राणी जलजभवनात्वम्भगवती ॥ जगद्रक्षा सृष्टिप्रलयमनिशं संबिदधतीत्वदन्यत्किं लोके यदसिनहितद्ब्रूहिनितराम् ॥ ७ ॥ अहोमन्दौलक्ष्यप्रभृतिनिकरैर्भेदकुशले रविज्ञे येज्ञे येश्रुति सुगुरुतोद्वन्दु बिधुरैः ॥ सुखेस्वच्छेऽध्यस्ताऽप्रमितजगदोके भुजगवत्गुणेसच्चिद्रू पेत्वयिबि-शतुमेस्वान्तमनिशम् ॥ ८ ॥ पबिचंस्तोचंते पठतिनियतोयस् सुमनसा लभे-दिष्टंसौख्यं सुवृषमचलम्बाद बिधुरम् ॥ दहेदंघोरंहो बचनतनुधी जातम-खिलं ब्रजेदन्तेऽनन्तन्निरवधिसुखं ब्रह्मविरजम् ॥ ९ ॥ इतिश्रीम त्परमहंस परिव्राजकस्वान्त मधुव्रतास्वादितांघ्रिकमल श्रीगौड़ स्वामि शिष्य श्रीविश्व-रूपानन्द स्वामि कृतं गंगाष्टकम् ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ बिघ्नेशमीश तनयं बरदंगणेशं बिघ्नापहम् बिषमशोक निबृत्तिहेतुम् ॥ बुद्धिप्रदं निखिल देव मुनीन्द्र वन्द्य बन्देऽर्क कोटिसदृशं गजराजवक्त्रम् ॥ १ ॥ वेदार्थसारमखिलं रचितम्मुनीन्द्रै स्सूचंतदर्थ सुगमायचक्रारभाष्यम् ॥ यःशंकरो निखिललोक हितार्थेदृष्टिस्तं नौमितत्व मतिदंभगवन्तमीशम् ॥ २ ॥ सन्यासिद्विजवर्य्य मण्डलवृतः श्रीस्वामिसत्तारकब्रह्मानन्द सरस्वतीतिबिदितो मायातमोभानु-मान् ॥ सच्चिद्ब्रह्मसुखप्रकाशकृदसौ वर्बर्त्तिसर्वे परिश्रीतत्पादसरोज मेत्रसततं भृंगे भजेऽहंमुदा ॥ ३ ॥ विद्वद्वृन्दवरालि सेवितपदाब्जद्वन्द्वसत्तारक ब्रह्मा नन्द सरस्वतीयतिवर श्रीमद्गुरु स्वामिनाम् ॥ मायाभ्रान्ति तमिश्रभानु-निकरौ सद्भक्त निर्बाणदौ बन्देऽहंचरणौ सुभेदधिषणो न्मत्तेभकंठीरवौ ॥ ४ ॥ श्रीकाश्यां जगदीश्वरं गिरिसुता नाथं जगद्बल्लभम् पंचक्रोश्युपरक्तया चिजनता सर्वार्थ देवद्रुमम् ॥ बाणीस्वान्त शरीरजाघतमसे चंडांसु कोटि-प्रभं सच्चिद्ब्रह्मसुखंनिरीहमचलं श्रीकर्दमेशंभजे ॥ ५ ॥ श्रीमच्चन्द्र मुखींदिने-श सदृशींभूषाम्बरालंकृतां खड्गाद्यष्टकरेषुसत् सुदधतीं निर्बाणधर्मादिदाम् ॥ कामक्रोधमदादि नागभरणी म्माहेश्वरी मम्बिकां धाचीशाद्यनुबन्दितांघ्रि जलजां श्रीभीमचण्डीम्भजे ॥ ६ ॥ मायाबन्धहरं जनेप्सितकरं बंद्यं बिधा-

चादिभिः श्रीरामप्रियमीश्वरंजनकजा चिन्ताऽधिचिन्तामणिम् ॥ मित्रंसाधु सतामभिष्ट मसतांसर्वेश्वरंसाक्षिणं सच्चित्कंशुचि सिंधुसागर गृहंश्रीबायुपुत्रम्भ जे ॥ ७ ॥ सुर्य्याग्नीन्दुदृशं गिरीन्द्रतनयानाथंमहेशं विभुंबंद्यं धाचिमुखैश्चकु न्दधवलं भोगीन्द्रहारंहरम् ॥ बांछादेवतरुं सतांचबरुणा रोधस्स्थितं शंकरं सच्चिद्ब्रह्मनिरंजनं सुखघनं श्रीरामनाथंभजे ॥ ८ ॥ येवैभवाब्धितरणाय चरित्र सेतुंसम्यगचकार भगवान्स्वजनाऽनुकम्पी ॥ धाचाऽर्थितो रघुकुलेषुकृतावता- रस्तंजानकीशमखिलार्थदमाश्रयेऽहम् ॥ ९ ॥ श्रीपण्डोस्तनयान्युधिष्ठिरमुखांसद्धु- र्मचिन्तापरान्या खण्डादिकुतर्क शार्बरतमोभानून्मुयात्यर्थदान् ॥ त्यक्त्वाराज्य- मदंसदाशिव पुरस्थान्वैदुरात्तत्पदं श्रीकृष्णांघ्रिसरोज भृङ्गहृदयान्श्रौपदी- शान्भजे ॥ १० ॥ श्रीमत्सर्वगुणाकरंभव भयच्छेत्तारमीड्यं सुरैः कर्तारंजगता मगम्यम् सताज्ञानैकगम्यम्बिभुम् ॥ कण्ठत्वेडमजंप्रभुंव कपिलाधारस्थमीशं शिवं सर्वेशं वृषभध्वजेश्वरमहं श्रीपार्वतीशंभजे ॥ ११ ॥ श्रीमत्खर्व बिना- यकं गजमुखं श्रीकेशवंसिद्धिदं श्रीमत्संगमराड् त्रिलोचन बिभुं श्री बिन्दु लक्ष्मीधवान् ॥ सत्सेव्यंमणि कर्णिकेश्वर हरं श्रीतारकेशं प्रभुं श्री सप्तावरणं गजेन्द्रबदनं श्री सिद्धिराजंभजे ॥ १२ ॥ श्री मन्माधव दंडपाणिगिरिजा श्री ज्ञानबापीः शुभाः श्री मत्साक्षिविनायकं खलुमनः कामेश्वरंशंकरं ॥ स्वान्ते- च्छावरदं जगद्भयहरं श्री कोटिलिंगेश्वरं भक्तिज्ञान विरागशान्तिसुखदं श्री ढुंढिराजंभजे ॥ १३ ॥ पिंडाण्डोष्मज वृत्तजीवनिकरांसंशोध्यतेभ्यः प्रभो ज्ञानं ज्योतिरजंददासिगुरुणा श्रुत्यामतंत्वंविभो ॥ सर्वेशंकरुणाकरंशरणदं मार्त्तण्डचंडप्रभंबासो भूषणभूषितांगमनिशंश्रीभैरवं संभजे ॥ १४ ॥ श्रीकाश्यां म्रियमाणजीवनिकरेभ्योऽजादि सेव्यंबिभुंतत्वंब्रह्मचराचरेश्वरमजंसंबोधयन्तं प्रभुम् ॥ संसारार्णवपादपोतमजरं देव्यन्नपूर्णापतिंसंबिद्वेद्यमनंत भानुसदृशं श्रीविश्वनाथंभजे ॥ १५ ॥ भूचन्द्रांगनिशेशवत्सरगतेमासेतथाकार्त्तिकेशुक्लेऽनंग तिथौभृगोश्चदिवसे श्रीविश्वरूपैःकृतः । मुक्तिक्षेत्रकृतालयेश गिरिजाश्रीभैरवा- देस्तवश्रीश्रियः पठतांतनोतुनितरांसंश्रृण्वतांश्रद्धया ॥ १६ ॥ पंचक्रोशस्थदेवा- नांबन्दनंस्तोत्रमुत्तमम् । यःपठेच्छृणुयाद्वाऽपिप्रदक्षिणफलंलभेत् ॥ १७ ॥ इति श्रीविश्वरूपानन्द स्वामिविरचितपंचक्रोशप्रधानदेवस्तवम् । चतुर्बंदैर्वेद्यांभुव नाबिदितांतंत्रकृतांध्रुवांस्वारामसेव्यपदयुगलांहंसकरभाम् ॥ तुलाकोटिंदेवीं स्वपदिदधतीञ्चन्द्रबदनामुरोदेवच्छंदा सुतनुमनिशंनौमिवरदाम् ॥ १ ॥ सह- स्राख्यादीस्त्वम्निखिल जयिनोदैत्यनिकरान् रसाभूदेवादिचिदशसुतपोरऽण्य दहनान् ॥ स्फुरद्रोषापांगैःप्रलयजलदानन्त पटलैः प्रशस्यार्य्यैतूर्णंह्यभयमकृ-

याःपाहिवरदे ॥ २ ॥ अयेसेव्येपव्येभविक्रमतिभिर्भावुकवरै स्तपोमूर्तेस्फूर्ते
र्विधिहरिहरैर्गीतचरिते ॥ जगद्गाढोन्मथेप्रगतमृगवद्वे विकृपयाविहस्ताच्चे
बद्धांजननिलललितेमोचयनिजान् ॥३॥ विराड्डु सोत्ताङ्डुरिकांगिरिशकारभृद्जे
रमेरोमाकूपेसमयगुणते ऽनन्तमहिमे ॥ ध्रुवेऽम्बक्रीडातोऽत्यवसिसृजसेविश्व
मखिलम्भवाम्भोधौमग्नांस्तरसिचरणेयोद्धरशिवे ॥ ४ ॥ विपञ्चीनिःक्वाणैर्नखल
मुखदेशान्तसुधियेनलैर्मन्द्रैस्तारैः सरसललितैःकर्मरतये ॥ स्वतत्वंस्वं यं
प्रथितकृपय बोधयसिभो हरन्तीदीनार्तिंप्रवितरचमेज्ञानममलम् ॥ ५ ॥ तम
स्तामिस्रादिप्रथितबिलसत्यर्बसुदधन्महामायाराशीं निखिलभयदामधिजनि-
काम् ॥ अजादिस्तम्बान्ताऽऽवरणा कस्किांशान्तिहस्किांकृपादृग्भ स्वद्भिर्हर
शरणदेपाहिगिरिजे ॥ ६ ॥ अयोध्याद्याःपुर्य्यः सुरपतिमुखालोकपतयोऽर्णी-
न्द्राद्या नागाद्रिमगिरिमुखः शैलनिकराः ॥ वियद्गंगा मुख्यानिखिलसरितों
ऽभोधिनिचयाःविराड्भूचात्मेशास्त्वत्तस्तिनिखिलं पाहिवरदे ॥ ७ ॥ निजान-
न्दानन्दोऽमृतसदनचिद् ब्रह्मणिपरे जगत् वय्यध्यस्तं सृजिभुजगवद्विन्न्य
भवने ॥ नमोरूपेवेदी सुगुरुकृपयालब्धधिषणेवरंज्ञानंमहं निगमगदितंदेहिसु
भगे ॥ ८ ॥ वरंदिव्यस्तत्वं पठतियदि देव्यष्टकमिदंमनोवाणीकायार्जितवृजि
नतोयाब्धिबटजम् ॥ परांसिद्धिंलब्ध्वासइहतरसानन्दकरिकां ध्रुवं गच्छेदन्ते
स्वसुषमचलं ब्रह्मपरमम् ॥ ९ ॥ इति श्री विश्वरूपस्वामिकृतंदुर्गाष्टकम् ॥
कुंडलिया ॥ ताकरब्रह्मानन्दजी स्वामीगौड सुजान । ताकोशिष्य सुजान है
विश्वरूप जग यान ॥ कीन्हो हरि गुण गान सगुण निर्गुण सुखदाई । वासु-
देव द्विज राज तहि मह्यं कीन्ह सहाई ॥ गूंथिचरित वरमाल उमानाथहिं
सुख कारक । विश्वनाथ उर माहि समर्पेउ सबजग तारक ॥ १ ॥ उनइस
शत येकतीस बरस हरि गुणरास ॥ २ ॥ सप्तपुरीमें बिदित चहुं काशीश्रेष्ठ
प्रधान । स्वामि गौड महाराजके दशाश्वमेधस्थान ॥ ३ ॥ गंगातीर पुनीत
अति सुंदिर घाट सोपान । पंडित वृन्द यतीन्द्रजन बसत मनोहरजान ॥ ४ ॥
विश्वरूप स्वामी कियो रचना ललित ललाम । वासुदेव तेहिको क्रमहि बांधि
रागमहंनाम ॥ ५ ॥ इतिश्री विश्वरूप स्वामिकृत हरि हर सगुण निर्गुण
पदावली समाप्तम् ॥

——co——

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
ब्रजविलास	अमृतसागर	ज्ञानसरोवली	मुहूर्त्तचिन्तामणि मारिणी
ब्रजविलास छोटा	वैद्यमनोत्सव	स्वयम्बोध	मुहूर्त्त मार्त्तण्ड सटीक
राग	**ज्योतिष**	ज्ञान चालीसी	मुहूर्त्त दीपक
राग प्रकाश	जातक चन्द्रिका	दोहावली	रहज्ज्ञातक सटीक
स्नावली	जातकालंकार	बाला बोध	जातकालंकार सटीक
शृंगार बत्तीसी	देवज्ञाभरण	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक	जातका भरण
किस्सावगैरह	ज्ञानरत्नोदय	किताब जंत्री	होरामकरंद
नानार्थनो संग्रहावली	रमलसार	गणित कामधेनु	**संस्कृत उर्दू टीकासः**
ब्रह्मसार	इन्द्रजाल	लीलावती	मनुस्मृति
शिवसिंह सरोज	**मुतफ़रकात**	पटवारियों की पुस्तकें	विष्णु हारीत
भक्तमाल	शनिश्चर की कथा	**संस्कृत की पुस्तकें**	महिम्न स्तोत्र
रामाभिषेक नाटक	स्नान माला	लघुकौमुदी	**संस्कृत भाषा टी-सः**
इन्द्रसभा	गोपीचंद भरतरी	सिद्धान्तचन्द्रिका	अमरकोश
विक्रमविलास	कथा श्री गंगा जी	अमरकोषतीनों कांड सः	याज्ञवल्क्य स्मृति
बैताल पच्चीसी	अवध यात्रा	पंचमहायज्ञ	संध्या पद्धति
सिंहासन बत्तीसी	भरतरी गीत	निर्णयसिन्धु	ब्रह्मार्क
पद्मावती खण्ड	दानलीला व मानलीला	संग्रहशिरोमणि	भगवद्गीता टी-हरवंश
शुकबहत्तरी	दोहावली रत्नावली	भगवद्गीता सटीक	भगवद्गीता टी-आनंदगिरि
बकावली सुमन	गोकर्णी महात्म	दुर्गीपाठ सटीक	गीत गोविंद
चहारदरवेश	श्री गोपाल सहस्रनाम	विष्णु भागवत	कथा सत्यनारायण
किस्सह हातमताई	कथा सत्यनारायण	भविष्योत्तर पुराण	परमार्थसार
अपूर्व कथा	हनुमान बाहुक	अपराध भंजनस्तोत्र	शार्ङ्गधर संहिता
किस्सागुलसनोवर	जनक पच्चीसी	दुर्गास्तोत्र	पाराशरी
सहस्र रजनीचरित्र	आनन्दाश्रुवर्षिणी	कायस्थकुलभास्कर	शीघ्रबोध
रविन्सनक्रूसोइतिहास	वनयात्रा	कायस्थधर्म निरूपण	लघुजातक
वैद्यक	कायस्थधर्म निर्णय	नथाछोटा	षट्पंचाशिका
निघण्ट भाषा	विहारविन्द्रावन	मथुरासभा	सामुद्रिक
अमरविनोद	समरविहारविन्द्रावन	**ज्योतिष**	सर्वशिक्षा तालीम की
वैद्यजीवन	कल्पभाष्य	मुहूर्त्तगणपति	**पुस्तकें**
औषधि संग्रह कल्पवली	**दरसी**	मुहूर्त्तचक्रदीपिका	**संस्कृत**

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
व्रजभाषा पाठ	भूगोल तत्त्व	अयोध्याकाण्ड	मजमूआ जाबिताकी
१ भाग	भूगोल दर्पण	आरण्यकाण्ड	जदारी ऐक्ट २५ सन्
२ भाग	इतिहास तिमिरना-	किष्किन्धाकाण्ड	१८६१ ई०
३ भाग	शक १ भाग	सुन्दरकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प १ सन्
धात्वर्थावली	२ भाग तथा ३ भा-	लंकाकाण्ड	१८६२ ई०
नागरी बकैयी	भारतवर्षीय इतिहास	उत्तरकाण्ड	ऐक्ट रजिस्ट्री २० सन
वर्णमाला कैयी १भा-	अवधदेशीय भूगोल	गुटका	१८६६ ई०
ग तथा २ भाग	इंग्लिस्तान का इतिहास	१ भाग	ऐक्ट स्टाम्प अदाल-
तथा कैयी फ़ारसी	हितोपदेश	२ भाग	त २६ सन् १८६७ ई०
नागरी हरूफ़ सुफ़र्दात	बालाभूषण	३ भाग	मजमूआ ऐक्ट अं-
अक्षरारम्भ	पद्यसंग्रह	हिदायतनामा सुदी-	धलगान १८ सन्
वर्णप्रकाशिका १भा-	भाषाकाव्यसंग्रह	सान्	१८६८ ई० पुरज़ा दा-
ग तथा २ भाग	कवित्तरत्नाकर १भा-	पशुचिकित्सा	र २६ सन १८६६ ई०
सूरजपुर की कहानी	ग तथा २ भाग	पट्टा बखत कैयी	वंगेरा
धर्मसिंह का वृत्तांत	मंगलकोष	तथा क़बूलियत	ऐक्ट स्टाम्प दस्ता-
शिक्षावली	अंकप्रकाश	रजिस्टर हाज़िरी पाठ-	वेज़ात १८ सन्
पत्रहितैषिणी	गणितप्रकाश १भा-	शाला	१८६८ ई० सवी
पत्रदीपिका	ग तथा २ भाग	रिज तुलबामदनी	ऐक्ट ताज़ीरात मुक़दमा-
विद्याचक्र	तथा ३ भाग	रजिस्टर हाज़िरी पाठ-	त मफ़ौजदारी अवध २४
विद्यांकुर	तथा ४ भाग	शाला	सन् १८७० ई०
पदार्थविद्यासार	गणितक्रिया	क़ानून	ऐक्ट चौपायों का मदा-
पदार्थस्थानविटप	क्षेत्रप्रकाश	पटवारियों के क़ायदे	रिवलत बेजा १ सन् १८७१ ई०
भोजप्रबंधसार	क्षेत्रचन्द्रिका २भा-	उर्दू कैयी महाजनी	ऐक्ट मजमूआ ज़ाबिता
राजनीति	ग कोलदायरा	टिकट के स्टाडसन्स	फ़ौजदारी १० सन १८७२ ई०
शिशुबोध	रेखागणित १भाग	का ऐक्ट २ सन् १८७८	ऐक्ट माल गुज़ारी
भाषालघुव्याकरण	तथा २ भाग	ई सवी	मगरबी व ग्रामाली
१ भाग	बीजगणित १भा-	नागरी	१८ सन् १८७३ ई०
तथा २ भाग	ग तथा २ भाग	ऐक्ट लगान मगरबी	तरमीम मजमूआ जावि
भाषातत्त्वदीपिका	रामायण तुलसीकृ-	व ग्रामाली २० सन्	ता फ़ौजदारी १२ सन १८७४ ई
भाषाचंद्रोदय	त बालकाण्ड	१८५८ ई०	
		इंडियन पिनल कोर्ड	

